अन्तरा शब्दशक्ति

मासिक वेब पत्रिक

वर्ष-1 अंक-९-१० मूल्य-25 रुपए मार्च-अप्रैल

माँ, महिला और मातृभाषा के साथ त्यौहारों की बहार

साहित्यकारकोश २०१८ में प्रकाशन के लिए नाम भेजें

हिन्दी साहित्यकारों का समुच्चय जो राष्ट्र की धरोहर है, आपस में एक दूसरे से जुड़ें, साहित्य का संगम हो, हिन्दी का दायरा बढ़े, सब मिलकर हिन्दी भाषा के पुनर्उत्थान हेतु प्रतिबद्ध रहें, इसी उद्देश्य की सार्थकता हेतु 'हिन्दीग्राम' एक राष्ट्रव्यापी साहित्यकारकोश तैयार कर रहा है। प्रत्येक राज्य, जिले, नगर, ग्राम, के हिन्दी भाषा सारथियों की सामान्य जानकारी युक्त हिन्दी रचनाकारों का परिचयकोश संयोजित होकर सभी के लिए उपलब्ध रहेगा।

आप भी अपना परिचय या अपने शहर के साहित्यकारों, कवियों, लेखकों आदि का परिचय प्रेषित कर सकते है। जिसके लिए किसी तरह का कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। अस्पष्ट व अपूर्ण जानकारी प्रकाशित करना असंभव होगा।

भारत में पहली बार हिन्दी साहित्यकारों का एक कोश बन रहा हैं। लगभग ५०० से अधिक पृष्ठों पर आधारित इस बहुपयोगी पत्रिका के प्रकाशन के लिए मध्यप्रदेश सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत लेखक कवि, साहित्यकारों, कथाकार साहित्यिक संस्थान, प्रशिक्षण संस्थानों, आदि के नाम व पते संकलित किए जाने का कार्य तेज गति से चल रहा है।

साहित्य कोश का संपादन डॉ. अर्पण जैन 'अविचल' व डॉ. प्रीति सुराना द्वारा किया जा रहा है। सभी साहित्यकारों से अनुरोध है कि वे अपना व अपने संस्थान, वेबसाइटों, आदि का संपूर्ण विवरण ईमेल-hindisahityakarkosh@gmail.com पर ३१ मई २०१८ तक निश्चित रुप से भेज दें ताकि उसे 'साहित्यकार कोश' के प्रथम संस्करण में शामिल किया जा सके।

जानकारी केवल निम्न बिन्दुओं में ही प्रेषित करें

साहित्यकार के परिचय का प्रारुप

१.पूर्ण नाम
२.साहित्यिक उपनाम
३.जन्मतिथि
४.वर्तमान पता
५.शहर
६.जिला
७.राज्य
८.विधा
९.संपर्क सूत्र (मोबाइल/व्हाट्स ऐप)
१०.अणुडाक (ईमेल)
११.अन्तरताना (वेबसाईट या ब्लॉग)

यदि आप किसी साहित्यिक संस्था का संचालन करते है तो आपकी साहित्यिक संस्था का परिचय भी पृथक रुप से भेजें, उसे पृथक स्थान दिया जाएगा।

साहित्यिक संस्था के परिचय का प्रारुप

१.संस्था का नाम
२. संस्था का परिचय (अधिकतम १०० शब्द)
३. संस्थापक का नाम व परिचय (अधिकतम १०० शब्द)
४. उद्देश्य (अधिकतम १०० शब्द)
५. कार्यालय का पता
६. संपर्क सूत्र
७. अणुडाक (ईमेल)
८. अन्तरताना (वेबसाईट)
९. संस्था का मोनो

दी गई सम्पूर्ण जानकारी सत्य है जिस पर किसी भी आपत्ति के उत्तरदायी (साहित्यकार या संस्था)........................... स्वयं है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र

९६६९८९६६९३ ९४२४७६५२५९ ७०६७४५५४५५

www.sahityakarkosh.com

साहित्यकार कोश — कलमकार का परिचय
www.sahityakarkosh.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान — www.matrubhasha.org
हिन्दीग्राम — www.hindigram.com
अन्तरा शब्दशक्ति — www.antrashabdshakti.com
मातृभाषा.कॉम — www.matrubhashaa.com

संपादकीय

माँ, महिला और मातृभाषा के साथ त्यौहारों की बहार

बसंत की शुरुआत मौसम के बदलने के साथ-साथ न जाने कितने हृदयों में होली के विभिन्न रंगों की तरह उत्साह, आनंद, उल्लास और जिंदगी जीने का एक रंग और जुड़ गया। जी हाँ, मार्च और अप्रैल का महीना महिला दिवस, होलिका, नवरात्र, गुडफ्राइडे जैसे अनेक त्यौहारों के मनाने के मौसम के साथ-साथ समरसता और सामाजिक अखंडता का परिचायक भी है। अंतरा शब्द शक्ति परिवार अपने पाठकों को इन सभी त्यौहारों की शुभकामनाओं के साथ-साथ नारी के सम्मान को सदैव बनाए रखने का आह्वान भी करता है। नवरात्र न केवल माँ की स्तुति का मंगल गान है, बल्कि नवरात्र के माध्यम से शक्ति के सम्मान पुंज को सदैव आलोकित रखने का एक संकल्प भी है।

समाज और साहित्य के विभिन्न पहलुओं को संजोये हुए अंतरा शब्द शक्ति मासिक पत्रिका आपके हाथों में प्रदान कर खुशी है, साथ ही आशा भी है कि आप अपने प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत कराते रहेंगे।

पुनः शुभकामनाओं सहित.......

डॉ.प्रीति सुराना
संस्थापक व सम्पादक- अन्तरा-शब्दशक्ति

प्रधान संपादक

डॉ.प्रीति सुराना

तकनीकी सम्पादक

डॉ.अर्पण जैन 'अविचल'

सम्पादकीय सलाहकार

श्री समकित सुराना
श्री बृजेश शर्मा 'विफल'
श्री कैलाश बिहारी सिंघल
श्री देवेन्द्र सोनी
श्री मुकेश दुबे
श्री केदार नाथ 'शब्दमसीहा'
श्री संजय कोचर
सुश्री कीर्ति वर्मा
सुश्री पिंकी परुथी 'अनामिका'
सुश्री अदिति रूसिया

ग्राफिक्स

मृदुल जोशी
सुश्री मीना कोशल

राजकीय प्रतिनिधी

सुश्री सोमा बिस्वास- दिल्ली
सुश्री वसुंधरा रॉय- महाराष्ट्र
सुश्री नसरीन अली 'निधी'- जम्मू एवं कश्मीर
मंगल प्रसाद पासवान- उत्तरप्रदेश
प्रकाश कायस्थ- आसाम
तपन कुमार गैन- पश्चिम बंगाल
अनिल कुमार शर्मा 'चिंतित'- हरियाणा
विवेकानंद पाण्डेय- छत्तीसगढ़
रिषभचंद रांका- राजस्थान
श्रीमन्नानारायण चारी- तेलंगाना
सुश्री विभा श्रीवास्तव-बिहार
सुश्री पूजा टांक- तमिलनाडु
सुश्री अर्चना शर्मा-गोआ
नवीन संकल्प- उत्तराखण्ड

अन्तराशब्दशक्ति

मासिक वेब पत्रिका

वर्ष-1 अंक-9-10 मूल्य-25 रुपए

मार्च-अप्रैल (संयुक्तांक)-2018

क्र.	विषय	पृष्ठ क्रमांक
1.	संपादकीय	3
2.	महिला सक्षमीकरण के लिए आवश्यक कदम	5
3.	महिला सक्षमीकरण की आवश्यकता सशक्तिकरण की नहीं	6
4.	विस्तारवादी चेहरा रहे सेठ साहब	7
5.	आप सभी को होली की बधाई	9
6.	उपचुनाव ये हार थी या कुछ और कविता-बसंत, गुड़ीपड़वा	10
7	क्या वाकई.......महिला खुद एक रहस्य है?	11
8.	चुनौतियों के भंवर में बजट	12
9.	यह कैसा मातृभाषा दिवस	13
10.	बैंकों की घुमावदार सीढ़ियां	14
11.	श्रीदेवी एक अध्याय की समाप्ति	15
12.	क्या आप करना चाहते हैं हिन्दी को छार-छार	16
13.	स्वास्थ्य के प्रति कितने जिम्मेदार हैं हम	17
14.	औरत के हर महीने का दर्द	18
15.	डेंगू से डरें नहीं	19
16.	वैवाहिक जीवन में बिखराव से बचें	20
17.	सर्पदंश अस्पताल जाएं, जान बचाएं	21
18.	दोषी कौन?	22
19.	बगुला भगत	23
20.	पाप करने के लिए पुण्य का चश्मा	24
21.	महावीर के संदेशों को विश्व भर में फैलाएं	26
22	तनख्वाह से शादी नस्ल से बर्बादी	28
23.	पुस्तक समीक्षा	36
24.	किसी कृष्ण की तलाश करें	37
25.	पद्मावत फिल्म की सत्यता	43
26.	क्या आप बनना चाहते हैं-भाषा सारथी	49
27.	हस्ताक्षर बदलो अभियान	50

और भी बहुत कुछ......

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. प्रीति सुराना द्वारा एस-207, नवीन परिसर, इंदौर प्रेस क्लब, एम. जी. रोड इंदौर से प्रकाशित एवं ग्लोबल ग्राफिक्स ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित। मो.-9009465259

किसी भी कानूनी विवाद का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा। शुल्क- 25 रु. www.antrashabdshakti.com

महिला सक्षमीकरण के लिए आवश्यक कदम

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता: ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया:

जहां स्त्री जाति का आदर-सम्मान होता है, उनकी आवश्यकताओं-अपेक्षाओं की पूर्ति होती है, उस स्थान, समाज, तथा परिवार पर देवतागण प्रसन्न रहते हैं । जहां ऐसा नहीं होता और उनके प्रति तिरस्कारमय व्यवहार किया जाता है, वहां देवकृपा नहीं रहती है और वहां संपन्न किये गये कार्य सफल नहीं होते हैं ।

स्त्री सशक्तिकरण और स्त्री सक्षमीकरण के भ्रम से शुरू हुई बहस की तह तक जाने के पहले हमें ये समझ लेना चाहिये इसका वास्तविक मतलब क्या है? महिला सशक्तिकरण का मतलब महिलाओं की उस क्षमता से है, जिससे उनमें योग्यता आ जाती है। योग्यता की अभिवृद्धि सशक्तिकरण है और सक्षमीकरण से तात्पर्य है योग्यता के संपूर्ण दोहन के लिए निर्णय लेने के अधिकार का उपयोग करना व सक्षमता में वृद्धि करना हैं।

दो अलग-अलग कारकों को एक करके यह पुरुषप्रधान समाज सदियों से अवनी की सर्वश्रेष्ट कोपल को दिगभ्रमित करता आ रहा हैं। जब घर की चार दीवारी में क़ैद एक स्त्री स्वच्छंद आकाश में विचरण करने लग जाती है, नौकरी से लेकर उद्यम तक में कंधे से कंधा मिलाकर चलने लगती है, तब भी यह समाज स्त्री को हेय दृष्टि से देखना बंद नहीं करता और यह ताना उन स्त्री के कानों तक हमेशा रहता है कि आखिर इस समाज ने स्त्री को अपने बराबर स्वीकार किया और सहयोग किया । समाज ने कुछ नहीं किया बल्कि सदियों से एक स्त्री अपने नैतिक अधिकार के लिए जूझती रही है, वह आज जो कर रही है, यह अधिकार तो उसे सनातन से मिलना चाहिए ही था, क्योंकि स्त्री और पुरुष एक ही कुक्षी से जन्म लेते है फिर उसे अपने मौलिक अधिकार से वंचित क्यों रखा गया?

उसे उड़ने का अधिकार परमात्मा ने दिया था जैसे एक 'चिड़ा(पौरुष प्रतीक)' और एक 'चिड़िया(नारित्व प्रतीक)' दोनो अंबर में एक साथ उड़ते है किसी को कम उड़ना या किसी को ज़्यादा नहीं उड़ना होता है, घौंसला दोनो मिलकर बनाते हैं । नीड़ से निर्माण तक दोनों ही साथ-साथ कार्य करते हैं । मतलब केवल मानव समाज की सोच के सीमित दायरे ने स्त्री को उसके मौलिक अधिकार से अभी तक वंचित रखा और फिर उसे ही सशक्तिकरण का नाम दे कर उसका मौलिक अधिकार उसे देना शुरू कर दिया । परंतु आज भी कई स्त्री निर्णय स्वयं अमल में नहीं ला सकती, उसे निर्णय लेकर क्रियान्वन की ओर अग्रसर करना सहज नहीं होता ।

स्त्री सशक्त तो सनातन से थी तभी उसे देवी, दुर्गा, काली, सीता, आदि संबोधन के साथ स्वीकारा गया है । धर्म के आलोक में देखे तो किसी भी पुरुष द्वारा कोई भी पूजा अकेले संपन्न नहीं करवाई जा सकती जब तक वामांगिनी अपने हाथ से उस पुरुष को सहयोग ना करे, अकेला पुरुष संतान उत्पन्न नहीं कर सकता जब तक स्त्री स्वीकार्यता ना हो । इसका अर्थ स्पष्ट है कि स्त्री सशक्त है । उसे सशक्तिकरण की आवश्यकता थी ही नहीं । उसे आज भी ज़रूरत सक्षम होने की है । अपने निर्णय स्वयं लेकर उसे मूर्त रूप देने के अधिकार की है ।

अब बात आती है सक्षमीकरण की, तो उस बात के लिए शुरुआत स्वयं स्त्री को ही करना होगी, क्योंकि उसे आज तक अपना कोई अधिकार समाज ने सहजता से नहीं दिया है। उसे आज तक देवी तो बताया पर देवी के सक्षम होने को स्वीकारा नहीं है ।

इस देवी नाम के झुनझुने से सदियों से इस समाज ने स्त्री को उसके मानस के अनुरूप जीने की चाह को मारा है । हत्या हमेशा ही उसके नैतिक अधिकारों और स्वच्छंदता की हुई है। केवल लैंगिक भेद मिटाने के दावे को स्त्री सक्षमता नहीं माना जा सकता । कई अंतरराष्टीय संधियों में मानवाधिकारों की मान्यता के बावजूद, महिलाएं गरीब और अशिक्षित हैं। महिलाओं को चिकित्सा सुविधाओं, संपत्ति के स्वामित्व, क्रेडिट, प्रशिक्षण और रोजगार में पुरुषों की तुलना में कम अवसर मिलता है। उन पुरुषों की तुलना में राजनीतिक रूप से सक्रिय होने की संभावना बहुत कम है और घरेलू हिंसा के शिकार की संभावना बहुत बढ़ी है।

महिलाओं के सक्षमीकरण की प्रक्रिया में निम्नलिखित मुद्दे मुख्य रूप से महत्वपूर्ण हैं।

1. स्वास्थ्य, 2. प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, 3. आर्थिक क्षमता, 4. शैक्षिक योग्यता, 5. राजनीतिक क्षमता

स्त्री सक्षमीकरण की सबसे पहली शुरुआत घर की चार दीवारी से ही होना चाहिए, उसे क्या खाना है इसके निर्णय से लेकर तो उसे नौकरी करना या उद्यम, शादी करना या नहीं करना, बच्चे पैदा करना है या नहीं आदि निर्णयों में उसकी स्वीकार्यता को महत्व देना होगा । इन सब के बाद बात आती है शासकीय प्रायोजनों और योजनाओं की ।

शासन भी अब तक सशक्तिकरण का ही ढोल पीट रहा है जबकि आवश्यकता सक्षमता की हैं।

स्त्री की सक्षमता की शुरुआत उसके निर्णय लेने और निर्णय के क्रियान्वन से शुरू तो होती है परंतु इसके साथ ही उसके आत्मनिर्भर बनने और सुरक्षित होने के अधिकार को भी झुठलाया नहीं जा सकता ।

एक स्त्री को संपूर्ण आभामंडल में स्वच्छंद सांस लेने का अधिकार है साथ ही आत्मनिर्भर होने का भी । इनके अलावा निम्न कारक भी महत्वपूर्ण हैं-

1. स्त्री समूह को स्वयं आगे आकर अपने निर्णय लेना होंगे,

2. स्वयं का व्यवसाय होना भी इसका अंग है, क्योंकि व्यवसाय का अधिकार केवल पुरुषों का नहीं हैं ।

3. नौकरी, शिक्षा, संपर्क, विवाह, संतति आदि निर्णय उसे स्वयं लेना चाहिए और साथ में पुरुष समाज को उसे स्वीकारना भी चाहिए ।

4. कार्यान्वयन क्षमता स्त्री स्वयं में पैदा करें, जब वह संतति को जन्म देने जैसा दूभर कार्य कर सकती है तो वह अपनी क्षमताओं के बावजूद अन्य पर आश्रित क्यों?

5. शासकीय योजनाओं में स्त्री को आत्मनिर्भरता व सुरक्षा हेतु प्रबंध किए जाएँ, क्योंकि ये समाज अपनी निगाहों को ही अपने काबू में नहीं रख सकता वो स्त्री में केवल भोग ही देखता है, जबकि उसे समाज की सृजनता नहीं दिखाई देती ।

सर्वमान्य सत्य तो यही है कि अनुरोध व विरोध करना स्त्री को स्वयं समझना होगा अन्यथा करोड़ो प्रबंध भी स्त्री के लिए कर दिए जाए पर नतीजा 'ढाक के तीन पात' ही रहेंगे ।

'ना गौरी ना अंबा है तू,ना शक्ति ना जगदंबा है तू
तू स्वयं सशक्त कोपल है, तू अविचल है हिडिंबा है तू'

जय हिन्द- जय हिन्दी

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'
हिन्दीग्राम, इंदौर

महिला सक्षमीकरण की आवश्यकता

सशक्तिकरण की नहीं

महिला सशक्तिकरण और सक्षमीकरण की नारेबाजियों का दौर है। जो मन में अनेक विचारों को जन्म देता है।

मैं स्वयं एक स्त्री हूँ... स्त्री वर्ग के लिए आगे आकर कार्य करती हूँ, सृजन के क्षेत्र में स्त्री विमर्श से बचती हूँ क्योंकि मैं स्त्री पुरुष के विमर्श की बजाय मानव विमर्श की पक्षधर हूँ। मेरी कुछ रचनाएँ (जैसे मानव विमर्श, मैं स्त्री हूँ, चारदीवारी, संकल्प, सृजन शब्द से शक्ति का, अब वक्त आ गया उठा शमशीर, ऐसा ही क्यों सोचा जाए, समीकरण बदल गए हैं, काश! कभी सोचा होता... आदि इत्यादि) स्त्री की क्षमताओं के साथ स्त्री को पुरुष के समकक्ष स्थापित करने के लिए एक प्रयास, एक दिशा, एक सोच का प्रतिरुप है।

मैं सशक्तिकरण की पक्षधर बिल्कुल नहीं हूँ क्योंकि मैं ये मानती हूँ कि खुद को अबला या कमजोर मानने वाली स्त्री को सिर्फ ये अहसास दिलाना है कि वह कमजोर नहीं है क्योंकि वह सृष्टि की कर्णधार है।

स्त्री रचेगी नहीं तो सृष्टि बसेगी नहीं

ये कटु सत्य है।

पुरुष का पौरुष तभी सार्थक है जब स्त्री समर्पित होकर उसके पौरुष को स्वीकार कर अंगीकृत करे। बलात्कार, व्यभिचार, अत्याचार, गर्भपात आदि सभी नकारात्मक तत्व एक विशाल सुखद सामाजिक व्यवस्था में मात्र घुन की तरह है जो कि सावधानी और सुरक्षा के थोड़े से उद्यम से रोके जा सकते हैं। जिसके लिए हर बार पुरुष वर्ग को कोस कर सहानुभूति बटोरने की बजाय स्त्री को अपना सशक्त स्वरूप जागृत रखकर खुद के प्रति आपने दायित्व का ईमानदारी से निर्वाह करना होगा।

महिला कमजोर नहीं है, हम उचित शिक्षा और सजग प्रयासों से समाज में अपनी स्थिति को सुधारने के लिए कदम उठाने में समर्थ हैं। इसलिए सशक्तिकरण किसलिए? हाँ! हमें हमारा सामाजिक परिवेश सक्षम नहीं होने देता, जिसके कारण समर्थ होते हुए भी हम अपने लिए, परिवार, समाज और देश के लिए कुछ कर पाने से चूक जाते हैं। इसलिए हमें जरूरत सक्षमीकरण की है।

महिला सशक्त है और अपनी शक्तियों का समझने के लिए अनिवार्य है स्त्री शिक्षा और आत्मनिर्भरता। स्त्री पढ़ेगी तभी शिक्षित भविष्य गढ़ेगी और स्त्री अपने पैरों पर खड़ी होगी तभी चलने की हिम्मत कर पाएगी।

बचपन से कूट-कूट कर संस्कार भरे जाते हैं स्त्री को पराया धन कहकर, जबकि स्वाभिमान एक अनिवार्य संस्कार होना सबसे जरूरी है।

स्त्री को स्त्री का प्रतिद्वंदी बनाती सामाजिक व्यवस्था 'फूट डालो राज करो' जैसी नीतियों की परिचायक है। स्त्री को स्त्री की पीड़ा समझकर पुरुष प्रधानता वाले समाज का नव निर्माण करना होगा।

स्त्री को सशक्त करने की जरूरत नहीं है, जरूरत है कि स्त्री सशक्त है ये वो भी समझ जाए और पुरुषवर्ग भी और इसके लिए जरूरी है कि स्त्री समर्थ हो, सक्षम हो, अपने अधिकारों के प्रति सजग हो और खुद को खुद की परिस्थितियों के लिए उत्तरदायी माने।

अब सवाल ये है कि कैसे होगा सक्षमीकरण? कौन से क्षेत्र हैं जहाँ स्त्री अपनी आर्थिक निर्भरता को खत्म कर सके, जिससे अपने निर्णय लेने में समर्थ हो।

सक्षमीकरण के कारक

शिक्षा
अर्थ
आत्मविश्वास
अपनों का प्रेम, सहयोग और विश्वास

सक्षमीकरण के उपाय एवं क्षेत्र

शिक्षा संबंधी कार्य जैसे शिक्षण, प्रशिक्षण, ट्यूशन, कोचिंग, आंगनवाड़ी, बालगृह , पालनाघर आदि कार्य में सहयोगी या सहभागी बनना।

लघु उद्योग, गृह उद्योग, कुटीर उद्योग आदि आरम्भ करना या उनसे जुड़कर काम करना।

ऑनलाइन बिजनेस में उत्पादों के क्रय-विक्रय से जुड़ना और लोगों को उससे जोड़ना।

लेखन, प्रकाशन, और मीडिया से जुड़े कार्यों में सक्रिय होना।

ब्लॉग और ई-बुक का प्रकाशन करना।

ऑनलाइन डेटा सेविंग और टंकण, प्रूफ रीडिंग आदि का कार्य करना।

चिकित्सा के क्षेत्र में डॉ., नर्सिंग, फिजियोथेरेपी, एक्युप्रेशर आदि से जुड़ना।

राजनीति, समाजसुधारक और प्रेरक व्यक्तित्व के रूप में कार्य करना।

ऐसे ही अनेक कार्य हैं जो कि महिला सक्षमीकरण में सहायक होंगे। इन सभी क्षेत्रों में योग्यतानुसार कर्मचारियों से मालिक तक सभी तरह के पदों पर महिलाएं काम कर सकती हैं।

तो आइए अनेकता में एकता की विशेषता लिए भारत देश की आधी आबादी को सशक्त और सक्षम बनाकर पुराने सभी मिथकों को तोड़कर नए आयाम स्थापित करें और साबित कर दें कि *महिला सशक्त भी है और सक्षम भी* तभी शायद सशक्तिकरण और सक्षमीकरण की नारेबाजियां बंद हो और स्त्री पुरुष के नए समीकरण समाज और देश में स्थापित हो सके।

प्रीति सुराना

विकासशील इंदौर का

विस्तारवादी चेहरा रहे सेठ साहब

सन् 1931 का नवंबर केवल दूसरे गोलमेज सम्मेलन के लिए नहीं याद रखा जाएगा बल्कि इंदौर को एक दहाड़ता शेर भी इसी माह की18 तारीख को इंदौर शहर के भविष्य के स्वर्णिम अध्याय बुनने के लिए अवतरित हुआ था । एक ऐसा शख्स जिसने ताउम्र दरियादिल और निडर रहकर शहर की तासीर बदलने और कायाकल्प के विकास के साथ विस्तारवादी रवैया अपनाते हुए इंदौर को विश्वस्तर पर पहचान बनाने की पहली वजह दी।

शेर-ए-इंदौर के नाम से मशहूर सुरेश सेठ साहब लगभग 25 दिनी शारीरिक अस्वस्थता के बाद गुरुवार को हमसे शरीर रूप से तो विदाहो गये पर जेहन में सदा के लिए बस गये । सेठ साहब का जन्म 18 नवंबर 1931 को हुआ था। जब भी जिक्र होगा इंदौर के विकास का तो सुरेश सेठ नाम लिए बिना वो चर्चा ही अधूरी मानी जाएगी। सुरेश सेठ उन नेताओं में से थे जिनके लिए कभी पार्टी सर्वोपरि नहीं रही बल्कि उनकी भूमिका सत्तापक्ष में रहते हुए भी विपक्ष जैसी थी। वे निडर होने के साथ-साथ जिद्दी और बेबाक थे रहा। जो उन्हें जायज नहीं लगता था, उसका वे किसी भी हद तक जाकर विरोध करते थे। वे गलत होने पर कांग्रेस पार्टी के खिलाफ भी वे बोलने से नहीं चूके। शहर की शान राजवाड़ा को बचाने के लिए भी अपनी ही पार्टी की सरकार के खिलाफ आंदोलन किया था।

सुरेश सेठ साहब एक व्यक्तित्व ही नहीं थे बल्कि विकासशील इंदौर का विस्तारवादी अध्याय रहे । उनके जाने से शहर ने एक एसा हमदर्द या कहें मसीहा खो दिया जो न केवल इंदौर के विकास की बात करता था बल्कि इंदौर के हरवर्ग की चिंता को अपने जेहन में समेटकर उसे हल करने के लिए जूझता भी था । अंतिम विदाई देते हुए हर वो शख्स रो रहा थे जिसके दिल में इंदौर रहता हो।

शहर को दिया 'इंदौर समाचार'

सन 1951 में शहर की पत्रकारिता को निडरता और स्वच्छता की मिसाल देने के साथ दैनिक इंदौर समाचार पत्र का प्रकाशन शुरू हुआ । सेठ साहब ने कभी भी अपने निजी लाभ-हानी को महत्व नहीं दिया और स्वच्छ पत्रकारिता कर इस शहर को पत्रकारिता का एक उत्कृष्ठ अध्याय दिया।

कंदीलयुग को हटा कर लाए थे इंदौर के अच्छे दिन

शेर-ए-इंदौर कहे जाने सेठ ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत वर्ष 1951 में पार्षद का चुनाव लड़कर की। 1951 से 60 तक वे पार्षद रहे। 1969 में इंदौर नगर निगम के महापौर बने। तब शहर के कई इलाकों में सड़कों पर कंदील जलाकर रोशनी की जाती थी। सेठ ने इनकी जगह बिजली के बल्ब लगवाए। सेठ इंदौर के महापौररहने के साथ ही प्रदेश में रही कांग्रेस सरकार में मंत्री भी रहे। जब वेइंदौर के मेयर चुने गए तब इंदौर की सड़कों को रात में रोशन करनेके लिए लालटेन लगाई जाती थीं। स्ट्रीट लाइटों से जगमग इंदौर कीसड़कों में उनके कार्यकाल में ही पहली बार स्ट्रीट लाइटें लगीं। स्ट्रीटलाइट लगाने की कहानी बड़ी रोचक है। मेयर बनते ही इंदौर कोसजाने का सपना लिए सेठ ने मुंबई की राह पकड़ी। सेठ मुंबई मेंकई दिनों तक रहे और मुंबई की गलियों में घूमकर वहां के विकासको देखा और फिर उसी तर्ज पर इंदौर को संवारने का सिलसिलाशुरू हुआ।

अवैध गुमटियां हटाने का फैसला लिया था

सन 1980 में इंदौर शहर में अधिकारियों के संरक्षण में अवैध गुमटियां लग रही थी जिससे शहर की यातायात व्यवस्था व सौंदर्य भी प्रभावित हो रहा था इसी के चलते स्वायत्त शासन एवं पर्यावरण मंत्री रहते

हुए उन्होंने सार्वजनिक मंच से कहा था कि निगम के अधिकारी रिश्वत लेकर अवैध गुमटियां लगवा रहे हैं और मुझे बदनाम कर रहे हैं। इसके बाद शहर से अवैध गुमटीयों को हटाने का आदेश जारी करवाया और इंदौर को अवैध गुमटीयों से मुक्त करवाया।

राजवाड़ा बचाया सेठ साहब ने

तात्कालीन मध्यप्रदेश सरकार ने इंदौर की शान राजवाड़ा निजी हाथों में बेच दिया था । तब सेठ साहब ने 1914 में राजवाड़ा की बिक्री के खिलाफ आंदोलन चलाया। विरोध प्रदर्शन के बाद सरकार ने 1916 में अपना निर्णय वापस लेते हुए राजवाड़ा जनता को समपर्ति किया।

80 के दशक में भी रहे आधुनिक सोच के सेठ साहब

सुरेश सेठ साहब 35 वर्ष पहले भी आधुनिक इंदौर की सोच रखते थे। उन्होंने 80 के दशक में विद्युत शवदाह गृह और बच्चों का अस्पताल बनवाने का काम किया। भारी वाहनों का शहर में प्रवेश रोकने के लिए वर्ष 1980 में दो रिंग रोड बनाने का प्रस्ताव तैयार किया था।

ताउम्र रहे स्वच्छ राजनैतिक व्यक्तित्व रहे

1989 में विधानसभा में धारा 310 हटाए जाने का अशासकीय प्रस्ताव रखकर सभी को चौंका दिया था। तब उन्हें पार्टी से हटाने का फैसला भी हुआ लेकिन हटाया नहीं जा सका। 1986 में उन्होंने विधानसभा से इस्तीफा भी दिया था। सेठ और विष्णुप्रसाद शुक्ला के बीच 1990 का विधानसभा चुनाव सबसे चर्चित था। शुक्ला तब भाजपा के दबंग नेता माने जाते थे लेकिन सेठ ने 1082 मतों से जीत हासिल की। इसके बाद सेठ ने मेयर और विधानसभा के चुनाव लड़े लेकिन जीत नहीं पाए।

हाथी पर बैठ कर पहुँचे सदन, दर्शाया विरोध

दबंग छवि के सेठ एक ऐसे नेता थे जो सच के लिए अपनी पार्टी लाइन को लांघने से भी पीछे नहीं हटते थे। वैसे तो सेठ ने कई बार अनशन आंदोलन कर सरकार की नीतियों का विरोध किया लेकिन एक बार तो वे हाथी से विरोध करने विधानसभा पहुंच गए। सेठ को यह बात पता थी की वहां पर बड़ी संख्या में पुलिस बल मौजूद है जो उन्हें रोकने की कोशिश करेगा। इसी को देखते हुए उन्होंने हाथी से विधानसभा पहुंचने का फैसला किया और गेट तक जा पहुंचे। गेट पर जैसे ही पुलिस ने उन्हें रोका उन्होंने तत्काल अपने कार्यकर्ताओं से कहा कि आप मुझे उठाकर विधानसभा गेट के अंदर फेंक दें। कार्यकर्ताओं ने उन्हें समझाया की इससे आपकों चोट भी आ सकती है लेकिन वे नहीं माने।

तो इसलिए भी लता जी को याद हैं

इंदौर...

सुरेश सेठ के विरोध से स्वर कोकिला लता मंगेशकर भी अछूती नहीं रही। इंदौर में इनडोर स्टेडियम बनने की कवायद में सरकार जुटी हुई थी। सरकार ने इसके लिए लता जी को एक चैरेटी शो करने के लिए मनाया और उन्हें इंदौर आने का निमंत्रण दिया। सरकार ने इसके लिए लता जी को कई तरह की सुविधाएं दी थी। उस दौरान इंदौर के महापौर रहे सेठ जी को यह बात नागवार गुजरी। उनका कहना था की जब यह सार्वजनिक कार्यक्रम है तो सरकार इतनी सुविधाएं और छूट कार्यक्रम को लेकर क्यों दे रही है। उन्होंने इसका पुरजोर विरोध किया और लता जी जिस होटल में रुकी थी वहां कार्यकर्ताओं के साथ पहुंचकर उन्हें काले झंडे दिखाए थे। इस बात से लता जी भी स्तब्ध थी, आख़िर शो तो हुआ पर उसके बाद लता जी का कोई शो इंदौर में नहीं हुआ ।

ये याचिकाएँ रही सेठ साहब की देन

1. स्वदेशी मिल की 15 एकड़ से ज्यादा जमीन निजी कंपनी को बेचने के फैसले के खिलाफ।
2. पूर्व मंत्री लक्ष्मणसिंह गौड़ और प्रकाश सोनकर की मृत्यु की सीबीआई जांच की मांग।
3. सुगनी देवी कॉलेज से लगी तीन एकड़ जमीन आवंटन विवाद।
4. खजराना जागीर जमीन मामले में याचिका।
5. नगर निगम पेंशन घोटाला।
6. बख्तावरराम नगर जमीन घोटाला।

(गीत)

वनिता

आलोकित करता जीवन को तेज पुंज सविता।
संबंधों में प्रेम प्रवाहित करती है वनिता।
बनकर बिटिया घर आँगन जो मधुवन सा महकाती
बहना बनकर कर्तव्यों का बोध हमें करवाती
सह कर प्रसव वेदना भारी माता वो कहलाती
बने संगिनी तो जीवन का अलंकार बन जाती
नारी मन से बहे निरंतर विमल नेह सरिता
आलोकित करता जीवन को तेज पुंज सविता।
संबंधों में प्रेम प्रवाहित करती है वनिता।
परम्परा के दुर्गम पथ पर चलती है वो प्रतिपल
इतनी सरला प्राण दायिनी हो जैसे पावन जल
नतमस्तक नारी के आगे धरती अम्बर का तल
नारी के धीरज में मिलता हर कठिनाई का हल
त्याग समर्पण दया प्रेम की है पावन संहिता
आलोकित करता जीवन को तेज पुंज सविता।
संबंधों में प्रेम प्रवाहित करती है वनिता।
नारी का अपमान न करना निश्चित होगा विनाश
कौरव कुल की दुर्गति देखो कैसा हुआ इतिहास
पथ की बाधा मत बनना तुम चूमने दो आकाश
दोनो कुल का मान बढ़ेगा मन में रखो विश्वास
क्षमता नहीं इतनी जो लिखूं नारी पर कविता
आलोकित करता जीवन को तेज पुंज सविता।
संबंधों में प्रेम प्रवाहित करती है वनिता।

-मेघा योगी

मेरेज के बाद पहली बार बहू रसोई में गई और रेसिपी बुक में पढ़कर खाना बना रही थी ।

सास बाहर से लौटी,

फ्रिज खोला,

देखकर चौंक गई और पूछा

ये मन्दिर का घंटा फ्रिज में क्यों रखा है?

बहू- बुक में लिखा है, सब चीजों का मिश्रण कर लें

और एक घंटा फ्रिज में रखें।

कविता

हाँ! मैं स्त्री हूँ,

एक ऐसी स्त्री जिसने
चार दशक पूरे किए
अपने सम्पूर्ण स्त्रीत्व के साथ
क्या आप जानते हैं
यहाँ स्त्री की संपूर्णता का जिक्र
क्यों किया मैने?
स्त्री की संपूर्णता
यानि
जन्म माँ बाबुल की गोद में
बचपन दादी-नानी की छत्रछाया में
यौवन
ढेर सारे बंधनो में
बहुत जटिल और कंटीले बंधन
टीसते से चुभते से दुखते से
मगर दिखते नहीं
ये बंधन ठीक उस दिन से
जिस दिन सुबह सुबह मैं डर गई
बिना किसी चोट के रिसते रक्त से
वो भी उस जगह जो किसी को बताई नही जाती
माँ को रोकर बताया
बहुत सारी नसीहतों के साथ
एक जरूरी ऐलान किया गया
अब तुम बड़ी हो गई हो,...
दुपट्टा संभालो,..
ठीक से बैठो,..
उन दिनों में
सबके सामने आकर मत बैठा करो
कपड़ा ठीक से धोया या नहींड़
गंदा कपड़ा छुपाकर सुखाओ,
शर्म नहीं आती पापा या भाई देख लेंगे,...
अकेले कहीं बाहर मत जाओ,..
हद्द है!!
अचानक क्या बदल गया मुझमें
ये रक्तस्राव मेरी गलती तो नहींड़
आखिर क्यों का जवाब मिला
दसवीं की जीवविज्ञान की किताब में,..
सच कहूँ तो में खुद
इसे हौआ समझकर डरने लगी
कोसती रहती इन दिनों के आने तक
खुद के स्त्री होने को
पर इन दिनों का देर से आना
और अपनों की ही सवालिया निगाहें
उफ्फ
हर बात से अनभिज्ञ
अपने ही चरित्र को टटोलती लड़की
क्योंकि तब तो पुरुष का स्पर्श भी
माहवारी के दिन बढ़ने का कारण लगता
और पुरुष से बचती कहाँ?
घर में, सह शिक्षा के विद्यालय में,
रिक्शे में, बस में
हर जगह भीड़ और धक्का मुक्की,..
खैर
दिन बीते
साल बीते
अब सचमुच मैं सयानी हो गई,
ब्याह कर अपने घर का बोझ
किसी और देहरी का दीपक जलाने वाली लक्ष्मी बना
दाम्पत्य के दस्तूर निभाए,
मातृत्व का सौभाग्य पाया,
और हो गई सम्पूर्ण
दो बेटों के साथ
एक बेटी की माँ बनकर,...
बहुत मुश्किल था ये सफर
दुप्पटे के फटे टुकड़ों से सेनेटरी पैड तक
दुर्गंध और गंदगी को धोने सुखाने छुपाने और फेंकने तक की त्रासदी भरा
और उन दिनों पुरुष ही नहीं बल्कि
उन महिलाओं द्वारा भी
अछूत मानकर हिराकत भरी नजर से
देखा जाना,..
आज सचमुच मैं खुश हूँ
अपनी बेटी और आने वाली पीढ़ी को
बचा पाऊंगी इस त्रासदी से
क्योंकि विज्ञान का एक और चमत्कार
'मैन्सट्रुअल कप'
जिसे हिन्दी प्रचारक होने के नाते
मातृभाषा हिंदी में मैंने दिया है एक नाम
'माहवारी धारक पात्र'
जिस तरह गर्भधारक गर्भाशय
दिलाता है मुझे सम्मान माँ होने का,
उसी तरह ये उपकरण
दिलाएगा एक दुखदायी जिंदगी से
धोने, सुखाने, छुपाने या सेनेटरी पेड को
फेंकने की शर्मिंदगी से।
और हाँ
मेरी बेटी और उस उम्र से हर उम्र तक की माहवारी से गुजरती तमाम स्त्रियाँ
जी सकेगी
सचमुच सक्षमीकरण के आधुनिक युग की
सक्षम स्त्री की जिंदगी।

-प्रीति सुराना

आप सभी को होली की हार्दिक बधाई

रंगो की बाग मै फूल रंग का खिलता है
ए मौका
वर्ष मैं एक बार,
बसंत मै मिलता है..
रंग गुलाल से बनती है हर घर में रंगोली
कितना मधुर कितना पावन है।।
ए रंगो की ए होली
कहीं रंग गुलाल उड़े
कहीं चले पिचकारी।।
कहीं मीठी पकवान बने
कोई पिये मदिरा भांग।।
कोई राधा-कृष्ण गान करे
कोई करे नृत्य निराली
रंग गुलाल मीठा सहीत
चढ़ते है प्रभु को थाली।।
बड़ो को टीका लगा कर
लेते है सब आशिश ...
बड़ा सकुन मिलता है
झुका के बड़ो के आगे शीश
हर द्वेष भूल कर
अपनो को गले लगाते है।।
इस खूबसुरत अवसर पर
दुश्मन भी दोस्त बन जाते है।

-अमित मिश्रा

मुकेश अंबानी- में अगर सुबह से अपनी कार में निकलू तो
शाम हो जाये फिर भी अपनी आधी प्रोपर्टी नहीं देख सकता।
सांता-साला, मेरे पास भी ऐसी ही एक खटारा कार थी बेच दी। तुम भी बेच दो भाई।

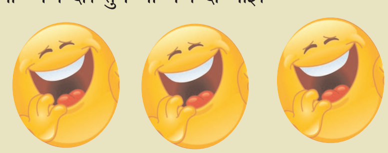

चाहें कितनी भी अंग्रेजी सीख लो।
लेकिन,
अगर कुत्ता पीछे पड़ जाए तो
हट्ट-हट्ट

उप चुनाव ये हार थी या कुछ और था..?

14 मार्च को आये 3 लोकसभा उप चुनाव के नतीजों में भारतीय जनता पार्टी को बड़ी हार का सामना करना पड़ा! बात अगर बिहार की अररिया लोकसभा उप चुनाव कराने की जाये तो भाजपा पर हार का तार्किक जबाव उपलब्ध है! मगर पार्टी उप्र के मुख्यमंत्री और 'हिन्दु पोस्टर बॉय' योगी आदित्यनाथ और प्रदेश के डिप्टी सीएम केशव मोर्य की छोड़ी गई सीट गोरखपुर और फूलपुर संसदीय सीट की हार पर कुछ खास बोलने से परहेज कर रही है! हालांकि मुख्यमंत्री और डिप्टी सीएम ने माना कि हम अत्याधिक आत्म विश्वास में और कम वोटिंग और अचानक सपा और बसपा के एक साथ आ जाने की वजह से हारे! मगर ये कहना न काफी होगा, कि मात्र इन कारणों से हारे हैं? कारण और भी हैं जिसपर पार्टी को 2019 के आम चुनाव को देखते हुये गहरा आत्म चिंतन करना पड़ेगा क्योंकि ये पराजय मात्र योगी की ही नहीं है! इसके मुख्य किरदार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भाजपा के आधुनिक चाणक्य अमित शाह भी हैं क्योंकि 30 साल बाद पहली दफा उन्होने गोरखपुर में मठ और उसके बाहर के किसी व्यक्ति को उम्मीदवार बनाया! दरअसल फूलपुर में हार की पटकथा गत एक दिसंबर को जब लिखी गई थी तब प्रदेश में सपन्न हुये नगरीय निकाओं के चुनाव में डिप्टी सीएम केशव मोर्य अपने ही ग्रह नगर पंचायत सिराथू से पार्टी के उम्मीदवार को नहीं जिता पाये! भाजपा के उम्मीदवार को एक भोला यादव नाम के एक अंजान निर्दलीय ने पटकनी दे दी थी! लगभग यही कहानी सूबे के मुख्यमंत्री की निजी राजधानी गोरखपुर में भी दोहराई गई! योगी भी अपने वार्ड में और क्षत्रियों के गढ़ गोरखनाथ मठ (मंदिर) के चारो तरफ की नगर निगम सीट हार गई!मगर किन की वजह से हार गई? इसके अलावा भाजपा प्रत्याशी की हार की सबसे बड़ी वजह रही प्रधानमंत्री और अमित शाह द्वारा 30 साल में पहली मर्तबा योगी की मर्जी के विपरीत मठ के किसी व्यक्ति को टिकट देने की जगह मठ विरोधी ब्राह्मण जाति के व्यक्ति उपेन्द्र दत्त शुक्ला को टिकट देना! जबकि हाता और मठ की कई दशक पुरानी रंजिस पूर्वाचंल उत्तर प्रदेश में विख्यात है! ऐसे में भाजपा की हार में मठ की जीत को अंदरखाने देखा जा रहा है! दरअसल सन् 1950 के दशक में मठ के तत्कालीन मंहत दिग्विजय नाथ और ब्राह्मण समाज के सर्वमाण्य समाजसेवी पं. सुरति नारायण मणि त्रिपाठी के बीच अटूट संबंध थे, दोनों ने आधुनिक गोरखपुर के लिए मजबूत आधार शिला रखी! मगर इसी बीच किसी बात पर मंहत दिग्विजय नाथ ने पं. सुरति नारायण की किसी बात पर बेइज्जती कर दी! ब्राह्मण समाज

पंडित जी के इस अपमान को भुला नहीं पाया नतीजन दोनों के बीच खाई बढ़ती गई! मंहत जहां क्षत्रिय समाज के खेवनहार बने तो पंडित जी ने ब्राह्मण समाज की बागडोर अपने हाथ में थामी! तब से अब तक पूर्वाचंल उत्तर प्रदेश में वर्चस्व की जंग दोनो जातियों में अभी तक जारी है! जिसके शिकार दोनों जाति के दिग्गज राजनीतिक नेता होते रहे हैं! मंहत दिग्विजय नाथ के बाद मठ की कमान मंहत अवैधनाथ, वीरेन्द शाही और मंहत योगी आदित्यनाथ ने सभाली तो ब्राह्मण समाज की बागडोर कई दफा के विधायक और कल्याण सिंह और राजनाथ सिंह मंत्री मंडल में मंत्री रहे पंडित हरीशंकर तिवारी, पूर्व मंत्री और अब हत्या के मामले में सजायाफ्ता अमरमणी त्रिपाठी और श्री प्रकाश शुक्ला ने संभाली! इस आपसी दुस्मनी के शिकार केवल उपेन्दर शुक्ला ही नहीं हुये हैं, 1971 में प्रदेश की मिलीजुली सरकार के मुख्यमंत्री त्रिभुवन नारायण सिंह भी हो चुके हैं! जब ने मुख्यमंत्री की कमान संभालने के बाद सदन का सदस्य बनने के लिए गोरखपुर की मनीरामपुर विधानसभा से उप चुनाव में खड़े हुये तो ब्राह्मण समाज के अनजान व्यक्ति और अमर उजाला के पत्रकार रामाकृष्ण द्विवेदी ने उन्हें चुनाव हरा दिया था! वैसा ही कुछ-कुछ इस उप चुनाव में भी हुआ! मुख्यमंत्री योगी ने शुक्ला को जिताने के लिए गोरखपुर में 17 जनसभाएं की वहीं 14 मंत्रियों के साथ 8 सांसद और 10 विधायक गोरखपुर में भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में चुनाव तक डटे रहे, मगर वे समाजवादी पार्टी के प्रवीण निषाद को जीतने से नहीं रोक पाये! गोरखपुर मठ से प्रदेश के मुख्यमंत्री बनकर ताकतवर नेता के रुप में उभरे योगी लाख जतन करने के बावजूद मठ, युवा हिंदु वाहनी और भाजपा कार्यकर्ताओं को बूथ पर बिठाने में और अपनी पार्टी के समर्थक मतदाताओं को बूथ तक लाने में बुरी तरह से असफल हो गये! यह मानने की भी कोई ठोस बजह भी दिखलाई नहीं पढ़ रही कि मुख्यमंत्री के गढ़ में पार्टी के कार्यकर्ता और मठ के समर्थक अकारण ही बूथों से दूर रहे? अब अगर भाजपा प्रत्याशी की हार को दशकों पुरानी दो समाजों के बीच चली आ रही आपसी वर्चस्व की लड़ाई को न माना जाये तो और क्या माना जाये? इसलिये कहा जा सकता है कि भाजपा नेतृत्व को इस की समीक्षा में ये तय करना पड़ेगा कि 'ये हार थी या कुछ और था?'

-गोपाल नारसन

कविता

बसन्त

आयो री बसन्त मनभावन हे सखी,
बगिया देखो इतराय रही।
कलियन की शान निराली है सखी,
हरियाली चहुँदिशि छाय रही ।
आम्रवृक्ष बौराय चहुँ दिशि है सखी,
भीनी सी सुगन्ध लुभाय रही ।
रंगीन धरा कैसी सजी धजी है सखी ,
सूरत सबके मन को भाय रही।
आयो री बसन्त मनभावन हे सखी ,
हियरा सबका हुलसाय रही ।
खेतों की सजधज बढ़ी हुई है सखी,
अंखियन को है भाय रही ।

-डॉ.सरला सिंह

गुड़ी पड़वा

गुड़ी पड़वा का पर्व
करते भारतीय गर्व
हिंदुओं का नववर्ष
सुख-समृद्धि का हर्ष

खुशियों की देता दस्तक
करें अभिनंदन नतमस्तक
नई शक्ति का हो संचार
नयी कल्पनाएँ हो साकार

प्रेम एकता की भावना
मंगलमय मार्ग,शुभकामना
हिंदुत्व हमारी शान है
नव वर्ष पर अभिमान है

-आशा जाकड़

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

अन्तरा- शब्दशक्ति प्रकाशन परियोजना

क्या आप हिन्दी लेखन करते हैं? यदि हाँ तो
अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन लाया है आपके लिए पुस्तक प्रकाशन योजना

ई-बुक प्रकाशन योजना

प्रकाशन परियोजना के अंतर्गत ईबुक एवं मुद्रित किताबों हेतु पांडुलिपियाँ आमंत्रित है। पूर्व प्रकाशित किताबों की पीडीएफ उपलब्ध हो तो अन्तरा-शब्दशक्ति.कॉम पर ई-बुक का निःशुल्क प्रकाशन किया जाएगा । ई-बुक अन्तरा-शब्दशक्ति.कॉम व मातृभाषा.कॉम पर प्रकाशित की जाएगी, साथ ही 10 मुद्रित प्रतियाँ भी दी जाएगी।

पृष्ठ संख्या	आवरण सहित मूल्य
16 पृष्ठ	रु 1100
32 पृष्ठ	रु 2100
48 पृष्ठ	रु 3100
64 पृष्ठ	रु 4100
80 पृष्ठ	रु 5100
96 पृष्ठ	रु 6100
112 पृष्ठ	रु 7100
अतिरिक्त 16 पृष्ठ	शुल्क 1000रु

पुस्तक प्रकाशन योजना

150 किताबों का मूल्य जिसका ई बुक संस्करण भी प्रकाशित किया जाएगा एवं ऑनलाइन उपलब्ध भी करवाई जाएगी।

	पेपर बैक	हार्ड बाइंडिंग
16 पृष्ठ	रु 6100	
32 पृष्ठ	रु 8100	
48 पृष्ठ	रु 10100	
64 पृष्ठ	रु 12100	रु 14500
80 पृष्ठ	रु 14100	रु 17500
96 पृष्ठ	रु 16100	रु 19500
112 पृष्ठ	रु 18100	रु 21500
+अतिरिक्त		
16 पृष्ठ	रु 2000	रु 3000

'विशेष सम्मान' सभी प्रकाशित किताबों के रचनाकारों का सम्मान विश्व पुस्तक मेला 2019 में 8 दिवसीय प्रतिदिन विशेष आयोजन में हिन्दीग्राम द्वारा किया जाएगा।
विशेष: जुलाई 2018 के पहले प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की 'पुस्तक चर्चा' का आयोजन संस्था द्वारा निःशुल्क किया जाएगा

साहित्यकार कोश
कलमकार का परिचय
www.sahityakarkosh.com

डॉ. प्रीति सुराना
संस्थापक

+91-9424765259
antrashabdshakti@gmail.com
www.Pritisamkit.com
www.antrashabdshakti.com

चुनौतियों के भंवर में बजट

वित्त मंत्री अरुण जेटली द्वारा आखिरी पूर्ण बजट पेश करने के बाद शाद अजीमाबादी की ये पंक्तियां याद आ रही हैं–'तमन्नाओं में उलझाया गया हूं खिलौने देकर बहलाया गया हूं'।

वित्त मंत्री के बजट भाषण के दौरान सबसे ज्यादा तालियां उस समय बजी जब राष्ट्रपति,उप राष्ट्रपति, राज्यपाल और सांसदों के वेतन की बढ़ोतरी का प्रस्ताव लाया गया, इसका सीधा-सा तात्पर्य है कि बजट इन्हीं लोगों के लिए था। बजट 2018-19 में सबसे ज्यादा ध्यान गाँव, गरीब और किसानों पर दिया गया,वाजिब भी है,क्योंकि भारत की 62 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में रहती है। उनके विकास के लिए अधिक व्यय होना वाजिब है, लेकिन भारत की राष्ट्रीय आय में उनका योगदान मात्र 14 प्रतिशत है। यह कहाँ तक उचित है कि जो लोग (मध्यम वर्ग) भारत की राष्ट्रीय आय में सबसे ज्यादा योगदान देते हैं,अपने खून-पसीने की कमाई सरकार को महसूल के रूप में देते हैं,उनके कल्याण के लिए कोई बात नहीं की गई। आयकर में तो कोई राहत नहीं दी गई,बल्कि बल्कि 1 प्रतिशत सेस में और बढ़ोतरी की गई।

वित्त मंत्री जिन 40,000 की छूट की बात कर रहे हैं,उसमें 34 ,200 की छूट तो पहले ही थीद्य मात्र 5800 रुपए की छूट देकर ऐसा जताने का प्रयास किया जा रहा है,जैसे बहुत बड़ा अहसान कर दिया है। वहीं वित्त मंत्री ने 70 लाख नौकरियों का आश्वासन दिया है,लेकिन कैसे,किस क्षेत्र में? इस बात को स्पष्ट नहीं किया और अपने चुनावी एजेंडे में जिन 5 करोड़ लोगों को रोजगार देने की बात कही थी,उसका क्या हुआ? भारतीय श्रम मंत्रालय और रोजगार मंत्रालय के अनुसार विगत 3 सालों में मात्र 26 लाख लोगों को नौकरियां मिली हैं,तो बाकि की 4.74 करोड़ नौकरियां क्या आगामी 2 सालों में संभव है?

आपको बता दें कि 2010 में बराक ओबामा ने अमेरिका में एक योजना लागू की थी,जिसे 'ओबामा केयर' कहा गया था। उसमें उन्होंने देश के 15 प्रतिशत गरीब परिवारों को निःशुल्क इलाज प्रदान किया था। देखा जाए तो अमेरिका एक विकसित देश है जहाँ के 95 प्रतिशत लोग आयकर का भुगतान करते हैं, तो वहाँ वित्त की कोई समस्या नहीं थी किन्तु भारत में मात्र 23 प्रतिशत लोग आय पर कर का भुगतान करते हैं। यहाँ सबसे ज्यादा समस्या वित्त की है,क्योंकि हम लोग अपने कुल खर्चे का 19 प्रतिशत तो उधार से काम चलाते हैं,ऐसे में इतनी बड़ी राशी कहाँ से आएगी? इस बात का वित्त मंत्री ने कोई उल्लेख नहीं किया। उन्होंने 10 करोड़ परिवारों यानि 50 करोड़ लोगों को 'आयुष्मान भारत' योजना का लाभ दिलाने की बात कही है। यदि इस योजना से 1 प्रतिशत लोग भी लाभ लेते हैं,तो यह राशी 50,000 करोड़ रुपए होती है तो फिर 100 प्रतिशत के लिए कितनी राशी की आवश्यकता होगी, इस बात का आप अनुमान लगा लीजिए इतनी बड़ी राशी कहाँ से आएगी?

फिर से मध्यम वर्ग का शोषण होगा,या फिर से विनिवेश के माध्यम से भारतीय सम्पत्तियों को बेचा जाएगा। बचत हमेशा मध्यम वर्ग करता है और उनकी बचत पर भी 10 प्रतिशत की दर से कर लगा दिया है। इससे उनकी बचत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। 2022 तक कृषकों की आय को दुगुना करने का गणित यह है कि,कृषि लागत या समर्थन मूल्य की गणना या अनुमान कृषि लागत एवं मूल्य आयोग करता है और उनकी गणना में बहुत विसंगति है।

इस बात को भारत सरकार द्वारा गठित चंद्रा समिति ने माना है,उनकी गणना यदि सटीक होती तो भारत में हर साल लाखों किसान आत्महत्या नहीं करते। जब भारत सरकार 70 साल से आज तक कृषि लागत का सही अनुमान नहीं लगा सकी,तो मोदी सरकार एक साल में कृषि लागत का सही अनुमान,पता नहीं किस जादू की छड़ी से लगाएगी।

साथ ही,प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना जिसका वित्त मंत्री ने बजट भाषण में बार-बार जिक्र किया है,की सच्चाई यह है कि उज्ज्वला योजना में जितने भी गैस सिलेंडर वितरित हुए हैं, उनमें से मात्र 19 प्रतिशत सिलेंडर ही रिफिल हुए हैं (29 जनवरी को जारी आर्थिक समीक्षा के अनुसार),बाकी सब धूल फांक रहे हैं। सीधा-सा मतलब यह है कि,सरकार उस आदमी को चने मुफ्त में दे रही है जिसके पास चबाने के लिए दांत ही नहीं है।

वहीं अंतिम पूर्ण बजट में देश भर में नए 24

मेडिकल कॉलेज खोलने की बात कही गई है,लेकिन चिकित्सक कहाँ से आएंगे,इस बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई है। इधर वित्त मंत्री जेटली ने शाला से ब्लैक बोर्ड हटाकर डिजिटल बोर्ड लगाने की भी बात की है,लेकिन क्या डिजिटल बोर्ड लगाने से शिक्षा में गुणवत्ता आ जाएगी? क्या शिक्षा का स्तर बढ़ जाएगा? मेरा जवाब है-'नहीं', क्योंकि भारत सरकार शिक्षा पर मात्र अपने बजट का 3 प्रतिशत के लगभग खर्च करती है जो अपर्याप्त है। इसी कारण भारत में शिक्षा का स्तर नहीं बड़ पा रहा है। वित्त मंत्री जेटली ने ग्रामीण क्षेत्र में वाई-फ़ाई का विस्तार करने की योजना का बजट में प्रावधान किया है,लेकिन इससे ज्यादा जरुरी उनके लिए पीने के पानी एवं 24 घंटे विद्युत की व्यवस्था करना है।

सरकार अपनी योजना को पूरा करने के लिए वित्त की व्यवस्था करती है और अधिकतर वित्त के लिए विनिवेश पर निर्भर रहती है लेकिन विनिवेश के ऊपर ज्यादा निर्भरता हमेशा ही अच्छी नहीं होती। हर साल विनिवेश के मध्यम से सरकार भारतीय सम्पत्ति को ज्यादा से ज्यादा बेचने का प्रयास कर रही है। इसलिए इस साल के अंतिम पूर्ण बजट के जमीनी धरातल पर साकार होने की संभावनाएं कम नजर आ रही है। वैसे भी यह सच है कि सरकार के अंतिम वर्ष यानि चुनाव आने से पहले पेश किया बजट चुनावी घोषणा-पत्र ही होता है।

-देवेन्द्र राज सुथार

यह कैसा मातृभाषा दिवस है ?

आज सारी दुनिया के देश मातृभाषा दिवस मना रहे हैं। 21 फरवरी को मातृभाषा दिवस क्यों मनाया जाता है? क्योंकि यूनेस्को ने इसे 1999 में मान्यता दी थी। 21 फरवरी को इसलिए मान्यता दी गई क्योंकि इसी दिन 1952 में पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) के नौजवानों ने अपनी मातृभाषा बांग्ला के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए थे।

पाकिस्तान इन पर उर्दू थोप रहा था और वे बांग्ला चाहते थे। उर्दू तो पाकिस्तान की भी भाषा नहीं है। वह तो भारत से गए मुहाजिरों की भाषा है। पाकिस्तान की भाषाएं हैं– पंजाबी, सिंधी, पश्तो और बलूच आदि। वास्तव में मातृभाषा के इस आंदोलन ने 1971 में बांग्लादेश को अलग राष्ट्र के रुप में स्थापित किया। अब बांग्लादेश के साथ दुनिया के सभी देश 21 फरवरी को मातृभाषा दिवस के रुप में मनाते तो है लेकिन सारी दुनिया में आजकल मातृभाषाओं या राष्ट्रभाषाओं की स्थिति क्या है? आप पांच महाशक्तियों, जापान, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड तथा यूरोपीय राष्ट्रों जैसे देशों को छोड़ दें तो आज भी दुनिया के ज्यादातर देश भाषाई गुलामी का बोझ ढो रहे हैं।

एशिया, अफ्रीका और लातीनी अमेरिका के देशों में अंग्रेजी, फ्रांसीसी, हिस्पानी आदि औपनिवेशिक भाषाओं का वर्चस्व बना हुआ है। जो देश पहले गुलाम रहे हैं, वे आज भी सांस्कृतिक दृष्टि से गुलाम है। उनके कानून, उनकी ऊंची शिक्षा, उनका न्याय, उनका प्रशासन अभी भी उनके पुराने मालिकों की भाषा में चलता है। वहां मातृभाषा अब भी नौकरानी है और मालिकों की भाषा महारानी है। भारत में इस गुलामी को महर्षि दयानंद, महात्मा गांधी और राममनोहर लोहिया ने चुनौती दी थी। हमारे वर्तमान नादान नेताओं को क्या कहें, वे मातृभाषाओं की रक्षा कैसे करेंगे, जब राष्ट्रभाषा ही भारत में पददलित हो रही है। दुनिया में अभी लगभग 7000 भाषाएं या बोलियां हैं। उनकी रक्षा नहीं होगी तो उनके साथ जुड़ी परंपराएं, मूलवृत्तियां, मूल्यमान और चिंतन पद्धतियों का भी लोप होता चला जाएगा।

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक

प्रेम का विराट रुप श्रद्धा

प्रेम ईश्वरीय सत्ता द्वारा प्रदत्त वह सोपान है जिस पर सृष्टि की नींव खड़ी है भारतीय संस्कृति में इसे सर्वोपरि स्थान दिया गया है। इस भावना के वशीकरण से बड़े से बड़ा कार्य आसानी से हल हो जाता है।

इसका अभाव विध्वंस को न्योता देता है भौतिक सुख साधन संपदा सब इस एक एहसास के आगे बेमानी हैं इस उदात्त भावना का बीज परिवार में रोपित होता है जिसका विस्तृत रूप वट वृक्ष बन समाज देश व विश्वको छाया देता है, प्रेम से ही कल्याण व उन्नति की परिकल्पना की जा सकती है।

प्रेम के कई रुप हो सकते हैं किंतु उसके सभी रूपों में समर्पण समाहित है पति पत्नी के प्रेम का रुप पूर्णतः त्याग विश्वास और समर्पण है । वैवाहिक जीवन में टकराहट के बाद पुनः एक होना एक दूसरे की व्यथा पीड़ा सुख-दुख में एकाकार होना जीवन भर परस्पर सहृदयता से साथ निभाना कोई मजबूरी नहीं हो सकती। प्रेम अपने स्वभाव से एक दूसरे को आकर्षित करता रहता है।

समय के निरंतर चलते चक्र में बच्चे ब्याहे जाते हैं नाती-पोते होते हैं प्रेम यथावत स्थिर रहता है ,जीवन के आखिरी पड़ाव पर गिले-शिकवे समाप्त हो जाते हैं दुनिया असार लगने लगती है पर प्रेम घटने की बाजाए और अधिक बढ़ने लगता है।

इस अवस्था में वह श्रद्धा को वरण करता है सच्चे प्यार की ताकत को नकारा नहीं जा सकता आज जब भौतकता और स्वार्थ लोलुपता मानव को दानव बना रही है ऐसे में प्यार के दो पल इंसान को पुनर्जीवित करने और आत्मविश्वास बढ़ाने में अहम भूमिका निभाते हैं अभिव्यक्ति से परे यह तो वह एहसास है जिसे युगों से बयॉं किया जा रहा है किंतु परिभाषित न हो सका

-मीना गोदरे

वजूद

आज जब ढूँढा
वजूद अपना
उठ रहे हैं कई सवाल
मिटा दिया जब खुद को
सब थे मौन
ये सब थे कौन ड़
कहने को तो थे
ये अपने
चाहा कुछ कहना तो
दिला दिये याद
मर्यादा,संस्कार, परम्पराएं
सोचा छू लूं आसमां
पर वहां भी
गीद्व हैं खड़े
धर दबोचने को
ना घर ,ना बाहर
कहाँ हूँ महफूज
हृदय में उठते कई भाव
फिर भी
नही तोड़ पाई
ममता और प्यार का
वो मोह जाल ।।

-शालिनी खरे

बैंकों की घुमावदार सीढ़ियां

तब तक शायद बैंकों का राष्ट्रीयकरण नहीं हुआ था। बचपन के बैक बाल मन में भारी कौतूहल और जिज्ञासा का केंद्र होते थे। अपने क्षेत्र में बैंक का बोर्ड देख मैं सोच में पड़ जाता था कि आखिर यह है क्या बला। बैंकों की सारी प्रक्रिया मुझे अबूझ और रहस्यमय लगती। समझ बढ़ने पर जब मुझे पता लगा कि इसमें लोग अपने रुपये जमा करते हैं तो मैं सोचता कि आखिर रुपये जमा करने के बाद उनका होता क्या होगा। भवन में रुपये कहां रखे जाते होंगे। पहले जमा रख कर बाद में वही रुपये यदि ग्राहक को लौटा दे तो फिर बैंकों को इससे क्या फायदा होता होगा। इस बीच मेरे मोहल्ले के पास नया बैंक खुला पंजाब नेशनल बैंक। पहले मुझे लगा शायद यह पंजाबियों का बैंक होगा। लेकिन धीर-धीरे बात मेरी समझ में आती गई। छात्र जीवन में बैंक में खाता खुलवाना और समय-समय पर रुपये जमा करना और निकालना मुझे सुखद लगता था। बैंकों से मिलने वाले हस्तलिखित पास बुक को मैं काफी सहेज कर रखता था। उसमें जमा-निकासी के विवरण को देखना मेरे लिए सुखद अनुभव होता था।तब तक बैंकों ने कॉरपोरेट लुक अख्तियार नहीं किया था। बैंकों की सीढ़ियां तब काफी घुमावदार हुआ करती थी और प्रवेश द्वार पर मोटी जंजीर के साथ पीतल का मोटा ताला लटका रहता था। लेकिन बैंकों का दायरा बढ़ने के साथ ही वहां का बोझिल माहौल, कर्मचारियों की ठसक और अहंकारपूर्ण आचरण से मेरा बैंकों से मोहभंग होने लगा और जल्द ही मैने बैंकों से दूरी बनानी शुरू कर दी। लेकिन कालांतर में बेटी की उच्च शिक्षा के लिए जरूरी लोन को मुझे फिर न चाहते हुए भी एक बैंक के शरणागत होना पड़ा। प्रक्रिया की शुरूआत में ही मुझे यह पहाड़ जैसी चुनौती महसूस होने लगी। संबल था तो बस कलमकार होने के चलते कुछ जान पहचान का। लेकिन जल्द ही मेरे पांव उखड़ने लगे। क्योंकि बैंक कर्मी एक- एक कागजात की इस प्रकार की जांच कर रहे थे मानो सीबीआई के समक्ष खड़ा कोई अपराधी हूं। हर कागजात को शक की निगाह से देखना और बाल की खाल निकालने की बैककर्मियों की आदत से मैं जल्द ही परेशान हो गया । बीच में कई बार मैने लोन मिलने की उम्मीद ही छोड़ दी। बैंक अधिकारियों के नाज-नखरे से परेशान होकर अंतिम कोशिश के तौर पर मैने संबंधित बैंक के क्षेत्रीय प्रबंधक को फोन लगाया और लोन मिलने में हो रही परेशानी का जिक्र किया। फोन पर तो उन्होंने ज्यादा गर्मजोशी नहीं दिखाई, लेकिन शायद उनसे बातचीत का ही असर था कि अड़ियल रवैये वाले अधिकारियों के तेवर अचानक ढीले पड़े और जल्द ही मेरा ऋष्टा आवेदन मंजूर हो गया। शुरूआती कुछ किश्तें मिलने में भी ज्यादा परेशानी नहीं हुई। लेकिन इस बीच अधिकारियों के बदलते ही फिर परेशानी शुरू हो गई। आय-व्यय का संपूर्ण विवरण संलग्न रहने के बावजूद नए प्रबंधक ने ब्याज और किश्तों का भुगतान तत्काल शुरू करने के लिए मुझ पर दबाव बनाना शुरू कर दिया। मैने समझाने की बहुत कोशिश की और शैक्षणिक ऋष्टा के नियमों का भी हवाला दिया, लेकिन प्रबंधक सूदखोर महाजन की तरह मेरे सिर पर सवार होने की कोशिश करने लगा। क्या पता आज के संदर्भ में यह संभव हो पाता या नहीं लेकिन तत्कालीन अहिंदी भाषी वित्त मंत्री को सादे कागज पर लिखे शिकायती पत्र का ऐसा असर हुआ कि बैंक अधिकारी म्यूं-म्यूं करने लगे और उन्होंने मुझसे कागजों पर यह भी लिखवा लिया कि मुझे बैंक से कोई शिकायत नहीं है। हालांकि वित्त मंत्री की हनक का असर ज्यादा दिन कायम नहीं रह सका। प्रबंधक व अधिकारियों के तबादले के बाद कार्यभार संभालने वाले नए लोगों की टीम ने सामान्य ऋष्टा पर अत्यधिक सख्ती बरतनी शुरू की जिसे देखकर मुझे उन किसानों स्मरण हो आया जिन्होंने बैंकों की जोर-जबरदस्ती के चलते आत्महत्या कर ली। समझना मुश्किल नहीं कि उन किसानों पर आखिर क्या बीतती होगी जो खेती करने के लिए बैंकों से लोन लेने को मजबूर रहते हैं , लेकिन लागत न निकलने पर वसूली का दबाव सहन न कर पाने के चलते जान देने का विकल्प ही उनके समक्ष शेष रहता है। मेरे मामले में भी बैंक से लोन शिक्षा के लिए लिया गया था। जिसे अदा करने में समय लगना स्वाभाविक और पहले से तय था। लेकिन बैंक अधिकारी कुछ सुनने को तैयार नहीं होते। लिहाजा हजारों करोड़ के बैंक घोटाले के मद्देनजर अपने अनुभव के आधार पर दावे से कह सकता हूं कि राशि के बड़े हिस्से की बंदरबांट ऊपर से नीचे तक हुई होगी। वर्ना इतनी मोटी रकम बैंक वाले किसी को यूं ही नहीं दे सकते।

-तारकेश कुमार ओझा

माँ-बाप बुढ़ापे में बोझ क्यों ?

बेटा अपने वृद्ध पिता को रात्रि भोज के लिए अच्छे रेस्टॉरेंट में लेकर गया। खाने के दौरान वृद्ध पिता ने कई बार भोजन अपने कपड़ों पर गिराया। रेस्टॉरेंट में बैठे खाना खा रहे दूसरे लोग वृद्ध को घृणा की नजरों से देख रहे थे , लेकिन वृद्ध का बेटा शांत था।

खाने के बाद बिना किसी शर्म के बेटा, वृद्ध को वॉशरुम ले गया। उनके कपड़े साफ़ किए,उनका चेहरा साफ़ किया, उनके बालों में कंघी की,चश्मा पहनाया और फिर बाहर लाया।

सभी लोग खामोशी से उन्हें ही देख रहे थे। बेटे ने बिल दिया और वृद्ध के साथ बाहर जाने लगा।

तभी डिनर कर रहे एक अन्य वृद्ध ने बेटे को आवाज दी और उससे पूछा 'क्या तुम्हें नहीं लगता कि,यहाँ अपने पीछे तुम कुछ छोड़ कर जा रहे हो?' बेटे ने जवाब दिया -'नहीं सर, मैं कुछ भी छोड़कर नहीं जा रहा।'

वृद्ध ने कहा -'बेटे, तुम यहाँ छोड़कर जा रहे हो, प्रत्येक पुत्र के लिए एक शिक्षा(सबक)और प्रत्येक पिता के लिए उम्मीद(आशा)।'

दोस्तों, आमतौर पर हम लोग अपने बुजुर्ग माता-पिता को अपने साथ बाहर ले जाना पसंद नहीं करते,और कहते हैं- क्या करोगे,आपसे चला तो जाता नहीं। ठीक से खाया भी नहीं जाता, आप तो घर पर ही रहो,वही अच्छा होगा।'

क्या आप भूल गए, जब आप छोटे थे और आप के माता-पिता आपको अपनी गोद मे उठाकर ले जाया करते थे। आप जब ठीक से खा नहीं पाते थे तो माँ आपको अपने हाथ से खाना खिलाती थी। खाना गिर जाने पर डाँट नहीं, प्यार जताती थी। फिर वही माँ-बाप बुढ़ापे में बोझ क्यों लगने लगते हैं?

माँ-बाप भगवान का रुप होते हैं, उनकी सेवा कीजिए और प्यार दीजिए ..क्योंकि,एक दिन आप भी वृद्ध होंगे, फिर अपने बच्चों से सेवा की उम्मीद मत करना।

-प्रमोद बाफना

अभिनय मलिका

श्रीदेवी
एक अध्याय की समाप्ति

श्रीदेवी क13 अगस्त 1963 को जन्मी श्री अम्मा यंगर अयप्पन उर्फ श्रीदेवी तमिलनाडु के सिवाकाशी कस्बे में हुवा था पिता कन्नड़ ओर माता तेलगु परिवार से थी

पहली तमिल फिल्म 3 साल की उम्र में थूंनई वन थी

श्री की बतौर चाइल्ड आर्टिस्ट दूसरी फिल्म में ही अवार्ड से नवाजा गया था जो दक्षिण भारतीय फिल्म थी

?िल्म जुली 1975 में मुख्य हीरोइन के बहन का किरदार भी निभाई थी

लेकिन पहली हिंदी फिल्म बतौर मुख्य किरदार सोलवा सावन 1979 थी

हिम्मतवाला 1983 से श्रीदेवी ने खुद को स्थापित कर दिया

ओर न केवल जनता को अपने अभिनय का जलवा दिखाया वरन डांस से भी सभी का दिल जीत लिया

1984 में ?िल्म तोहफा से श्री ने सभी को अपना बनाते हुवे अभिनय शिखर पर जा पहुची

कमल हासन के साथ ?िल्म सदमा 1983 की कल्पना श्री के बिना अधूरी ही होती,

?िल्म जांबाज में श्री का किरदार छोटा था पर पूरी फिल्म उनके नाम रही

?िल्म कर्मा, नगीना

मिस्टर इंडिया, मिस्टर इंडिया,

चालबाज में दोहरी भूमिका लाजवाब निभाई

1989 में चांदनी से श्री ने अभिनय की ऐसी छटा बिखेरी की पूरे देश मे उनकी ठंडक छा गई

लम्हे, के लिए दूसरा ?िल्म फेयर अवार्ड मिला

1992 में बिग बी के साथ खुदा गवाह

1993 में पूरे देश मे ?िल्म रूप की रानी चोरो का राजा के लिए जनता से वोटिंग करवा कर श्री ने रूप की रानी का किरदार निभाया यह ?िल्म उस वक्त की सबसे महंगी ?िल्म थी

जुदाई 1997 के बाद आपने अभिनय से ब्रेक लिया

फिर कमबैक किया इंग्लिश विंग्लिश 2011 में, ?िल्म न केवल सफल रही श्री के अभिनय की धार ओर तीक्ष्ण हो चली थी

?िल्म मॉम 2017 में सौतेली माँ का किरदार ओर बदला काबिले एहतराम था,

साथ ही श्री ने मालिनी अय्यर नामक टीवी सीरियल में भी सफल काम किया था

आप को 2013 में पद्मश्री जो कि देश का चौथा सबसे ब?ा अवार्ड है से नवाजा गया

हिंदी सिनेमा में

मिस्टर इंडिया चालबाज, लम्हे, नगीना के लिए ?िल्म फेयर

ओर 2 तमिल एक तेलगु फील्म के लिए ?िल्म फेयर से नवाजा गया

श्री के अभिनय की असीमित उचाइयां देखने को मिली ?िल्म गुमराह में जिसमे विदेशी जेल में कैदी की दिल दहला देने वाला अभिनय दिखाया के दर्शकों की रूह तक कॉप गई थी,

श्री के समकालीन जितनी भी अभिनेत्रिया थी उनमे श्री निसन्देह सबसे ऊपर खुद को स्थापित किया था अपने अभिनय कौशल और नृत्य के दम पर,

कुछ फिल्में तो श्री के बिना सोची भी नही जा सकती थी

श्री भारत के बॉलीवुड इंडस्ट्री की अघोषित पहली ले?ी सुपरस्टार मानी जाती है

श्री ने न केवल तमिल, तेलगु, कन्न?, मलयालम, फिल्मो में भी अभिनय के जलवे बिखेरे थे

श्री की अभिनय की एक खास बात यह थी कि उन्होंने हर तरह के किरदारों से बखूबी इंसाफ किया

चाहे मार्डन प्रेमिका हो या घरेलू पत्नी या परिवारिक किरदार

उनके अभिनय क्षमता हर फिल्म के साथ परिपक्वता लाती जाती थी

कल रात दुबई में एक शादी समारोह में 54 वर्षीय श्री अचानक दिल का दौरा प?ने से गु?र गई

पूरे बॉलीवुड इस खबर से गमगीन है

श्री को हमारे ,,,,,, समाचार पोर्टल की तरफ से श्रद्धांजली

हिंदी फिल्मों की पहली लेडी सुपरस्टार के विदाई

-इदरीस खत्री

कविता

नारी

स्नेह की धारा है वह, है वात्सल्य की मूर्ति ,

वीरुध वही,वन वही, कालिका की वो पूर्ति ７

राष्ट्र,समाज और परिवार को वो समर्पित,

स्व पर,हित को करती प्राण भी अर्पित ７

वाणी वही,गिरिजा वही,है दामिनी भी वह,

कल्पना वो,प्रतिभा वही है,कामिनी भी वह७

किरण है वह,है सुभद्रा,है महादेवी भी वह,

सृजक है वो समाज की,समाजसेवी भी वह७

है मदर टेरेसा,ऐनी बेसेन्ट,यशोदा भी वह,

है अनैतिक समर में संघर्षरत,योद्धा भी वह७

बोझ नहीं है,अबला नहीं,न द्वितीय है वह,

वह धरा पर देवी रूप,नारी अद्वितीय वह७

जननी वही,गृहिणी वही,नंदिनी भी है वह,

भगिनी वही,सती वही,संगिनी भी है वह७

बरछी वही,कलम वही,तलवार भी है वह,

कंचन वही,चाँदी वही,अलंकार भी है वह७

शस्त्र भी वह,शास्त्र भी वह,शक्ति भी है वह,

अस्त्र है वह,आस्था भी वह,भक्ति भी है वह७

-नवीन कुमार जैन

क्या आप करना चाहते हैं हिन्दी को 'छार-छार'?

अंग्रेजों के शताब्दियों तक जर-खरीद गुलाम रहे भारत जैसे मुल्कों के बीच, वहां के मीडिया द्वारा बहुत कारगर युक्ति से यह मिथ्या-प्रचार लगातार किया जाता रहा है कि अंग्रेजी ही 'विश्वभाषा' है और उसका कोई 'विकल्प' नहीं है। लेकिन अब सबसे बड़ी विडम्बना यही होने जा रही है कि अभी तक जिस भाषा को 'निर्विकल्प' बताया और घोषित किया जाता रहा था, आज दुनिया की तीन भाषाओं के बड़ते वर्चस्व से वही बहुत घबरायी हुई है। और क्रमशः वे तीन भाषाएं हैं, स्पेनिश, मंदारिन और हिन्दी।

जहां तक स्पेनिश का सवाल है तो वह तो 'अंग्रेजी की संरचना' में शब्दावलि के स्तर पर सेंध लगा कर उसे 'स्पेंग्लिश' बनाये दे रही है। दूसरे क्रम पर चीन की 'मन्दारिन' है, जो कि बहुत जल्दी, संभवतः चार-पांच वर्षों के भीतर ही वह 'इण्टरनेट' पर छा जाने वाली है और अंग्रेजी के इस गर्व को चकनाचूर कर देगी कि वही कम्प्यूटर जगत की नियन्ता है। वहां का वैज्ञानिक, इन्टरनेट की तकनालाजी पर जो कुछ नया आता है, उसे लगे हाथ अपनी मंदारिन में विकसित कर लेता है। हाल ही में उन्होंने अश्लील सामग्री के मसले पर गूगल से झगड़ कर उसकी हेकड़ी निकाल कर पूरे विश्व को यह बता दिया कि किसी दिन 'माइक्रोसाफ्ट' ने यदि नजरें टेड़ी की तो, वह उसके साथ भी यही सलूक करेगा। हिन्दी से उन्हें इतना भर ही डर है कि यह अपनी आबादी के बल पर 'दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी बोली जाने वाली' भाषा बन रही है और इस आधार पर वह राष्ट्रसंघ की स्वीकृति प्राप्त भाषाओं की सूची में शामिल हो गयी तो धीरे-धीरे यह अपने देश में अंग्रेजी की बढ़त और बिक्री पर रोक लगा सकती है, क्योंकि भारत में अंग्रेजी सिखाने का व्यापार ही अरबों डॉलर का बैठता है। वह तो ठप्प हो ही जाएगा, लेकिन आगे हजारों वर्ष के लिए यही भाषा चलती रही तो क्या होगा? हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी खूबी यही है कि यहां जिन चीजों से 'प्राण' बचते हों, उनको ही बहुत आसानी से 'प्राणलेवा' बनाया जा सकता है। मसलन जनता के 'हितों की रक्षा' के लिए योजना बनायी जाये, वह 'जनता के हितों को छीनने' का आधार बन जाती है। हिन्दी के संदर्भ में इस सचाई को देखा जा सकता है। दरअस्ल, मैं हिन्दी को भाषा नहीं, एक 'सामासिक भाषिक परम्परा की शक्तिशाली संज्ञा' मानता हूं। मसलन, गौर से देखें तो हम पायेंगे कि हिन्दी की सारी शक्ति उसकी बोलियों में है। क्योंकि, हिन्दी ने उन्हीं अपनी बोलियों से ही समूचा सामर्थ्य और शौर्य अर्जित किया। मुझे तो वह 'दुर्गा' के उस मिथक का पर्याय लगती है, जिसे महिषासुर के मर्दन के लिए देव समाज ने रचा था, जिसमें किसी देवता ने अपना तेज दिया, किसी ने अपना बल, किसी ने अस्त्र तो किसी ने शस्त्र। 'ततः समस्त देवानाम् तेजोराशिसमुद्भवाम्'। अर्थात् सभी से तेज-बल ग्रहण कर अवतरित हुई।

इसी तरह हिन्दी ने भी अपनी तमाम विभिन्न बोलियों से तेवर और तेज अर्जित करके आजादी की लड़ाई में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरूद्ध विजय पायी। और आज वह अपनी चतुर्दिक व्याप्ति से लगभग अट्ठावन करोड़ लोगों की जबान पर है। और इसकी यही संख्या ही तो अंग्रेजी को डरा रही है। नतीजतन, इसके विरूद्ध अघोषित युद्ध शुरू कर दिया गया है कि कैसे इसका आकार छोटा किया जाये। कैसे उसकी उड़ान रोकने के लिए इसे पंख कतर दिये जायें। निस्संदेह यह काम हिन्दी भाषी लोगों ने ही अपने हाथ में ले लिया है। वे उस हिन्दी को जो कि एक बहुत समर्थ भाषा बन चुकी है, 'बोली' बनाने में लगे हैं।

भूमण्डलीकरण और 'विश्व-पूँजीवाद' के लिए भाषा सर्वोपरि है। यदि चीन महाशक्ति होने के निकट है तो सिर्फ 'मंदारिन' के जरिये, क्योंकि उसने बीसवीं शताब्दी का सारा ज्ञान-विज्ञान सिर्फ अपनी उसी 'चित्रात्मक-लिपि' में अर्जित किया, जिसमें लगभग ढाई हजार चिन्ह अक्षरों के रूप में हैं। लेकिन, 'अ आ' से सिर्फ 'क्ष त्र ज्ञ' तक वाली दुनिया की 'सर्वाधिक लिपि वाली वैज्ञानिक भाषा' को 'ज्ञान की भाषा' नहीं बनने दिया गया, परिणामतः वह न तो शिक्षा की भाषा बन सकी, ना ही रोजगार की। निश्चय ही यह अंग्रेजी की कूटनीतिक सफलता रही और अब तो वह भारत में सफलता के सारे गढ़ जीत लेगी क्योंकि हिन्दी-भाषियों ने ही संगठित हो कर हिन्दी के उस 'दुर्गा रूप' का विखण्डन तेजी से शुरू कर दिया गया है। अवधि कहेगी, हमारा तुलसीदास लौटाओ, ब्रज कहेगी, सूरदास लौटाओ, भोजपुरी कहेगी हमारा कबीर लौटाओ, राजस्थानी कहेगी हमारी मीरा लौटाओ, मैथिल कहेगी हमारा विद्यापति लौटाओ, ङ्क कुल मिलाकर, नामवर सिंह, केदारनाथ सिंह, नागार्जुन, त्रिलोचन, पर अंग्रेजी में एक पुस्तक आयेगी, 'हिन्दी राइटिंग ऑफ नॉन-हिन्दी स्पीकर्स'। क्योंकि, आज के सारे हिन्दी लेखकों के पास कोई न कोई बोली उनके जन्म और बचपन से ही है। वे जनगणना में मातृभाषा की जगह हिन्दी नहीं, इन्हीं बोलियों का नाम लिखेंगे।इन दिनों विश्व पूंजीवाद का कार्य और व्यवहार के स्तर पर चमकीला और चुस्त जुमला यह है 'थिंक ग्लोबली, एण्ड एक्ट लोकली। अर्थात् सोचना 'ग्लोबल' करो, लेकिन कार्यान्वयन के स्तर पर 'लोकल' रहो। यानी मैदान की स्थानीयता आपको क्षेत्रीयता से जोड़ रखेगी और जहां तक 'ग्लोबल थिंकिंग' का काम है तो निश्चय ही वह तुम्हें नहीं हमें ही करना है। इसके चलते, 'स्थानीय अस्मिताओं' के आंदोलन खड़े कर दिये गये। सारे हिन्दी राज्यों को इन्हीं तर्कों से तोड़ा और टुकड़ों-टुकड़ों में बांट दिया गया, लेकिन तअज्जुब कि कहीं कोई उसका विरोध नहीं हुआ। 'थिंक ग्लोबली' वालों ने बताया कि 'छोटे-छोटे राज्य आर्थिक विकास के लिए सर्वाधिक श्रेष्ठ हैं', और बस क्या था, 'एक्ट लोकली' वालों ने राज्यों को तोड़ दिया। लेकिन, जैसे ही मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ में टूटा उसकी राजभाषा 'छत्तीसगढ़ी' घोषित कर दी गयी। झारखण्ड टूटा, झारखण्डी का आंदोलन खड़ा हो गया, हरियाणा 'हरियाणवी' की मांग कर रहा है। ये सब संविधान की आठवीं सूची में शामिल किये जाने के लिए आंदोलन की राह पर जाने को तैयार है। राजस्थान, राजस्थानी की ओर ऐसे ही मालवी और निमाड़ी की मांगें शुरू होंगी। बाद में बुन्देली और बघेली की भी मांगें उठने लगेंगी। कहा जा रहा है कि जनगणना के समय अपनी मातृभाषा के स्थान पर आप अपनी वो भाषा लिखाओ, जो आपकी 'बायोलॉजिकल-मदर' बोलती है। निश्चय ही जब जनगणना के आंकड़े सामने आयेंगे तो 'हिन्दी भाषा-भाषियों' की संख्या इतनी दयनीय होगी कि उसके 'राष्ट्रसंघ' तो छोड़िये, किसी 'जिले की भाषा' बनाने का दावा भी समाप्त हो जायेगा। यही तो अंग्रेजी के भाषाई साम्राज्यवाद की मंशा और जरूरत है, जिसे पूरी करने के लिए हिन्दी क्षेत्र का बच्चा-बच्चा तैयार है। उसे बताया जा रहा है कि वह 'हिन्दी भाषी नहीं है। वह तो निमाड़ी, मालवी, राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी आदि बोलने वाला है। चर्चिल ने ठीक की कहा था, 'ये कभी स्वतंत्र नहीं रह सकते। हमारे गुलाम रहना इनकी आदत का हिस्सा बन चुका है। यदि चाहें तो कुछ समय के लिए आजाद होने का भ्रम पाल लें, लेकिन भीतर से ये पूरी तरह हमारे गुलाम हैं। और एक दिन फिर से हमसे गुलामी मांगने आयेंगे।'

कुल मिलाकर 'स्थानीय-अस्मिताओं' को 'राजनीतिक' आकांक्षा में बदले जाने का एक खतरनाक रास्ता खोला जा रहा है, वह निश्चय हमें चर्चिल की 'भविष्योक्ति' के निकट ले जाकर छोड़ने वाला है। धर्म के नाम पर हिन्दी का एक बंटवारा पहले ही हो चुका है। अब गहरे राजनीति विवेक के अभाव में लोग अपनी-अपनी 'बोलियों' को 'भाषा' घोषित करवा कर उसे संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने के आंदोलन होंगे और हिन्दी को सैकड़ों टुकड़ों में तोड़ दिया जायेगा। हम बोलियों के बहाने प्रकारान्तर से 'भाषा' और 'भूगोल' के एक महाविनाशकारी द्वन्द्व की तैयारी कर रहे हैं। आप इसके पक्ष में हैं कि इसके विरोध में, यह निर्णय आपकी 'सार्वभौमिक समझ' की शक्ति तभी तय कर पायेगी, जब सौभाग्य से आपकी आंखें 'राजनीति की रतौंध' से संक्रमित न हो पायी हों। **-प्रभु जोशी**

स्वास्थ्य के प्रति कितने जिम्मेदार हम

मानव जीवन की सबसे बड़ी और अनदेखी पूंजी यदि कोई है तो वह है-हमारा स्वास्थ्यद्य अनदेखी इसलिए कहा,क्योंकि हम जब तक हम बिस्तर न पकड़ लें या किसी रोग से गम्भीर रूप से ग्रसित न हो जाएं तब तक,कम-से-कम अपने स्वास्थ्य की चिंता तो नहीं ही करते हैं। हां,केवल अपने बच्चों की स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति हम जरूर अधिक जिम्मेदार होते हैं।

स्वास्थ्य के सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है-क्व तुम गीता का अध्ययन करने के बजाए फुटबाल के जरिए स्वर्ग के अधिक निकट रहोगेक्व्र आशय यह-अपने लक्ष्य के पीछे दौड़ो,मगर अपने स्वास्थ्य को पीछे मत छोड़ो। कितना सही कहा है स्वामी जी ने। इस संदर्भ में मुझे एक दृष्टांत याद आता है-एक व्यक्ति के मन में नगर सेठ कहलाने का भाव आया और उसने अपने इस विचार को अपना लक्ष्य बना लिया। दिन-रात अथक परिश्रम किया और वह नगर सेठ बन भी गया। उसकी वाहवाही होने लगी और वह आदरणीय हो गया,लेकिन इस अथक मेहनत के दौरान उसने अपने परिवार और स्वास्थ्य का बिलकुल भी ध्यान नहीं रखा। हुआ यह कि,असमय ही उसका शरीर शिथिल पड़ गया और कई लाइलाज बीमारियों का शिकार होकर अंततः चल बसा। उसकी सारी दौलत भी उसके काम न आ सकी।

यदि वह अपने लक्ष्य को सेहत का ध्यान रखते हुए पाता,तो क्या वह असमय काल का शिकार होता ? बस अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत होने के लिए विवेकानन्द जी का वाक्य और यह दृष्टांत ही पर्याप्त है। समय रहते संभल जाएँ। जीवन के सारे उद्देश्य पूर्ण करें,किन्तु अपने स्वास्थ्य की अनदेखी न करें,क्योंकि हमारे अस्वस्थ होने के लिए कोई और नहीं,हम ही जिम्मेदार होते हैं। समझना तो होगा ही इसे।

वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति की जिंदगी भागम-भाग और अथक मानसिक तथा शारीरिक श्रम से जूझ रही है। घर के बड़ों को यदि बेहतर परिवार संचालन के लिए अपने स्वास्थ्य को दांव पर लगाना पड़ रहा है,तो बच्चों पर भी अपने भविष्य की सुदृढ़ता का मानसिक दवाब रहता है,जो कहीं-न-कहीं स्वास्थ्य को तो प्रभावित करता ही है। कई बार छोटी-मोटी स्वास्थ्य सम्बंधी परेशानियों को हम अनदेखा कर देते हैं,जो कालांतर में हमारे लिए बड़ी मुसीबत का कारण बनती है। इनसे समय रहते बचना चाहिए।

अच्छे स्वास्थ्य के जो जरूरी नियम बताए गए हैं,आज किसी भी कारण से हम उनका पालन नहीं कर पाते हैं। जिस अनुपात में खान-पान होना चाहिए,वह भी अब नहीं हो पाता है। हमारी दिनचर्या ने इसे पूरी तरह से अव्यवस्थित कर दिया है। बिगड़ते स्वास्थ्य के अनेक कारण होते हैं,यहां मैं उनकी चर्चा नहीं,क्योंकि आज यह सब जानकारियां हमारी अंगुलियों पर मोबाईल-कम्प्यूटर ने उपलब्ध करा दी हैद्य इसके बावजूद हम पढ़कर, जानकर भी उनका पालन नहीं करते हैं,जबकि यह अत्यंत जरूरी है।

कुल मिलाकर कह सकता हूँ कि-हमारे स्वास्थ्य का ध्यान हमको समय पर ही रखना चाहिए। इसके लिए कोई और नहीं,हम ही शत-प्रतिशत जिम्मेदार हैं।

-देवेन्द्र सोनी

स्मीनू जिंदल

11 साल में खोए थे पैर, आज अपनी कंपनी की रुख्र हैं स्मीनू जिंदल- जिंदल फैमिली की स्मीनू उन दिव्यांगों के लिए आदर्श हैं जो जिंदगी अपनी तरह से जीना चाहते हैं। स्मीनू ने अपनी विकलांगता को अवसर माना और अपनी ऐसी पहचान बनाई कि आज उनकी व्हीलचेयर खुद को लाचार समझती है।आज स्मीनू जिंदल ग्रुप की कंपनी जिंदल सॉ लिमिटेड की एमडी हैं। उनका 'स्वयं' एनजीओ भी है। स्मीनू जब 11 साल की थीं, तब जयपुर के महारानी गायत्री देवी स्कूल में पढ़ती थीं। छुट्टियों में दिल्ली वापस आ रही थीं, तभी कार एक्सीडेंट हुआ और वह गंभीर स्पाइनल इंजरी की शिकार हो गई। हादसे के बाद उनके पैरों ने काम करना बंद कर दिया और व्हीलचेयर का सहारा लेना पड़ा।

स्मीनू बताती हैं, अपने रिहैबिलिटेशन के बाद जब मैं इंडिया वापस आई तो काफी कुछ बदल चुका था। मैंने मायूस होकर पिताजी से कहा था कि मैं स्कूल नहीं जाऊंगी, पर पिताजी ने जोर देकर मुझसे कहा कि तुम्हें अपने बहनों की तरह ही स्कूल जाना पड़ेगा। आज मेरे पति और बच्चों के लिए भी मेरी विकलांगता कोई मायने नहीं रखती।

स्मीनू कहती है- 'आपको आपका काम स्पेशल बनाता है न कि आपकी स्पेशल कंडीशन। मेरे जैसे जो भी लोग हैं, उन्हें यही कहूंगी- खुद की अलग पहचान बनाने के लिए अपनी कमी को आड़े न आने दें, यही कमी आगे चलकर आपकी बड़ी खासियत बन जाएगी।÷

स्मीनू का एनजीओ 'स्वयं' आज NDMC, ASI, DTC और दिल्ली शिक्षा विभाग के साथ मिलकर कई काम कर रहा है।

मैं उड़ चली.....

मैं उड़ चली इन हवाओं में,
मैं बह चली इन फिजाओं में,
कहाँ से कहाँ पहुँच गयी
बस चलती गयी
चलती गयी ....।
न ठहरी,
न सहमी,
बस बहती गयी
बहती गयी......।

पता नहीं कैसी कशिश है
इन हवाओं में ,
इन फिजाओं में ,
लगती है जो कुछ अपनी सी ....।
न कुछ समझा,
न कुछ जाना,
बस मैं उड़ चली
बस मैं बह चली.........।
मैं उड़ चली.... ..।।

- अंकिता अग्रवाल

औरत के हर महीने का दर्द

आज की सुब्ह बाकी गुजरी सुब्ह से अलग थी, सुब्ह आंख खुली तो एहसास हुआ दर्द का, पूरे शरीर में दर्द हो रहा था ! थोडी देर बाद हुआ वही जिसकी आशंका थी, अब दर्द अपनी सारी हदे तोड़ रहा था, पानी के बिना मछली जेसी हालत थी, बिस्तर पर दोनों हाथों से अपने पेट को दबाये करवटें ले रही थी ! हिम्मत इतनी भी नहीं कि उठ कर अपना कुछ काम कर सकुं !

पिछ्ले बार की ही बात है जब टेबल पर एक हाथ और पेट पर एक हाथ रखे, सिर झुकाये बैठीथी स्कूल में ! दर्द के मारे बस चीख ही नहीं निकल रही थी !चुपचाप बैठी रही, कमर में असहनीय दर्द हो रहा था ! ऐसा महसूस हो रहा था कि किसी ने कुर्सी से बान्ध दिया हो, अब उठने पे कुर्सी का वजन साथ लेकर उठना होगा !

जोर जोर से चिल्लाने का, रोने का मन कर रहा था, बहुत ही असहनीय पीडा थी, जिससे औरतें हर महीने गुजरती है! शिक्षकाये , स्कूल में उसकी हालत देखकर समझ गयी कि क्या परेशानी है, और थोडा सा हसी बोली इतनी परेशानी होती है तो आज स्कूल क्युं आयी?

साथ पडाने वाले शिक्षक, जो पुरुष हैं, आते जाते उसके ऊपर ध्यान दे रहे थे, कि इतना बोलने वाली आज इतनी चुप, चेहरे पे 12 बज रहे हैं ! उन्हें समझ तो आ गया होगा, जब भी लड़की पेट दर्द कहती लोगों का दिमाग यहीं चलता है!

तीसरे दिन जब पैड लेने गयी थी, पहले जब तक घर पे थी तो मां, पापा से मागां देती थी, लेकिन अब इस शहर में अकेली थी, अब खुद ही जरुरत की चीज खरिद्नी पड़ती है ! एक दुकान पर पैड लेने गयी थी, दुकानदार और उसके यहां काम करने वाला लड़का पैड का नाम सुनकर हस दिया, जेसे कोई शर्मनाक काम करने जा रही थी या कर दिया हो !

अब गुस्सा आ गया था ,बेशरम बनके पूछ ही लिया, क्युं भाई किस लिये हसी आ रही है?

टी.वी. पे एड देखा तो होगा ना पता भी होगा ये किसलिये उपयोग में आता है ! या कहो तो बताऊ, तुम्हारे घर की औरतें भी हर महीने इसे ही उपयोग में लाती होगी, तब भी ऐसे ही हसी आती होगी ना ! बस

इतना सुनकर दोनो ने सिर झुकाया और बोले-सौरी दीदी ! उस दिन का दिन है और आज का बहुत तमीज से बोलते हैं, वो दोनो ! मुझे समझ नहीं आता, एक पुरुष अपने ही अस्तित्व से जुडी बात पर हंस केसे सकता है ?

इस सोच पर, कैसे हैरानी ना जताऊं? कैसे समझाऊं कि आज जो खून , मैं पेड या नालियों में बहाती हूं, उसी मांस-खून से कभी, तुम लोगो को दुनिया में लाने के लिए, 'कच्चा माल' जुटाती हूं। औरत के गर्भ में बच्चे के विकास का एकमात्र साधन यही रक्त है ! मैं वही हूँ जो तुम्हारा अस्तित्व तुम्हें देती हूँ, मैं वही हूँ जिसकी बदौलत तुम दुनिया में हो !

कहते हैं तकलीफ उसे ही समझ आती है, जिसे होती है ! और ये बात बिल्कुल सही है, मर्द क्या जाने हर महीने किस हद तक दर्द झेल्ती हैं औरतें ! लेकिन शर्म के कारण चुप रह जाती हैं ! दुनिया में सारी औरतें, अपनी आधे से जायदा जिन्द्गी इसी दर्द से गुजर्ते हुए बिताती हैं !

-जयति जैन (नूतन)

लौट आया बचपन

नन्हीं पोती संग खेल मैं बच्चा बन जाती हूँ
बच्चा बन दो पल में ही जीवन में रंग भर लाती हूँ।
उसकी मासूमीयत पे मन के बंद द्वार खोल आती हूँ।
कुछ दिल की कह लेती हूँ,कुछ उसकी सुन लेती हूँ।
नन्हीं पोती संग खेल ना जाने कब मैं बच्चा बन जाती हूँ ,
स्कूल में जो पाया, बाबूल ने जो समझाया, माँ की ममता ने जो लुटाया,वही प्यार मै पाती हूँ ,
अनमोल पलों के बीच मैं न जाने कब बच्चा बन जाती हूँ।
नन्हीं पोती को देखकर मैं बच्चा बन जाती हूँ।

हँस लेती हूँ,हँसाती हू, सारे गमों को भूल जाती हूँ।
पढ़ाने उसे बैठती हूँ,कुछ उससे ही सीख जाती हूँ,
जीवन की बगिया में फूल सी खिल जाती हूँ
नन्हीं पोती को देखकर मैं बच्चा बन जाती हूँ।

मासुमियत पर उसके,मन के बंद द्वार खोल आती हूँ।
मन में ईर्ष्या है, न द्ववेष है, कपट है न बुराई है,
एक पल में रूठ जाती हैं,एक पल में मान जाती है।
नन्हीं पोती को देखकर मैं बच्चा बन जाती हूँ।

सखियों संग माँ के आँगन में गुड्डा-गुड़िया खेल आती हूँ ,बचपन कि अठखेलियों में खो जाती हूँ ,
पीहर की गलियों में घूम आती हूँ , आम की कच्ची कैरी तोड़ लाती हूँ।
नन्हीं पोती संग खेलकर न जाने कब मै बच्चा बन जाती हूँ।

-श्रीमती राजकुमारी चैकसे

इक्कीसवीं सदी की स्त्रियां

शिखा श्रीवास्तव

हम है इक्कीसवीं सदी की स्त्रियां।
आज भी डरतीं है हम
घिरते ही अंधेरा घर से निकलने में,
आज भी नहीं जुटा पातीं हिम्मत
भीड़ पर भरोसा करने की।
अपराधी महसूस करतीं है खुद को ही, जब
भीड़ में कहीं कोई निगाह करती है परेशान हमें।
सहम-सिमट जाती है खुद में ही,
जब गुजरता है कोई अजनबी स्पर्श हमसे।
हम है इक्कीसवीं सदी की स्त्रियां।
मनातीं है महिला दिवस, लगाती है चंद नारे,
मिलकर दोहरे चेहरे वाले इस समाज के साथ।
हो लेतीं है खुश अपनी इस खास उपलब्धि पर,
अगले दिन से होता है फिर लेकिन
वही ढाक के तीन पात।
वही दहेड़ के लिए जलाना,
तो कहीं गर्भ में ही अस्तित्व मिटाना।
कहीं लुटती अस्मिता हमारी,
कहीं है लगते सपनों पर पहरे।
पर नहीं है दोष इसमें सिर्फ पुरुष का,
दोषी है हम सब खुद भी।
रहकर मौन दिया आज तक जो उनका साथ,
तो कैसे पाये अपना उचित दर्जा हम आज।

स्वास्थ्य

'डेंगू' से डरें नहीं

इस बार डेंगू ने कमर तोड़ दी है, अगर जाँच कराने पर डेंगू बुखार की पुष्टि हो जाए और प्लेटलेट 40 हजार पर भी तो आ जाएं तो घबराइए मत। बस इस सलाह पर अमल करें। इस बार डेंगू का कहर है,डेंगू कैसे होता है,आदि-आदि..यह तो सबको पता है,बेहतर होगा कि मैं इस पर जागरुकता लाऊं।

डेंगू बुखार आयुर्वेद अनुसार 'दंडक ज्वर' होता है पर एलोपैथिक चिकित्सा में डेंगू बुखार से पीड्ति होने पर पेरासिटामोल से ज्वर की तीव्रता कम करने के सिवाय कुछ भी नहीं है। कुछ धनलोलुप चिकित्सक मरीज को डराकर ग्लूकोज व अन्य दवाएं आदि लगाने के नाम पर भर्ती करके पैसा जरुर ऐंठते हैं,पर आप सावधान हो जाएँ। प्लेटलेट काउंट 30000 से कम होने पर भर्ती होकर ही इलाज कराने की जरूरत होती है।

मैं यह बिल्कुल नहीं कहूंगा कि, आप चिकित्सक को न दिखाएँ,पर देखा जाए तो डेंगू महामारी में चिकित्सक के पास आपको तवज्जो देने का समय है कहाँ?

ऐसे में आप अपने लिए और बेहतर ये कर सकते हैं।

सकम-से-कम चार बार मूंग की दाल का सूप 100 मिली.बनवाकर इसमें बराबर मात्रा में ताजा निकाला हुआ अनार का रस,आधा चम्मच गाय का घी,थोड़ी-सी काली मिर्च,भुना जीरा व सेंधा नमक,5 दाने बीज रहित मुनक्का मिलाकर चम्मच से पीएँ। इसको 'रागषाव' कहते हैं।

'किवी' फल खाएं,नारियल पानी पीएँ, पर ध्यान रखें डेंगू बुखार में अधिकतर चिकित्सकों द्वारा फ्रूटी या रस आदि पीने की हिदायत दी जाती है,इसे पीने से परहेज रखें। दरअसल प्रिजर्वेटिव व अनेक रसायन पड़े होने के कारण यह शरीर में यह दर्द बढ़ाता है। इसके अलावा इस प्रकार के ज्वरों के लिए शास्त्रों में द्य-'स्वरस्य गुरुत्वाच्च' लिखा है। यानी कि किसी भी फल का निकला रस ज्वर के समय पचने में भारी होता है (वातकारक होने के कारण),अतः उसकी यथावत स्थिति में नहीं देना चाहिए।

-दिन में तीन बार महाज्वराँकुश रस (केवल बैद्यनाथ की लें) की दो दो गोली 4-4 चम्मच महासुदर्शन क्राथ(सांडू आदि कं. का)के साथ बराबर पानी मिलाकर लें। इसी के साथ 1-1 कैप्सूल कैराईका पपैया निष्कर्ष (पपीते के पत्ते के सत्व का कैप्सूल)है,उपयोग किया जाए।

-आपकी क्षमता हो तो इन दवाओं के साथ 1-1 गोली जयमंगल रस की पीसकर एक चम्मच गुलकंद में मिलाकर चटाएं,इससे बहुत तेज आराम होता है।

-ज्वर यदि 103ए से ऊपर आता है तो,रोगी के कपड़े उतरवाकर शरीर 15 मिनट के लिए गीली चादर में लपेट दें,व माथे पर पानी की धार डालते रहें। 15 मिनट में ज्वर नीचे आ जाएगा।

यह सब मैंने ऐसे बहुत सारे डेंगू पीड़ित रोगियों के उपचार के आधार पर लिखा है,इसलिए स्थिति समझकर अपने विवेक से निर्णय लें।

-डॉ. निशान्त गुप्ता आयुष

'योग का असर'

'जो हुआ उसमें भगवान की मर्जी थी। हर व्यक्ति जो आया है,जाएगा,जितने दिन का साथ था सो साथ रहा।'

आंटी के मुख से ऐसे शब्दों को सुन मन प्रफुल्लित हो गया। अभी तीन साल पहले ही हम मिले थे। मैं उन्हें योगा सिखाती थी। 65 वर्षीय आंटी शांत और सक्रिय अपनी एक किडनी अपनी दूसरी बेटी को दे चुकी थी, जिसकी दोनों ही किडनी खराब थी। अभी पिछले वर्ष तक अपने बेटे से दुखी थी। उसकी शादी के आठ वर्ष हो चुके थे,पर भगवान ने उन्हें नौ

वर्ष बाद एक पोता देकर दादी बना दिया। तीन वर्ष में मैंने उनके घर के उतार-चढ़ाव देखे थे। आज उनसे मिलने इसलिए गई थी कि उनकी बेटी(जिसे उन्होंने किडनी दी) का देहान्त हो चुका था। अचानक आंटी भी किसी महिला रोग का ऑपरेशन करवाकर आई थी, पर आज जब उनसे मिली तो वही मासूम चेहरा मिला,जो हर हाल में सकारात्मकता से भरपूर रहता है। अचानक उनके शब्दों को सुनकर मेरे मुंह से निकला 'यही तो है योग का असर, जो हर हाल में सकारात्मकता देता है।'

-प्रेरणा संेद्रे

हिन्दी में हो न्यायिक कामकाज

निज भाषा में न्याय की,फिर से जगी है आस ।
इस बार मिलेगी अवश्य सफलता, मन में है विश्वास।।

उच्च न्यायालयों में हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के उपयोग संबंधी संसदीय समिति के सुझावों पर शीघ्रता से अमल हेतु प्रधानमंत्री को पत्र लिखा गया हैद्य19-20 फरवरी 2017 को देश के प्रमुख समाचार-पत्रों में छपे समाचार अनुसार कार्मिक, लोक शिकायत,विधि और न्याय संबंधी मामलों की संसदीय समिति ने सभी 24 उच्च न्यायालयों में न्यायिक कामकाज हिन्दी एवं संबंधित राज्य की राजभाषा में किए जाने की सिफारिश की है। उक्त समिति द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट में यह कहा गया है कि,इस विषय पर संविधान के अनुच्छेद 348 (2) में स्पष्ट प्रावधान है कि,संबंधित राज्य के राज्यपाल द्वारा राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से हिन्दी/राज्य की राजभाषा मेंकारवाई किए जाने की अनुमति दी जा सकती हैद्य इस हेतु न्यायालय से विचार-विमर्श करने की आवश्यकतानहीं है। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव अतुल कोठारी ने संसदीय समिति के उक्त सुझावों पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी,गृहमंत्री राजनाथ सिंह तथा विधि और न्याय मंत्री रविशंकर प्रसाद को पत्र लिखकर अनुरोध किया है कि,भारत सरकार इस पर अतिशीघ्र कारवाई करे। प्रधानमंत्री महोदय को भेजे गए पत्र के साथ समाचार पत्रों की प्रतियाँ,संसदीय समिति की रिपोर्ट तथा कर्नाटक राज्य के कैबिनेट द्वारा पारित पत्र की प्रतियाँ भी संलग्न की गई हैं। **-प्रधानमंत्री को लिखा पत्र**

वैवाहिक जीवन में बिखराव से बचें

विवाह इस मानव जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकता है और एक सामाजिक दायित्व भी है। यह प्रेम अनुबंध दो मनुष्यों यानि पुरुष एवं स्त्री के परस्पर सहयोग और सहभागिता से आजीवन निभाया जाता है। सफल एवं सुखी वैवाहिक जीवन के कुछ नियम और शर्तें होती हैं,जिनका पालन दोनों के लिए अनिवार्य है।

प्रेम का यह अनूठा संगम, समर्पण और विश्वास की नींव पर ही टिका रहता है।

माना कि इतना आसान नहीं होता कि एक परिवेश में पालन-पोषण होने के बाद एकदम नए,अनजाने परिवेश में स्वयं को समाहित करना,किंतु यदि मानसिक क्षमताएं विकसित हैं तो बहुत कठिन भी नहीं है।

ऐसा भी नहीं है कि,पहले जब संयुक्त परिवार में सब रहते थे तो वैचारिक मतभेद और वैमनस्यता नहीं थी,लेकिन वो सारे मतभेद परिवार में ही सुलझा लिए जाते थे। हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी को अच्छे से समझता था। परिवार की मान-मर्यादा सर्वोपरि मानी जाती थी।

त्याग,तपस्या,सहयोग,तृप्ति,परंपराओं का पालन,जहां है,वह घर स्वर्ग है। आज विवाह शारीरिक और भावनात्मक आवश्यकता नहीं रही है,इसका सामाजिक रूप भी विकृत हो गया है। 'लिव इन रिलेशनशिप' ने इस संबंध पर और प्रहार किया है। आज के युवा जिम्मेदारी और बंधनों से मुक्त रहना चाहते हैं। शिक्षा प्राप्त करके घर से दूर भौतिकता में लिप्त हो गए हैं। परिवार में रहना उन्हें घुट-घुट के रहना लगता है। सेवा,समर्पण और सहानुभूति उनके हृदय में नहीं रह गई है।

माता-पिता के साथ छोटी जगह पर जीवन बिताने वाले को,मित्र ही पिछड़ा या जिंदगी की दौड़ में हारा हुआ मानते हैं।

अब समस्या यह है कि, वैवाहिक जीवन अल्प समय में ही टूटने लगे हैं। बिखराव का दंश झेलते तो दोनों ही हैं,लेकिन बुरा प्रभाव सिर्फ बच्चों पर पड़ता है। एकाकी अभिभावक बच्चों को पूरे संस्कार नहीं दे पाते हैं।

बिखराव के दौरान दोनों ही सहानुभूति खोजते हैं और जहां भी वह मिलती है, वहीं झुकाव बढ़ जाता है। कई बार तो उनके साथ जान-बूझकर खेल खेला जाता है और कमजोर पक्ष का इस्तेमाल कोई तीसरा ही कर लेता है।

खैर,कभी भी जब विवाह की जिम्मेदारी आती है,तो सबसे पहले पारिवारिक पृष्ठभूमि का कठोर जायजा ले लेना चाहिए। लड़की या लड़के,दोनों को ही पसंद करने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए।

बचपन से ही बच्चों को प्रेम,समर्पण, त्याग तथा सहयोग की भावना सिखाना चाहिए। बिखराव की सोच को बदलने की कोशिश करनी चाहिए। दोनों पक्षों को वार्तालाप करके ही समझाना चाहिए। इसका कारण यदि दहेज है,तो बिल्कुल भी भरोसा नहीं करना चाहिए। वो व्यक्ति कभी भी संतुष्ट नहीं होगा। ऐसे बर्ताव से तो अलगाव ही बेहतर है।

वैवाहिक जीवन में यदि अवैध संबंध कारण बन रहे हैं और बातचीत से भी नहीं सुलझे,तो अलगाव ही बेहतर है।मारा-पीटी भी सहनीय नहीं है। बड़ों की बात मानकर,मनमुटाव खत्म हों तो ठीक है,वरना आत्मसम्मान और आत्मविश्वास के साथ आत्मनिर्भर हो जाएं। यह सारी बातें लड़की के लिए ही कही हैं,पर

इसके विपरीत आज लड़के भी दबाव का शिकार हो रहे हैं। मेरा पक्ष निश्चित रूप से अलग होने के लिए नहीं है,बल्कि मेरा मानना है कि दिल जुड़े रहें,मन मिले रहें। जीवनसाथी के साथ अंतिम सांस तक निभाया जाए और मन,कर्म और वचन से आजीवन प्रेम से रहें।

-पिंकी परुथी 'अनामिका'

कैलाश सिंघल राष्ट्रीय सचिव नियुक्त

धार 7 हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए कार्यरत संस्था %मातृभाषा उन्नयन संस्थान% के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अर्पण जैन %अविचल% की अनुशंसा पर राष्ट्रीय महासचिव डॉ. प्रीति सुराना ने मध्यप्रदेश के धार जिले के धामनोद निवासी कैलाश बिहारी सिंघल को राष्ट्रीय सचिव नियुक्त किया है7

श्री कैलाश बिहारी सिंघल विगत कई वर्षो से साहित्य साधना में रत है, हिन्दी काव्य की गहरी समझ रखने वाले सिंघल %काव्य प्रेमियों की महफ़िल% समूह का भी संचालन करते है, जिसमे लगातार कविसम्मेलन व काव्य गोष्ठियों का आयोजन होता है 7 वर्तमान में सिंघल हिन्दी प्रचार हेतु समग्र राष्ट्र में हिन्दी प्रचार करेंगे साथ ही मध्यप्रदेश प्रांत प्रभारी होने के नाते प्रदेशभर में %हस्ताक्षर बदलो अभियान% का संचालन करेंगे 7 मातृभाषा उन्नयन संस्थान देशभर में हिन्दी में हस्ताक्षर करने की प्रेरणा देते हुए जनता से %हस्ताक्षर बदलो अभियान% से जोड़ रही हैं जिसमे अभी तक लगभग 1 लाख से अधिक लोगों ने प्रतिज्ञा पत्र भर कर हिन्दी में हस्ताक्षर करने की प्रतिज्ञा ली हैं 7 संस्थान हिन्दी को रोज़गारमूलक भाषा बनाने के दायित्व के साथ-साथ भारत के समस्त भाषाओं का हिन्दी भाषा के साथ समन्वय स्थापित करने की दिशा में भी कार्यरत हैं 7 सिंघल की नियुक्ति की जानकारी संस्थान के संवादसेतु रोहित त्रिवेदी ने दी 7

सर्पदंश

अस्पताल जाएं, जान बचाएं

सर्पदंश को तात्कालिक समस्या मानना बेईमानी है,यह दीर्घकालिक भीषण आपदा है। चपेट में आए दिन सैकड़ों लोग असमय काल के गाल में समा जाते हैं। खासतौर पर बारिश और खेती-किसानी के समय सर्पदंश की अप्रिय घटनाएं ज्यादा बड़ती है। ऐसे मौसम में एहतियात बरतने की खासी जरूरत है। वीभत्स,सर्पदंश से ज्यादातर मौतें लापरवाही और दहशत की वजह से होती है। उनमें पीड़ित को अस्पताल ले जाने में देरी,यदि समय पर पहुंच भी जाए,तो वहां दवाई है पर चिकित्सक नहीं,जहां चिकित्सक है,पर दवाई नहीं,कहीं-कहीं तो दोनों नहीं है,से भी तकलीफ हो जाती है। अह्लादित! इस युग में ग्रामीण स्वास्थ केन्द्रों में सर्पदंश के ईलाज की सुविधा और प्रशिक्षित अमले की गैरमौजूदगी ना-फरमानी है। बावजूद जनमानस को इस संक्रमण से सुरक्षित बचाने के निहितार्थ जागरूकता अभियान अदृश्य है। बेरूखी के आलम में अनाप-शनाप गंदगी,तंत्र-मंत्र,झाड़-फूंक और दकियानूसी विचारों से हालात नासूर हो जाते हैं। ऐसे में निहत्थे बैठे रहने से सर्पदंश वश में नहीं आएगाद्य कमोबेश कारगर उपाय करते हुए हर हाल में अस्पतालों को मजबूत और महकमे,सर्प मित्रों को मुस्तैद करना होगा। पर्यन्त ही विषपान से परलोक गमन थमेगा।

भयावह यह है कि,जानकारी के अभाव में सर्पदंश के शिकार दीगर किसी ईलाज के ही दम तोड़ देते हैं। बेचैनी और अफरा-तफरी के माहौल में सांप जहरीला है या नहीं,जाने बिना ही डर से प्राण-पखेरू उड़ जाते हैंद्य शायद! डर के मारे दिल का दौरा पड़ जाता होगा। व्यथा जहरीले और गैर जहरीले सर्पदंश की पहचान करना आम आदमी के बूते की बात नहीं है। बतौर विशेषज्ञों के मुताबिक शरीर पर प्रभावी विषैले सर्पदंश से उभरने वाले सामान्य लक्षणों में सर्पदंश के स्थान पर घाव,त्वचा का रंग लाल हो जाना,सूजन तथा तीव्र दर्द का अनुभव होना आदि है। सांस लेने में कठिनाई,दृष्टि क्षमता में कमी या धुंधलापन सहित उल्टी,मुंह से लार और शरीर से अत्यधिक पसीने का निकलना,हाथ-पैरों में झनझनाहट तथा सुन्न होना,प्यास,कमर दर्द,निम्न रक्तचाप के साथ-साथ लालिमा या गहरे भूरे रंग का मूत्र त्यागादि जहरीले दंश की निशानदेही है।

बकौल,पूरे विश्व में ही अनेक दंत कथाओं और पारंपरिक मान्यताओं के चलते सांपों को काफी जहरीला और प्राणघातक जीव माना जाता है,जबकि बहुत कम लोगों को मालूम है कि,सारे सांप जहरीले व हारिकारक नहीं होते हैं। भारत में लगभग पांच-छह सौ किस्म के सांप मिलते हैं, जिनमें बहुत कम सांप ही जहरीले होते हैं। विश्व में मात्र चार प्रकार के सांप ही जहरीले होते हैं। इसमें एलापिड्स-कोबरा, किंग कोबरा,करैत, कालामांबा सहित वैपरिड्स-वाइपर, सॉस्केल्ड वाईपर,रसेल वाईपर,पिट वाईपर के साथ ही कोलुब्रिड्स-किंग स्नेक,बुलस्नेक और हाइड्रोफाईडी-समुद्री सांप है। इसी तरह भारत में मुख्यतः करैत,रसेल,वाइपर और सॉस्केल्ड वाइपर,कोबरा जैसे जहरीले सांप हैं।

दुर्भाग्यवश देश में सर्पदंश आज भी कब्रगाह बनी हुई है। आंकड़ों के लिहाज से विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दुनिया में भारत ही एकमेव ऐसा देश है,जहां सर्पदंश से सर्वाधिक मौतें होती हैं। यहां प्रतिवर्ष 2.5 लाख से अधिक सर्पदंश की घटनाओं में 50 हजार लोग बेमौत मर जाते हैं। गैर मामलों का कोई अता-पता नहीं। मद्देनजर चिकित्सकों की मानें तो,अंधविश्वास,सर्प मंत्र,झाड़-फूंक,चूसने तथा जड़ी-बूटियों से सांप का जहर नहीं निकलता,क्योंकि सर्प का विष सीधे खून की मार्इत हृदय और मष्तिष्क पर प्रभाव डालता है,इसलिए सर्पदंश का प्राथमिक उपचार अविलंब करना जरूरी है। हां,हो सके तो दंशस्थान के कुछ ऊपर और नीचे रस्सी या कपड़े से बांध देना चाहिए, ताकि जहर सारे शरीर में न फैल सके। इसके पश्चात बिना रुके अस्पताल जाएं और एंटी स्नेक वीनम लगवाकर जान बचाएं। सनद रहे कि,सर्प भी इस पारिस्थितिकी के अभिन्न अंग हैं, यथा इन्हें बेवजह परेशान कर आफत न मोल लें। बजाय जन-चेतना,सुरक्षा,सावधानी और उचित ईलाज से मर्ज को जड़मूल करने में सहयोगी बनें,इसमें हम सबकी भलाई निहित है।

-हेमेन्द्र क्षीरसागर

माँ

किन शब्दों में बयान करूँ मैं माँ को ? मेरे अस्तित्व का आधार,या मेरी श्वांसों में रची-बसी प्राणसुधा। मेरे व्यक्तित्व को रोशन करती लौ, या मेरे वजूद का बुनियादी ढाँचा। मेरी रुह में सम्मिलित रुहानियत,या मेरे संस्कारों की खुशबूज़माँ को शब्दों में समेट पाना ,ईश्वर को परिभाषित करने जैसा है। अपनी यादों की गहराई में जब भी झाँकती हूँ वह निर्मल-सी मुस्कान और वो बेहद मासूम-सा चेहरा निगाहों में तैर जाता है। करीने से पहनी हुई कॉटन की कलफ लगी साड़ी,पूर्णतः सँवरी हुई माँ,सुबह से ही पूरे घर को ऊर्जा से भर दिया करती थीं। मैंनें माँ को कभी बेकार बैठे,व्यर्थ का प्रपंच करते या अव्यवस्थित नहीं देखा।

चूंकि वह महज एक गृहिणी ही नहीं,कामकाजी महिला थीं,अपने सभी काम यथासमय निपटाकर ,सभी जिम्मेदारी निर्वाह कर, हम बच्चों को भी बड़े लाड़-प्यार से पालतीं थीं। बेहद खूबसूरत तो वो थीं ही,बहुत गुणी भी थीं। पाक कला,चित्र कला, मूर्ति कला,क्राफ्ट और न जाने क्या-क्याज़सब कुछ तो प्रवीणता से जानती थीं।

दुनिया के समस्त प्रपंचों से दूर माँ ने हमें सदा स्वावलंबी बनाया। न बुराई करना पसंद था,न करने देती थींज़दुनिया से थोड़ी अलहदा परवरिश दी हमेंज़ हम तीनों की शादियों के बाद माँ काफी बीमार रहीं । सन 2010 में अचानक पापा के चले जाने के बाद माँ तो जैसे टूट ही गई। अपनी लम्बी बीमारी से लड़ते-लड़ते माँ हार गई। शिकायत कभी की नहीं उन्होंने किसी से। पापा की तेरहवीं के बाद जब उन्हें छोड़कर मैं लौट रही थी तो कलेजा फटा जा रहा था, पर माँ ने कहा-'जाओ और अपने कर्तव्यों का निर्वाह करो ,हम अच्छे से रहेंगे'.. न जाने इतना संबल कहाँ से ले आती थीं।

जीवन के अंतिम दिनों में साँसों को थामें माँ इंतज़ार कर रहीं थीं मेरा। अस्पताल में दाखिले की खबर जैसे ही मुझे मिली, मैं इंदौर से जबलपुर तक का वो अनंत सफर तय कर के माँ के पास पहुंची। मुझे देखकर माँ का चेहरा खिल उठा,आँखें चौड़ी कर माँ ने जी भर के मुझे देखा और मेरा हाथ थामे सो गई..रात को जब मैंने माँ को देखा तो एक संतोष था उनके चेहरे पर।

31 दिसंबर 2014 साल का वह अंतिम दिन हमारे लिए भी उस स्वर्णिम युग का अंत साबित हुआज्माँ चली गईज़.यदि हो सके तो लौट आओ माँ,तेरी गोदी में सिर रख चैन की नींद सो जाने को,तुझे फिर से माँ कह पाने को करती रहती हूँज़इंतज़ार..।।।।

-प्रियंका बाजपेयी

दोषी कौन

हम मानसिक रूप से आज भी गुलाम हैं और इस गुलामी को बनाए रखने में हमारी असफल शिक्षा व्यवस्था की भूमिका अहम है। वास्तविक रूप से शिक्षित हुए बिना ही महाविद्यालयों -विश्वविद्यालयों से उपाधियां मिल जाती हैं और येन-केन प्रकारेण उच्च पद या उच्च सफलता को हथियाने में सफलता भी मिल जाती है। कम पढ़े-लिखे,असफल या संघर्षमय दौड़ में शामिल न हो सकने वाले लोग तथाकथित सफल एवं उच्च पदस्थ लोगों को अपना आदर्श मान लेते हैं।

आइए, जरा विचार करें-किसी आशाराम, रामपाल या राम-रहीम के पास भक्तों की अग्रिम पंक्ति में कौन होते हैं ? नि- संदेह हमारा इशारा कुछ डीएम,एसपी, न्यायाधीश,वैज्ञानिक,अभियंत्री, चिकित्सक,प्राध्यापक,पूँजीपति एवं राजनेताओं की ओर होगा। बेचारी जनता जब बाबा के पास ऐसे महाभक्तों को देखती है,तो खुद सोचना छोड़ देती है और आँख बंद करके पीछे लग जाती है क्योंकि अग्रिम पंक्ति की तथाकथित महान हस्तियों की अंधभक्ति उसके विवेक पर भारी पड़ती है। फलस्वरूप भीड़ बढ़ने लगती है और बाबा के आशीर्वाद की रोचक व चमत्कारी कथाएँ जंगल की आग की तरह फैलने लगती हैं।

फिर तो भक्तों की जमात देखकर बाबा भी खुद को जगद्नियंता समझने लगते हैं। उनकी वाणी ईश्वर इच्छा-सी हो जाती है। उनके भक्त,बाबा की आलोचना या मूल्यांकन पर मारने-मरने के लिए तत्पर हो जाते हैंज्ञ कालान्तर में भक्ति परिवर्तित होते हुए शक्ति बन जाती है।पापलीला का अभ्युदय,व्यापार की तरक्की और शक्ति प्रदर्शन शुरु हो जाते हैं।

आए दिन कुकुरमुत्तों की भाँति नये नये बाबाओं के काले कारनामे उजागर होकर नरसंहार होना,महिलाओं की आबरू भंग होना और फिर सलाखों के पीछे पहुँचना आम बात हो गई है। दोगले जनसंचार माध्यम जो पहले बाबाओं के छींकने को भी दिखा रहे होते हैं,बाद में साँप से भी तेज केंचुली बदल लेते हैं। ऐसे ही शासन -प्रशासन के नुमाइंदे भी हाथ बचा लेते हैं।

हम कहाँ से कहाँ पहुँच गए, बाबाओं के साथ। किसी अपराधी बाबा को सजा हो जाती हैज्..वो जेल में रहने लगता है और हम इतिश्री कर लेते हैं। फिर नये बाबा पैदा हो जाते हैं।

आखिर क्यों होता है ऐसा? नये-नये बाबाओं की आपराधिक पापलीला क्यों नहीं रुकती? सबका अंत एक जैसा ही क्यों होता है ? आइए विचार करें-

इसके पीछे वही अग्रिम पंक्ति के भक्त हैं।अगर हम गम्भीर हैं इस मसले को लेकर और रोकना चाहते हैं धर्म के नाम पर पापाचार को, तो हमें अग्रिम पंक्ति के भक्तों के खिलाफ कठोर कारवाई करनी होगी। उनके प्रमाण-पत्र को रद्द करना होगा, उनके पंजीयन को अवैध ठहराना होगा। ऐसी संचार माध्यमों को बाबाओं के साथ जेल में सहचर बनाना होगा तथा राजनेताओं को सत्ताच्युत करके चुनाव से प्रतिबंधित करना होगा ज्ज। सही मायने में तभी ऐसे बाबाओं का अभ्युदय रुक सकेगा।

-अवधेश कुमार 'अवध'

गौरेया का संरक्षण ज़रुरी

एक पहल करनी होगी गौरेया को बचाने के लिए,क्योंकि गौरेया कम देखने को मिलती है। यह आए दिन विलुप्त होती जा रही है। सर्वप्रथम हमें बाग-बगीचों को बढ़ाना होगा,पीपल,आम और बरगद के पेड़ लगाने होंगे तथा विलुप्त हो रही इस पक्षी की नस्ल को बचाने के लिए एकसाथ कार्य करना होगा।

यह मत सोचो कि सब करेंगे,तब हम करेंगे। आप करते रहिए,क्योंकि सत्य के पीछे काफिला होता है। चिड़ियाघरों में भी आजकल चिड़िया की चहचहाहट गुम हो रही है,इसे बचाना होगा। गर्मी के दिनों में घर के छत के ऊपर पानी और अन्न रखें,जिससे चिड़िया को भूख-प्यास नहीं रहेगी और विलुप्त होने से भी बचेगी। आजादी सभी के लिए है,आजाद रहना सभी को अच्छा लगता है,इसलिए चिड़िया को कैद करके घर में न रखें।

बहुत सारे अभ्यारणों में आए दिन पक्षियों की कमी हो रही है,इसलिए एकजुटता से पर्यावरण को बचाना होगा। समाचारों और जागरूकता के माध्यम से सभी को दिशा-निर्देश देने होंगे कि,पक्षी को मारे नहीं,उसे जीने दें,क्योंकि आजादी सभी का हक है।

'मुक्त आसमान में उड़ान बाकी है,
हवा के साथ उनका पैगाम बाकी है।
उन्हें शांति से आजाद रहने दो,
उनके नाम भी आजादी का पैगाम है।'

अगर आप पर्यावरण के साथ खिलवाड़ करते हैं, तो वह दिन दूर नहीं,जब आपके साथ खिलवाड़ होगा और वक्त का पहिया धीमा पड़ जाएगा,तब विनाश निश्चित हो जाएगा। छोटी-सी बात है-एक दिन पिंजरे में बंद चिड़िया से पूछा-कैसा लगता है ?

चिड़िया बेबस होकर बोली-दम घुटता है बेजुबान हूं,इसलिए मेरा फायदा उठा रहे हैं। काश ये पिंजरे नहीं बने होते तो,मैं भी मुक्त आकाश में उड़ पाती। मेरी चोंच सूज गई है पिंजरे को काट-काटकर,पर आजाद नहीं हूं।आखिर अब मुझे यहीं बंधुआ रहना है।

चिड़ियों की दशा की तरह आज हमारे समाज में बाल मजदूरी भी बड़ा नासूर है,जो देश की सबसे बड़ी समस्या है। गौरेया और बच्चों को बचाने के लिए बहुत काम करने की जरूरत है।**-अमित चन्द्रवंशी 'सुपा'**

बगुला भगत

-आशुतोष राणा

एक पक्षी होता है जिसे बुंदेलखंड में 'किलकिला' कहा जाता है। किलकिला सदैव नदी की धार के ऊपर बीच में उड़ता है। वो उड़ते हुए ही नदी में रहने वाली मछलियों को देख लेता है, ये मछलियाँ उसका भोजन होती हैं। उसे जब भी भूख लगती है, वह तीर के जैसा छूटता है और पानी के अंदर बहने वाली मछली को कुशल धनुर्धर की भाँति भेद के अपनी चोंच में पकड़ कर वापस हवा में उड़ते हुए ही उसे खाता रहता है।

किलकिला का यह करतब नदी के किनारे रहने वाला एक 'बगुला' देख रहा था। उसका भोजन भी मछलियाँ ही थीं, किंतु मछलियाँ किनारे पर कम ही मिलती थी,इसलिए उसे अपनी उदरपूर्ति के लिए बहुत मशक़्क़त करनी पड़ती थी।

बगुला, किलकिला की कला देख चकित हो गया और बुंदेलखंडी में बोल उठा.. वाह ..

'भइँ तुक्क, भइँ तान।
भइँ भोजन, भइँ स्नान॥'

अर्थात वहीं उसके जीवन की कला है,वहीं सैर-सपाटा है, वहीं उसकी राग रागनी है, वहीं भोजन भी मिल जाते हैं, और वहीं स्नान भी हो जाता है। यही जीवन की सम्पूर्णता है जिसमें किलकिला को कुछ पाने के लिए कुछ भी खोने की ज़रूरत नहीं। तो क्यों न मैं भी वही करुं जो किलकिला करता है, क्योंकि हम दोनों का भोजन भी एक ही है तो क्षमता भी एक ही होगी।

यह सोच के बगुला फुर्र से उड़ के नदी की धार के बीच में पहुँच गया, धार की गहराई देख थोड़ा डरा। उसने सोचा कि पहली बार है,कहीं आनंद के चक्कर में डूब न जाऊँ, तो क्यों न पहले किनारे पर ही हवा में उड़ते हुए छलांग मार के मछली पकड़ने का अभ्यास कर लिया जाए ?

विचार नीतिपूर्ण था,सो बगुला किनारे पर पहुँच कर उड़ने लगा क्योंकि उसके गुरु ने सिखाया था कि, किसी भी कार्य की सफलता के लिए अभ्यास आवश्यक होता है। मन में अभ्यास की अनिवार्यता के प्रति आस्था को धारण करते हुए उड़ ही रहा था कि, उसे अचानक किनारे के उथले जल में कुछ मछलियाँ तैरती हुई दिखाई दीं, जिनमें से एक को उसने अपना लक्ष्य बना लिया और ध्यानपूर्वक किलकिला का किया गया अवलोकन स्मरण किया। किलकिला के जैसा ही उसने अपने शरीर को साधा और बिलकुल उसी के अन्दाज़ में मछली पर टूट पड़ा, उसका निशाना अचूक लगा था। मछली उसके मुँह में थी वह सफल हो गया था..किंतु यह क्या ? उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, उसे साँस लेने में दिक़्क़त हो रही थी, अचानक उसे महसूस हुआ कि, उसका सिर नदी के किनारे के कीचड़ में धँस चुका है। बगुला घबरा गया,उसके प्राणों पर संकट था।अपनी जान बचाने के लिए उसने कीचड़ से सिर को निकालने के लिए झटका दिया,जिससे उसका सिर बाहर निकलने की जगह और भीतर धँसने लगा,उसका धड़ फड़फड़ाने लगा,वह इधर उधर कुलाटें मारने लगा।

बगुले का पूरा खेल नदी के किनारे बैठे एक संत जी देख रहे थे। वे बगुले के मन की बात समझ रहे थे बगुला-,किलकिला होना चाहता था, इस चक्कर में बेचारा किलक़िला तो बन नहीं पाया और अपने प्राण भी गवाँ दिए।

संत जी ने मरणासन्न बगुले को बाहर निकाला और उसे अंतिम उपदेश बुंदेलखंडी भाषा में दिए(चूँकि बगुला बुंदेलखंडी था)। बोले-'हे बगुला..

ते जामे जाने नहीं,
(जो जिस विषय में जानता न हो)
और ते तामे जाए।
(और यदि उस विषय में-क्षेत्र में जाता है)
मुंड कपे में घुस गई,
(तो उसका सिर,बुद्धि,विवेक कीचड़ में फँस जाएगा)
तो रूंड कुलांटे खाए॥'
(परिणामस्वरूप उसका धड़ धरती पर फड़फड़ाता रहेगा।)

इसलिए, हे मित्र किसी और के जैसा नहीं, स्वयं के जैसा बनना ही कल्याणकारी होता है। अपने हिस्से के दुःख किसी दूसरे के दूर से दिखाई देने वाले सुखों से कहीं बहुत अधिक आनंददायक होते हैं।

-आशुतोष राणा

और संस्कृत की तरह हिन्दी भी एक दिन मृत घोषित हो जाएगी

कमोबेश यह स्थिति भारत की सभी भाषाओं की है। यदि हम अपनी भाषाएं ही न बचा पाए तो,भारतीय धर्म-संस्कृति,ज्ञान-विज्ञान,बौद्धिक-संपदा व आध्यात्म ही नहीं,भारतीयता को बचाना भी असंभव है। जब हम भारत की भाषाओं और भारतीयता से दूर होंगे तो,आने वाली पीढ़ियों में भारत के प्रति प्रेम यानी राष्ट्रप्रेम कैसे बचेगा? इसीलिए,पाश्चात्य विद्वान थॉमस डेविड ने कहा था-'राष्ट की रक्षा से भी अधिक जरूरी है,राष्टभाषा की रक्षा।क्इसका अभिप्राय यह है कि,राष्ट की भाषाएं ही किसी देश की संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक लेकर जाती हैं,और संस्कृति ही किसी राष्ट को बांधने का मूल तत्व है। जब हमारी भाषाएं ही न बचेंगी तो, संस्कृति कैसे बच सकती है? और जब राष्ट को बांधने वाला मूल तत्व ही न होगा तो राष्ट कब तक और किस हद तक एक तथा सुरक्षित रह सकेगा? जब राष्ट ही न होगा तो,हम रक्षा किसकी करेंगे?

जो कई देशों और कुछ पुराने गुलाम देशों को छोड़कर विश्व के सभी छोटे-बड़े देश अपनी भाषा में पढ़ते हैं,काम करते हैं और आगे बढ़ते हैं।

यह भी ध्यान देने की बात है कि,दुनिया के बीस सबसे गरीब व पिछड़े देश वे हैं,जो पराई भाषा(उनकी भाषा जिनके वे गुलाम थे) में पढ़ते व काम करते हैं।और दुनिया के बीस सबसे अमीर व सम्पन्न देश वे हैं,जो अपने देश की भाषा में पढ़ते व काम करते हैं।

-डॉ. एम.एल. गुप्ता 'आदित्य'

पाप करने के लिए पुण्य का चश्मा

एक बार संत हुसैन का ध्यान कुत्ते की तरफ आकृष्ट करते हुए किसी नास्तिक व्यक्ति ने पूछा-'आप दोनों में श्रेष्ठ कौन है? आप अच्छे हैं या यह कुत्ता अच्छा है?' संत जानते थे,जिसकी आत्मश्रद्धा कमजोर हो या जो अपने अस्तित्व को स्वीकार न करता हो वह नास्तिक है। जो धर्म को न माने वह नास्तिक नहीं,बल्कि जो अपनी आत्मा पर भरोसा नहीं रखता,वह नास्तिक है।

संत हुसैन बहुत पहुँचे हुए और सही सोच के धनी थे। उन्होंने सीधे ऐसा मार्मिक उत्तर दिया कि नास्तिक भी उनके चरणों में नत मस्तक हो गया। उन्होंने कहा-'जिंदगी के जो पल मैं धर्म आराधना में बिताता हूँ और पवित्र कार्य में लगा रहता हूँ उन पलों में मैं कुत्ते से श्रेष्ठ हूँ। यदि मैं पापमय जीवन जीऊँ,अपने मन,वाणी या शरीर को सतत् अशुभ क्रिया में लगाए रखूं तो उन पलों में कुत्ता मेरे से श्रेष्ठ है।'

इससे स्पष्ट है,जो पाप में प्रवृत्त रहता है,बुरे काम करता है,वह मनुष्य होते हुए भी पशु के समान है। जिस प्रकार आहार का अजीर्ण हो जाए तो शारीरिक रोग पैदा होते हैं,उसी प्रकार कोई व्यक्ति धन कमाकर पचा नहीं पाता तो उसे अहंकार आ जाता है। इसी प्रकार सुख को जो पचा नहीं पाते, उनके जीवन में पाप प्रविष्ट हो जाते हैं।

सुख मिलने के बाद उसे पचाना बहुत बड़ी तकनीक है,जो हमें यह सिखाती है कि सुख में व्यक्ति को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। सुखी व्यक्ति की पहचान के तीन पैमाने हैं।

अगर कोई व्यक्ति मनचाहा करता हो या मनमानी करने की उसे पूरी सुविधा मिली हो और वह सुविधा उसे सफलता तक पहुँचा रही हो तो समझ लेना-उस व्यक्ति के जीवन में सुख का सूर्य चमक रहा है। इससे विपरीत उसके जीवन में यदि मनचाहा नहीं हो पा रहा हो,अनहोनी हो रही हो और कदम-कदम पर असफलता मिलती हो तो समझना- सुख का सूर्य अस्त हो गया है।

यदि कोई व्यक्ति महसूस करे कि हर कोई उससे मधुर बोलता है,उसकी बात आदर से-ध्यान से सुनी जाती है,तो जानना उसके जीवन में सुख की अनुकूल हवा चल रही है। यदि सामने वाला बात पर ध्यान नहीं देता, अथवा गेंद की तरह बात को उछाल देता है तो जानना अभी दुःख का अर्थात् पापोदय का समय चल रहा है..मतलब दुःख की प्रतिकूल हवा चल पड़ी है।

अगर सुख के दिनों में व्यक्ति महसूस करे-मेरा अनुकूल समय सदा रहने वाला नहीं है,मुझे आगे की तैयारी भी करनी है। अतः सुख के क्षणों में से ऐसा चिंतन जगाना कि मेरा सुख जमी हुई बर्फ के समान है। फलस्वरूप यह पुण्य की राशि भी धीरे-धीरे पिघल रही है। अगर मैंने इस सुख के समय को सिर्फ पुण्यभोग में बिताया तो यह बर्फ दुगुने वेग से पिघल जाएगी। अतः सुख के दिनों में मुझे सावधान रहना है,ताकि सुख के सूरज पर पाप के बादल न आने पाएं। बहुत कम लोग ऐसे हैं,जो सुख के दिनों में ऐसी सचेत सोच रख पाते हैं।

सुख के दिनों में प्रायः लोग दो प्रकार का आचरण करते हैं-पुण्य के काल में पाप की प्रवृति करना अर्थात् सुख के दिनों में पाप क्रियाओं में तल्लीन रहना(सैडिस्टिक हालीनेस)। सावधान! सुख का समय अधिक खतरनाक है। उन दिनों में सावधानी न रखी जाए तो भूलें,दोष,अपराध और पाप की मात्रा बढ़ने की पूरी संभावना रहती है।

सुख के दिनों में धर्म करना (अर्थात् हालीस्टिक हालीनेस)अर्थात् धर्म वही करेगा जो जानेगा,सुख स्थायी नहीं है,यह परिवर्तनशील है। अतः मुझे प्राप्त अवसर को आत्म-साधना में और आगे की जिन्दगी सुधारने में लगाना है। फलतः वह निश्चित रुप से आगे के जन्मों में सुख को सुरक्षित और आरक्षित कर लेता है।

अब जानेंगे कि,सुख के दिनों में अपना हित साधना है और प्राप्त योग का प्रयोग कैसे करना है? पुण्योदय से प्राप्त वस्तु और साधनों का प्रयोग करने हेतु दो बातें चाहिए-बिना पात्रता के सुख भी दुःख बनता है। साधनों का सदुपयोग करने हेतु सम्यक् पुरूषार्थ भी चाहिए,तभी आगे के सुखों का आरक्षण(स्थायित्व) हो सकता है। अक्सर इंसान सुख के दिनों में तीन तर्क देकर पुनः पाप में प्रवृत्त होता है। पहला तर्क है-सुख मुझे मेरे पुण्य से मिले हैं तो उसका मैं अधिकतम लाभ क्यों न लूँ? दूसरा तर्क है-दुनिया में कोई भी व्यक्ति दूध का धुला नहीं है। सभी लोग पाप करते हैं तो मैं क्यों न करूँ? इस तर्क से वह संवेदनहीन बनकर रहता है। तीसरा तर्क है-मैं दुनिया में जीता हूँ तो एक पाप या अपराध करने की छूट मुझे भी है। इन तीनों तर्कों के तले वह सुख के दिनों में दुःख का आरक्षण(स्थायित्व) कर लेता है।

इसके अलावा कुछ गलत मान्यताएँ मनुष्य के मन में छिपी हैं जो उसे पाप से निवृत्ति नहीं लेने देती है? उनमें छठी धारणा के अन्तर्गत कुछ लोगों का मानना है,आज हमने पाप किया है तो कल पुण्य करके उस पाप के फल को कम कर देंगे। यदि जीवन की चादर पाप से गंदी हो गई है तो उसे पुण्य के साबुन से धो लेंगे। आज जीवन के खाते को यदि पाप से नामे किया है तो कल पुण्य से जमा भी कर लेंगे। इस प्रकार हम अपना खाता संतुलन कर लेंगे,या दोगुने लाभ में ले आएंगे।

ये धारणा दो तरफ संकेत देती है। पहला संकेत है-मुझसे पाप तो हो गया पर अब मैं जिंदगी में कुछ अच्छा करूँ,जिससे मेरे पाप का भार कम हो। इस भावना से प्रेरित हो यदि व्यक्ति धर्म करता है या पुण्य करता है तो कोई हर्ज नहीं,यह उसके आत्मविकास का द्वार खोलता है।

दूसरा संकेत है-पाप करने से पहले मन को शर्तों से बाँध देना। ऐसा सोचना मेरा अशुभ,गलत,अनैतिक और धर्म विरूद्ध काम अगर सफल हो जाए तो मैं लाभ का कुछ अंश पुण्य कार्य में लगाऊँगा अर्थात् पहले पाप कर लो फिर पुण्य कर लेंगे। अभी चोरी या अनीति से कमा लो फिर लाभ का कुछ अंश दान कर देंगे,अथवा किसी की मदद कर देंगे। इसके पीछे भावना यह है,मेरा पाप न खुले और मुझे पाप का फल भी न मिले।

इस तरह मनुष्य पाप करने के लिए पुण्य की योजना तैयार कर लेता है। जैसे हम भंडारा लगाएंगे,मंदिर बनाएंगे,चोला चढ़ाएंगे,सोने का छत्र बनवाएंगे,अस्पताल,स्कूल,वृद्धाश्रम या अनाथालय में

कमरा डलवा देंगे। यूँ लोग पाप का भय,लोकलाज और झिझक छोड़कर निःसंकोच खुशी से पाप प्रवृत्ति में कदम बढ़ा लेते हैं। पाप करने से पहले उन्होंने अपने मन में सुरक्षा कवच बिठा रखे हैं तो अधिक साहस के साथ वेगपूर्वक पाप करते हैंद्य इतना ही नहीं,पुण्य करने के इरादे से वे जब पाप करते हैं तो उन्हें भूल अनुभव नहीं होता। यूँ लोग पाप को पुण्य के तले कर लेते हैं।

शास्त्र कहते हैं,ऐसी धारणा रखोगे तो पाप करने का साहस बढ़ेगा। एक तो गलती की,ऊपर से उसे छिपाने हेतु पुण्य का सौदा किया तो निश्चित रूप से चित कठोर बनेगाद्यफिर समझ नहीं आएगा कि इसमें बुरा क्या है? इस तरह जो गलत था,उस पर एक और गलत की परत चढ़ जाती है और वह पाप सघन हो जाता है। जिस पुण्य कार्य के पीछे दया,करूणा या सहयोग का भाव नहीं है,वह पुण्य भी धर्म की ओर उन्मुख नहीं कराएगा। मात्र दान-पुण्य की रिश्वत देकर इंसान जीवन महल को कैसे टिका पाएगा?

सावधान! पुण्य की धारणा से किए गए पाप चिकना बंध कराते हैं। चूंकि पुण्य की ओट में पाप का डर और संकोच समाप्त हो जाता है,तो हँसते-हँसते खुशी से किए गए पाप कर्म के बंध का निमित्त बनते हैं,जिसे रो-रोकर भोगना पड़ता है। अतः पाप करने के लिए पुण्य का चश्मा मत पहनो, वर्ना दृष्टि बदल जाएगी और दृष्टि बदलते ही हम पाप के भय से मुक्त हो जाएँगे।

इसे ऐसे समझिए-एक ग्वाले के पास अनेक गायें थी,जिनमें दो गायें सूखी घास नहीं खाती थी। उन्हें हरा घास न मिले तो वे भूखे रहती थी,पर सूखी घास नहीं खाती थी। एक बार दुष्काल पड़ा। कहीं भी हरी घास न देख ग्वाले ने सोचा,ये दो गायें कहीं भूख से अपना दम न तोड़ बैठें..किन्तु हरी घास लाए कहाँ सेड़

उसके मित्र ने समाधान सुझाया-तुम दोनों गायों को हरे रंग का चश्मा पहना दो।

-राजकुमार जैन 'राजन'

जीवन एक प्रयोगशाला

'ज़मीन नहीं बन सकी
तो आसमान बन गई
यथार्थ से परे बस कल्पनाओं
का जहान बन गईज़।।'

ऐसा होता तो होगा सबके जीवन में, नहीं तो यह ख़्याल यकायक उफ़ान नही उठाता ज़हन में। इस जीवन रुपी प्रयोगशाला में हम सभी की एक अपनी-अपनी ताख़ है,अलग-अलग आकार के कांच के मर्तबानों मे रासायनों से रखे हुए हैं। प्रयोग निरन्तर चालू है,कभी जलाकर,कभी तपाकर,कभी हल्के से घोलकर,कभी डूबोकर छोड़ दिया जाता है परीक्षण हेतुज़।

हर दिन कुछ-न-कुछ नया बनता रहता है इस प्रयोगशाला में। मानवीय स्वभाव का सहज कौतूहल,हर कदम पर प्रकृति के गूढ़ रहस्यों से परदा हटाने का प्रयास करता है,ऐसा क्यों है? यह मोड़ कहाँ तक जाएगा? ऐसा करके देखते हैं,क्या होता है देखें तो ? आदि-आदिज़ की जिज्ञासा हमें एक बहुत बड़ी-सी परखनली में डाल देती है,जिसमें कहीं घुमावदार रास्ते हैं,तो कहीं पतली संकरी नली। कहीं हम अचानक से एक नली से एक गहरी बोतल में गिर जाते हैं और नीचे रखे परिस्थियों के बर्नर से निकलती आंच हमें पकाना शुरू कर देती हैज़। फिर चाहकर भी इस पेचीदा यंत्रजाल से निकलना असमंभव हो जाता है। फिर तो कौतूहल का जोश धुआं बन यंत्र की किसी नली से बाहर निकल जाता है और हमारा एक नया ही व्यक्तित्व आकार ले रहा होता है।

'ओखली में सिर दिया तो मूसल के वार से क्या डरना ' वाले मनोभाव लिए एक वीर जुझारु सिपाही की तरह..वीर तुम बढ़े चलो,धीर तुम बढ़े चलो।।।।..हमारा यथार्थ हमें जला रहा होता है,एक पेचीदा यंत्र जाल में बुरी तरह फंस चुके होते हैं,परन्तुज़ यह हमारा खुद का कौतूहल था। खुद की जिज्ञासा थी, नई परतों को खोल ताका-झांकी करने कीज़्अतः इस प्रयोग के अंतिम परिणाम तक हमें हर प्रतिक्रिया से गुज़रना ही पड़ेगाज़।

यहाँ से कल्पनाओं का संसार जीवन की वैज्ञानिक प्रयोगशाला से परे अपना आसमान दिखाने लगता हैज़एक बहुत विस्तृत-सा अशेष फैलाव,एक क्षितिज लिए,जो प्रकृति द्वारा निर्मित सबसे बड़ा मायाजाल हैज़्मनुष्य की नज़रों का धोखा। आसमान छूने की चाह प्रबल हो जाती है इस क्षितिज रुपी मायाजाल को देखकर। लगता है,थोड़ा चलना ही तो हैज़फिर तो ज़मीन पर खड़े होकर दोनों बाँहों मे पूरा आसमान समेट लेंगेंज़्मुस्कुरा उठी मैं यह वाक्य लिखकरज़्ज़। कभी-कभी सत्य जानते हुए भी उस बात की कल्पना करना,जिसका वजूद ही नहीं,फिर भी हम उसे सोचते हैं..यह तथ्य मुस्कुराहट ला देता है।शायद 'कल्पनाएं' इसीलिए प्यारी लगती हैंज़'परीलोक' की परिकल्पना ऐसे ही तो आई। कहानियां इसी लिए तो दिल को छू जाती हैं,यदि उनमें हमारे जीवन से मिलता-जुलता एक सामान्य-सा अंश भी हो। जीवन की वास्तविकताओं से दो-दो हाथ करने की ताकत 'काल्पनिक जगत' से ही मिलती है। 'बेतार का तार' एक तार है जो जोड़े है,दिखता नहींज़है भी और नही भी। 'वेन डायग्राम' सब कुछ एक छल्ले से दूसरे छल्ले कड़ीबद्ध हैं भी और नहीं भी।

ऐसा कोई नहीं, जो जीवन की प्रयोगशाला के जटिल यंत्र में न फंसा हो,ऐसा मुझे लगा। हो सकता है कोई अपवाद भी हो,कुछ भी दावे के साथ नहीं कहना चाहिए,क्योंकि जन्दिगी बस उतने ही घेरे में सीमित नहीं है, जितनी आपकी दृष्टि देख पाती है। चमत्कार और आश्चर्य भी यहाँ देखने को मिलते हैं। यहाँ विज्ञान बस अवॉक-सा मुहँ बाये खड़ा रह जाता हैज़। हाँ तो मैंकह रही थी कि-कुछ अपवादों,आश्चर्यों एंव चमत्कारों को छोड़ सभी को इस जटिल यंत्र में अपने कौतूहल के वशीभूत होकर फंसना पड़ता हैज़एक बार जो फंसे भइय्या,,,,,,तब तो रासायनिक समीकरण झेलना ही पड़ता है। फिर ओटू,एचटूओ या और कुछ बनने तक पकते रहो..घूमते रहो..गिरते रहो..और दिल को बहलाने के लिए कल्पनाओं के आसमान पर उड़ते रहो।

नए सपनों की परिकल्पना करो..रोज़ नए 'परीलोक' की सैर करो..। कोई एक उम्मीद लेकर ही कौतूहल जागा होगा,जिसने हमें परखनली मे कूद जाने को उतावला कर दिया होगा..उस उम्मीद की सुनहरी तस्वीरें आसमान पर खींचते रहिए..मिटाते रहिए..रंगते रहिए..। इस तरह हममें एक रचनात्मकता का अंकुर फूटने लगता है। यह एक मूक संदेश है जीवन का हमारे नाम। जो हमें कुछ सम्भावित सम्भावनाओं के टूटकर बिखर जाने पर खुद को टिकाए रखने के लिए एक सहारा सिद्ध होने वाली होती है।

आह,लगता है मेरा यह लेख भी आसमान-सा विस्तृत होने वाला है, पर तो मैं तो विराम लगा सकती हूँ क्योंकि, यह मेरे वश में हैज़्परन्तु उन्मादी विचारों पर विराम लगा पाना मेरे वश में नहीं है। मैं भी प्रयोगशाला के जटिल यंत्र में फंसी हूँ। प्रयोग प्रक्रिया चालू है और मैं कल्पनाओं के आसमान पर..यथार्थ से परे कुछ 'परीकथाएं' लिख रही हूँ।

-लिली मित्रा

महावीर के संदेशों को चहारदीवारी से बाहर निकालकर विश्वभर में फैलाएँ

–ललितप्रभ सागर जी महाराज

अगर हमारे शरीर में केवल पिन चुभ जाए तो हम कराह उठते हैं,सोचो जिन जीवों पर कटार चलती है उन्हें कितनी पीड़ा होती होगी? अगर हम एक मांसाहारी को प्रेरणा देकर शाकाहारी बनाने में सफल हो जाते हैं तो,हमें अड़सठ तीर्थों की यात्रा जितना पुण्य घर बैठे मिल जाएगा। महावीर साधना के शिखर पुरुष हैं। जैसे पर्वत चोटियों में माउंट एवरेस्ट और नक्षत्रों में ध्रुव नक्षत्र सर्वश्रेष्ठ हैं,ठीक वैसे ही महापुरुषों में महावीर हैं। वे केवल जैनों के नहीं,वरन सम्पूर्ण मानवता के भगवान हैं। महावीर उन्हीं लोगों के काम के हैं जो ज्योर्तिमयता में विश्वास रखते हैं। वे ही पहले ऐसे महापुरुष थे,जिन्होंने सरे बाजार में बिकने वाली नारी को बिक्री की वस्तु से हटाकर उसे आमजन मानस में गौरवपूर्ण स्थान दिलवाया।

आज जरूरत केवल इतनी-सी है कि,भगवान महावीर में आस्था रखने वाला लोग केवल मंदिरों में उनकी पूजा-आरती न करते रहें,अपनी पंथ-परम्पराओं की चहारदिवारी में बंधकर न रहें,वरन् उनके द्वारा दिए गए अहिंसा, अनेकांत, समता, समानता, सहयोग जैसे संदेशों को विश्वभर में फैलाने की जी-जान से कोशिश करेंद्य फिर वह दिन दूर नहीं,जब संयुक्त राष्ट्र संघ में शांति और मैत्री की केवल बातें नहीं होगी, वरन् विश्व मैत्री और विश्व शांति का सपना साकार होता दिखेगा। माना कि,अहिंसा में आस्था रखने वाले संख्या में थोड़े होंगे,पर ध्यान रखना जिस पेड़ से हजारों तीलियाँ बनती है अगर वही तीली ठान ले तो हजारों पेड़ों को भस्म भी कर सकती है।

महावीर का क्कमक्क कहता है महान बनो-जहाँ भगवान श्री राम दिए हुए वचन को निभाने की प्रेरणा देने वाले आदर्श-स्तंभ हैं,वहीं भगवान श्री महावीर लिए हुए संकल्प पर दृढ़ रहने के आदर्श स्रोत हैं। स्वयं महावीर शब्द में गूढ़ रहस्य छिपा हुआ है। महावीर का क्कमक्क महान बनने,क्कहक्क हिम्मत रखने, क्कवक्क वचन निभाने और क्करक्करमन करने का पाठ सिखाता है। भले ही सिकन्दर ने पूरी दुनिया को जीता,पर सिकन्दर बनकर दुनिया को जीतना सरल है,लेकिन उसी सिकन्दर के लिए स्वयं को जीतना बड़ा मुश्किल है। जो स्वयं को जीतते हैं,वही दुनिया में वीरों के वीर महावीर कहलाते हैं। जैसे राम ने रावण का और कृष्ण ने कंस का संहार किया,वैसे ही महावीर ने क्रोध और कषाय के कंस का एवं राग और द्वेष के रावण का अंत कर धरती पर प्रेम,शांति,करुणा और आनंद के साम्राज्य को स्थापित कर दिखाया था।

भारत के प्राण हैं महावीर-महात्मा गांधी भारत के राष्ट्रपिता कहलाते हैं,पर कोई मुझसे पूछे कि भगवान महावीर भारत के क्या लगते हैंद्य मैं कहूँगा-वे भारत के प्राण हैं और जिस दिन प्राण चले जाते हैं उस दिन केवल ढांचा बच जाता है जो किसी काम का नहीं होता है। जैसे गांधी ने महावीर द्वारा प्रदत्त अहिंसा के अस्त्र का उपयोग कर भारत को आजादी दिलाई,ठीक वैसे ही हम भी अहिंसा को प्रायोगिक रूप में फैलाना शुरू कर दें तो विश्व को आतंकवाद,उग्रवाद,आत्महत्या और मांसाहार से आजादी दिला सकते हैं। महावीर के संदेश तब भी उपयोगी थे,आज भी उपयोगी हैं और सदा उपयोगी बने रहेंगे। वे कभी आउट ऑफ डेट नहीं होंगे,सदा क्कअप-टू-डेटक्क बने रहेंगे।

महावीर को मंदिर में नहीं,मन में बिठाएँ-महावीर के अनुयायियों से महावीर कहते हैं कि,नेता को वोट,अमीर को नोट, और आगे बढ़ने वालों को सपोर्ट चाहिए,पर मुझे केवल आपकी खोट चाहिए,ताकि मैं आपको खरा बना सकूँ। महावीर को भीड़ नहीं,भाव चाहिए,सिक्के नहीं,श्रद्धा चाहिए। उनकी मंदिरों में प्रतिष्ठा तो बहुत हो चुकी,अब जरूरत उन्हें मन में प्रतिष्ठित करने की है। श्रद्धालु महावीर को मंदिरों में सजाते हैं,उन पर सोने-चाँदी के मुकुट चढ़ाकर वैभवयुक्त दिखाते हैं,पर उन्हें क्या मालूम कि महावीर तो वैभव का त्याग करके आए थे। अगर हकीकत में उन्हें कुछ चढ़ाना चाहते हो तो,अपनी कोई भी एक बुरी आदत चढ़ाओ ताकि,आपका जीवन निर्मल और पवित्र बन सके।

महावीर का एक ही संदेश-जियो और जीनो दो-अगर सुख पाना चाहते हो तो महावीर के केवल एक मंत्र को अपना लो,वह है जियो और जीने दो। सदा याद रखो,सुख पाने का एक ही मंत्र है दूसरों को दुख देना बंद करो। खुद भी सुख से जियो और औरों की भी सुख से जीने की व्यवस्था करो।

जो तुम अपने लिए चाहते हो,वही दूसरों के लिए भी चाहो। उदाहरण के तौर पर अगर आप चाहते हैं कि,आपकी बेटी ससुराल में सुखी रहे तो जरूरी है आप अपनी बहू को सुखी रखेंद्य अगर आप चाहते हैं कि,आपकी भाभी पीहर में आपकी माँ का ध्यान रखे तो जरूरी है आप भी ससुराल में अपनी सास का पूरा ध्यान रखें।

बैनरबाजी बहुत हो चुकी-जब तक अहिंसा जीवन शैली में उतरकर नहीं आएगी,तब तक केवल बैनरबाजी से कुछ नहीं होने वाला है। गजब की बात है कि,शोभायात्रा और रैलियों में चलते हुए हाथों में अहिंसा के बैनर,मुँह से शाकाहार अपनाओ के नारे और पाँवों में चमड़े के जूते! याद रखना,चमड़े की वस्तुओं का उपयोग करने वाले भी उतने ही दोषी हैं जितना माँस खाने वाले। आखिर चमड़ा बनता तो पशुओं से ही है। रेग्जीन,रबर,प्लास्टिक,कपड़े की बहुत सुंदर और टिकाऊ वस्तुएँ आती है। बहिनों से कहना चाहूँगा कि,वे सुंदरता बड़ाने के लिए मंहगी साड़ियाँ,सौन्दर्य प्रसाधन आदि भले ही खरीदें,पर पहले देख लें कि ये हिंसक हैं या अहिंसक। कहीं ऐसा न हो कि,हमारी सुंदरता का मौल पशु-पक्षियों को अपनी जान देकर चुकाना पड़े। बस खरीदते समय समय विवेक रखने की जरूरत है। हो सके तो हम शाकाहार का अभियान भी चलाएँ। हमसे जुड़े लोग जो मांसाहार करते हैं,उन्हें शाकाहार की प्रेरणा दें। याद रखें,जानवर बेजुबान तो होते हैं,पर बेजान नहीं। अगर हमारे शरीर में केवल पिन चुभ जाए तो हम कराह उठते हैं,सोचो जिन जीवों पर कटार चलती है उन्हें कितनी पीड़ा होती होगी?

हर कार्य विवेक पूर्वक करें-महावीर की अहिंसा को व्यवहारिक जिन्दगी से जोड़ें। अगर आप बाइक से सड़क पार कर रहे हैं और सामने कीड़े चलते हुए दिखाई दे दे तो बाइक को रोक दें,कीड़ों को रूमाल से हटाएँ और फिर आगे बढ़ जाएँ,मुश्किल से आधा मिनिट ही लगेगा,पर ऐसा करके आप मंदिर जाने का सौभाग्य मुफ्त में ही प्राप्त कर लेंगे। हम महावीर की अहिंसा को मंदिर से किचन में भी ले आएं।

चूल्हा जलाने से पहले,बेसन में पानी गिराने से पहले,चावल भिगोने से पहले,नहाने से पहले एक बार देख लें,कहीं जीव तो नहीं आए हुए हैं। पहले उन्हें हटाएं,फिर आगे का काम करें। इस तरह अगर आप हर कार्य विवेक पूर्वक करते हैं तो समझना हम महावीर के आदर्शों को हर पल साकार कर रहे हैं।

संवाद होना चाहिए

प्रायः यह देखा गया है कि,आज की युवा पीढ़ी जिन्दगी को जीना नहीं चाहती,बल्कि उड़ना चाहती है। पा लेना चाहती है सबकुछ, कुछ ही पलों में। धैर्य,शान्ति,सबर जैसे शब्द तो जैसे उनकी जिन्दगी में ज्यादा मायने ही नहीं रखते। ऐसे हालातों में संवाद ही एक ऐसा जरिया है,जिससे युवा पीढ़ी को सही दिशा दिखाई जा सकती है,क्योंकि संवादहीनता कभी-कभी दूरियां बढ़ा देती हैं और ये दूरियां धीरे-धीरे रिश्तों में एक अजीब-सी खाई का रुप ले लेती है जिसे फिर कितना भी पाटो,वह नहीं भरती है। संवादहीनता से उत्पन्न दूरी अक्सर परिवार में तनावपूर्ण माहौल पैदा कर देती है,जिसे चाहकर भी आप सामान्य या खुशनुमा नहीं बना पाते हैं। फिर सिलसिला चल पड़ता है एक-दूसरे पर दोषारोपण का। माँ-बाप अपना पल्ला छाड़ लेते हैं,ये कह कर कि ये तो है ही शुरु से गलत,कभी हमारी सुनी ही नहीं,कभी हमें बताया इसने कि ये क्या चाहता है। तो बच्चा झुंझलाता फिरता है कि अब सबको मेरी फिक्र हो रही है,तब कहां थे जब मैं अपनी बातें आपसे कहना चाहता था। तब तो आपके पास समय ही नहीं था मेरे लिए। अपनी जिन्दगी में आप इतना व्यस्त थे कि आपको समय ही कहां था मुझसे बात करने का। तब तो मैं हमेशा अंदर-ही-अंदर घुटता रहता था और कमरे में रो-रोकर सो जाता था। दिल चाहता था कि कोई आए और मुझसे पूछे कि बेटा क्या हुआ है, क्यों रो रहा है तू,क्या तकलीफ है तुझे! हमें बता,हम हैं न तेरे साथ,हम दूर करेंगे हर मुश्किल को..,पर तब तो कोई नहीं आया,उल्टा डाँट दिया जाता था यह कहकर कि घर का माहौल मत बिगाड़ो।

अक्सर होता ये है कि,एक उम्र के बाद हर एक बच्चे को एक ऐसे दोस्त की जरुरत होती है जिससे वह अपनी बात कह सके। अपने दर्द बांट सके और अपनी खुशी का इजहार कर सके। उससे पूछ सके कि वह सही कर रहा है या गलत,या उसे इन हालातों में क्या करना चाहिए या क्या नहीं। पहले-पहल वह ऐसा ही दोस्त अपने पिता,अपनी माँ और अपने भाई-बहनों में तलाशता है। जब उसे यह दोस्ताना माहौल और संवाद करने की अपनी चाह परिवार में पूरी होती नजर नहीं आती, तो उसकी तलाश अपने इर्द-गिर्द पनपते नए-नए दोस्तों और सहपाठियों में शुरु हो जाती है। ऐसे में अगर कोई सही दोस्त उसे मिल गया तब तो हालात बिगड़ने से बचने की गुंजाइश होती है, मगर उसकी तलाश किसी गलत शख्स पर आकर ठहर गई तो फिर हालात बद-से-बदतर होते चले जाते हैं। फिर उसे आप लाख समझाओ कि, वह जिसके साथ है वह गलत है,दिशा से भटका हुआ है तुम्हें भी भटका रहा है मगर वह नहीं सुनता क्योंकि उसे तो उसी में अपना सुख नजर आने लगता है। उसे लगता है यही वह दोस्त है जिसकी उसे तलाश थी,यही तो मेरी सुनता है, तो यह गलत कैसे हो सकता है। ऐसे हालातों में अगर आपका बच्चा बुद्धिमान है,समझदार है तो वक्त के साथ-साथ उसे इस बात का अहसास हो जाएगा कि उसने जिसका दामन थामा है वह गलत है और उसकी सोहबत में वह खुद भी दिशा भटक रहा है। जैसे ही उसे इस बात का अहसास होगा, वह खुद ही उसका साथ छोड़कर सही दिशा की ओर बढ़ने लगेगा, मगर हालात फिर वहीं आकर खड़े हो जाते हैं,जहां से शुरु हुए थे। ऐसे में अगर आपने उसकी मनः स्थिति को समझकर उससे संवाद करना शुरू कर दिया तो धीरे-धीरे हो सकता है कि वह आप में अपना दोस्त तलाशने लगे और आप से अपने दिल की हर एक बात शेयर करने लगे। ऐसे में आप उसे समझा सकते हैं कि उसके लिए क्या सही है और क्या गलत।

मगर यदि आपका बच्चा मंदबुद्धि है या सामान्य बुद्धि रखता है, तो हालात और भी भयावह हो जाते हैं। ऐसे में वह यह लम्बे अर्से तक समझ ही नहीं पाता कि, वह जो कर रहा है वह गलत है,उसकी जिन्दगी के लिए घातक है और उसका दिशा भटकाव उसकी जिन्दगी को भयावह बना देगा। हालात ऐसे हो जाते हैं कि जब तक उसे यह सब समझ आए, बहुत देर हो चुकी होती है। वह बहुत कुछ खो चुका होता है और बहुत कुछ खोने के लिए खुद को मजबूर भी महसूस करने लगता है। फिर भी इतनी देर कभी नहीं होती कि, हालातों को सुधारा न जा सके। ऐसे हालातों में भी संवाद ही एक जरिया है जिससे आप अपने बच्चे के जीवन में आए भटकाव को धीरे-धीरे ही सही खत्म कर सकते हैं। उसे जिन्दगी के सही मायने सिखा सकते हैं,लेकिन अगर आपने ऐसे हालातों में भी संवादहीनता जारी रखी तो बच्चे का भविष्य ऐसा भयावह हो सकता है,जिसकी कल्पना करते ही किसी भी माँ-बाप की रुह भी काँप उठे।

ऐसा नहीं है कि, संवाद केवल बच्चों और माँ-बाप के बीच में ही जरुरी है या संवादहीनता से हालात केवल इस रिश्ते में ही बिगड़ते हैं। हर एक रिश्ता चाहे वो पति-पत्नी का हो,भाई-भाई का हो या दोस्ती का हो,संवाद होना बहुत जरुरी है। कई बार ऐसा होता है कि गलत कोई नहीं होता,मगर संवाद का न होना रिश्तों में दूरियां बढ़ा देता है और ये दूरियां अक्सर गलतफहमी का शिकार हो जाती हैं।इससे रिश्तों में गरमाहट और अपनापन ख़त्म होने लगता है। इसलिए,संवाद बनाए रखिए क्योंकि संवाद ही एक ऐसी शक्ति है जिससे आप अपनों को करीब ला सकते हैं और परिवार और रिश्तों में एक खुशनुमा माहौल रख सकते हैं।

स्तर शिक्षा का

बोर्ड परीक्षा एक खेल है,
अंकों की रेलम पेल है.
पास सबको ही करना है,
निरीक्षक का कहना है।
न हो ज्ञान स्वर-वर्णो का,
अंकों की फिर भी होली है..
उतारा है केवल प्रश्नों को,
पास होना उनका जरुरी है।
स्तर होगा शिक्षा का ऐसा,
होगा देश का भविष्य कैसा..
शिक्षक की दुविधा बड़ी है,
साँप-छछूंदर दर की गति है।
स्वर व्यंजन होते कितनेश्
कहना क्या मात्राओं का..
पेड़ का पैर हो सकता है,
जूठा झूठा हो सकता है ।
अर्थ का अनर्थ हो रहा,
भाव सब व्यर्थ हो रहा..
बिन मात्रा की भाषा देखी,
आड़ी तिरछी ऐसी वैसी।
दोष नहीं छात्र का इसमें,
यह शिक्षक का दोष है..
गुरु परोसते हैं जैसा,
ग्रहण करते हैं चेले वैसा।

यह आज का सच है,
शिक्षा का यह हश्र है..
गिर रहा शिक्षा का स्तर,
नहीं कहीं है और शिखर।
शिक्षा पूंजी है भारत की,
सबको मिलेगा सच्चा हक..
जोड़कर विद्या को शिक्षा से,
संस्कृति का उत्थान करेगें।

-निशा गुप्ता

तनख्वाह से शादी, नस्ल की बर्बादी

मैं किसान हूं और कोलिया(डिडवाना राजस्थान)गाँव से हूँ,इसलिए हमें 'मारवाड़ी' कहा जाता है। हमारा गाँव अपने मतिरो(तरबूज)के लिए प्रसिद्ध है। जब मैं छोटा था,तब इंदौर रहने के कारण गर्मी की छुट्टियों में ही गांव जाते थे। मेरे गाँव के किसान व दादाजी फसल के अंत में मई महीने में तरबूज(मतिरो)खाने की प्रतियोगिता आयोजित करते थे।

गाँव और आसपास के सभी बच्चे तरबूज खाने के लिए बुलाए जाते थे। उन्हें अधिक-से-अधिक जितना तरबूज वे खा सकते थे,खाना होता था। इंदौर में पढ़ाई,फिर नौकरी और व्यवसाय के चक्कर में कई साल गांव नहीं जा पाया। लगभग 10-15 वर्ष बाद अपने गाँव पहुँचा,तो मैंने तरबूजों के खेत और बाजार देखे। तरबूजे गायब थे,जो थोड़े बहुत थे,वह भी काफी छोटे थे ।

मैं उन किसानों को देखने पहुँचा,जो तरबूज खाने की प्रतियोगिताएँ आयोजित करते थे। अब यह जिम्मेदारी उनके बेटे देख रहे थे,लेकिन मुझे पहले से कुछ अंतर दिखाई दिया। पहले दादाजी व बुजुर्ग किसान हमें तरबूज खाने के बाद बीज थूकने के लिए कटोरी देते थे। एक शर्त यह भी होती थी कि,तरबूज खाते समय कोई भी बीज कटना नहीं चाहिए। वह हमें खाने के लिए अपने खेत के अच्छे से अच्छा,बड़े से बड़ा और मीठे से मीठा तरबूज देते थे। इस तरह से वह अपनी अगली फसल के लिए सर्वश्रेष्ठ-सर्वोत्तम बीज चुन लेते थे,और सिर्फ प्राकृतिक खाद (गोबर) व गोमूत्र से बनी दवाई ही खेत में प्रयोग करते थे। अगली फसल के तरबूज और भी अच्छे,बड़े और मीठे होते थे। हम वास्तव में बिना वेतन के सर्वश्रेष्ठ बीज चयन करने वाले कुशल बाल श्रमिक होते थे,यह मुझे बाद में पता चला। उनके बेटों को लगा कि,बड़े और मीठे तरबूज बाजार में बेचने पर अधिक धन मिलेगा और रासायनिक खाद व कीटनाशक से उत्पादन बढ़ेगा,की सोच रखी,न कि गुणवत्ता की। इसलिए उन्होंने बड़े,मीठे और अच्छे तरबूज बेचने शुरू कर दिए और प्रतियोगिता में छोटे और कम मीठे तरबूज रखने शुरु कर दिए। साल-दर-साल रासायनिक खाद व कीटनाशक के प्रयोग से जमीन खराब करते गए। इस प्रकार वर्ष प्रति वर्ष तरबूजे छोटे और छोटे होते गए,क्योंकि फसल में सभी प्रकार के फल होते थे,किन्तु अच्छे व मीठे फल बेचकर धन तो एक बार अधिक मिल गया,पर नुकसान भी होता रहा। ऐसे में छोटे और कम मीठे फल बिकने से रह जाते, इस कारण जो बीज मिलते,वो कमजोर और कम मीठे होते थे। तरबूज की उत्पादकता एक वर्ष की होती है। इस प्रकार वर्ष-दर-वर्ष में कोलिया गांव के सर्वश्रेष्ठ तरबूज विलुप्त हो गए।

मनुष्य में औसत उत्पादकता 25 वर्ष है। नस्ल परिवर्तन में लगभग 200 वर्ष लग जाते हैं। हम अपनी पीढ़ियों को शिक्षित करने में क्या गलती कर रहे हैं, इसका असर 200 वर्ष बाद पता चलेगा..और निश्चित रूप से उसको सुधारने में भी। जब तक हम अपनी शिक्षा व्यवस्था में सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षित एवं सुयोग्य अध्यापकों को स्थान नहीं देंगे और शादी,खानदान व लड़के- लड़की को छोड़कर सिर्फ पैकेज को ही महत्व देंगे,तो गड़बड़ होती रहेगी।हम विश्व में सर्वश्रेष्ठ नहीं हो सकते।हमें सर्वप्रथम शिक्षा व्यवस्था में सर्वश्रेष्ठ लोगों को बिना भेदभाव के स्थान देना चाहिए,और शिक्षा के बाद जब भी जीवनसाथी का चयन करें तो तनख्वाह या पैकेज के स्थान पर खानदान व रक्त जीन्स को महत्व देना चाहिए। वैसे भी दोनों का पैकेज होगा तो बस एक बात की चर्चा रहेगी कि, मैं आगे,कि तू ?

आगे परिवार और बच्चों पर ध्यान नहीं होगा तो अच्छी नस्ल कहाँ से आएगी। पैकेज से इकट्ठा धन धन बैंक में,और घर-परिवार संस्कारविहीन तथा बर्बादी की ओर,क्योंकि मेरा-तेरा है,हमारा नहीं है,इसलिए पैकेज के साथ संस्कार व हमारा का पाठ होना चाहिए। दस तेरा,मेरा पंद्रह की अपेक्षा ऐसा होना चाहिए-हमारा पच्चीस है।

गांव की एक और बात साझा करना चाहता हूँ,जिससे शायद पैकेज वाले कुछ समझें। गांव में एक या दो सांड हुआ करते थे,गायें सबके पास थी,जो सबकी अपनी सम्पत्ति होती थी,किन्तु सांड गांव की सम्पत्ति होती थी। उस समय गांव के लोग गायों से अधिक सांड का ध्यान रखते थे। हर घर से रोज सांड को रोटी मिलती थी,और सबसे तंदुरुस्त होता था। हर तीन साल में गांव के सांड बदल दिए जाते थे,ताकि गांव की गायों को किसी प्रकार की रक्त की बीमारी न हो। याने गोत्र बदल जाए। कुछ मौकापरस्त बेईमान नेता अपने वोटों और नोटों की भूख के चक्कर में इस प्रयोग को(जो इंसानों में भी होता था) गलत तरीके से पेश कर पूरी नस्ल को बर्बादी की ओर ले जा रहे हैं। इसका सबसे बड़ा सबूत है मुस्लिम धर्म,जिसमें रक्त को महत्व नहीं दिया जाता है। इस कारण आज पूरे विश्व में आंतक के कारन ये बदनाम होकर इंसानियत को हैवानियत की ओर ले जा रहे हैं। जहाँ मुस्लिम परिवारों में रक्त का विशेष ध्यान रखकर सम्बन्ध किए जाते हैं, उनका अध्ययन करने पर पाएँगे कि,वो अहिंसक और प्रगति की विचारधारा वाले हैं।

सीधी-सी बात यही है कि,अगली पीढ़ी तक अपनी संस्कृति-सभ्यता एवं ज्ञान की विविधता को पहुँचाने की जिम्मेदारी सबकी है। विशेषकर माँ, बाप और परिवार के बुजुर्गों की, या यूँ कहें कि भारत के प्रत्येक नागरिक की है। सभी को यह जिम्मेदारी पूरी लगन और ईमानदारी से निभानी भी चाहिए। इस कार्य के लिए दिमाग की जरुरत होती है,और दिमाग खान-पान से उन्नत होता है। खान-पान शुद्ध शाकाहारी के साथ जैविक और सात्विक होगा,तो सोचने की शक्ति होगी। इसी से विचारधारा सुधरेगी, न कि पैकेज से। अपने बच्चों को समझाएं कि,पैकेज के पीछे और तेरा-मेरा के पीछे न भटकें। दादाजी !!!!!!!!!ने एक बात और कही थी-आदमी के रक्त जीन्स कभी भी नहीं जाते,आगे की पीढ़ी रक्त मिलाने से बनती है,न कि पैकेज से। अतः रक्त मिलाते समय खानदान व संस्कारों का ध्यान रखें।

-शिवरतन बल्दवा

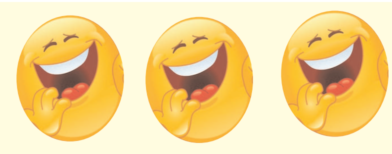

पापा- बेटा, आज तेरी मम्मी इतनी चुप-चाप क्यों बैठी है?

बच्चा- उन्होंने मुझसे लिपस्टिक मांगी थी
गलती से मैंने फेवीस्टिक दे दी।

पापा (आंख में आंसू के साथ)- जुग-जुग जिओ मेरे लाल। ऐसा बेटा भगवान सभी को दे।

यात्री ट्रेन से उतरा,
उसने पप्पू से पूछा- यह कौन-सा स्टेशन है ?
पप्पू हंसा, और जोर से हंसा,
जोर-जोर से हंसा,
हंसते-हंसते लोट पोट हो गया।
और बड़ी मुश्किल से अपने आपको संभालते हुए बोला-पगले, ये रेलवे स्टेशन है।

प्यारी बिटिया नई राह दिखाओ, न कि खुद ही भटक जाओ

प्यारी बिटिया अविका,

बहुत आशीर्वाद

तुमने कल वीडियो कॉलिंग द्वारा अपने आधुनिक घर और ऑफिस का पूरा अत्याधुनिक समान दिखाया। मन खुश हो गया-सचमुच कितनी सुविधाएं हैं आजकल,हमारा जमाना कुछ और था। तुम तो आधुनिक युग में पैदा हुई हो। तुम्हें तो बहुत से अधिकार और साधन प्राप्त हैं। सबसे बड़ी बात तुम्हारे माता-पिता तुम्हारे साथ हैं। समाज और परिवार,शासन,कानून भी बेटियों के हक मे लड़ रहा है। तुम्हें अपने कपड़े से लेकर करियर,जॉब और जीवनसाथी चुनने की भी आजादी मिली हुई है।

मुझे बहुत खुशी होती है जब कोई बेटी गले में मंगलसूत्र की जगह पदक पहनती है। पैरों में पायल की जगह स्पोर्ट्स शूज पहनती है। सिर पर टीके की जगह ताज से सजती है। कंगन वाले हाथों में बंदूक उठती है। कड़छी के साथ कम्प्यूटर चलाती है।खाना पकाने के साथ स्कूल-कॉलेज में टॉप करती है और भी बेटियाँ आकाश से लेकर पाताल को एक करती बेटियों को देखकर बहुत सुकून मिलता है। सलाम है ऐसी बेटियों को,मेरी दुआ है कि,तुम आसमान से भी आगे जाओ।

इन सब आजादियों के बीच जब लड़कियों को बराबरी की अंधी दौड़ में बहकते देखती हूँ। शराब,स्मोकिंग,ड्रग्स,लेटनाइट पार्टियां, पबक्या यही है नारी स्वतन्त्रता के मायने? इस दुनिया में पुरुषों की बराबरी पर आने के लिए बहुत सारे रास्ते हैं। क्या हम वो सब अपनाकर अपना वर्चस्व स्थापित नहीं कर सकती। पुलिस सर्विस में जाइए,सेना में कमान सम्भालिए,ऐरोप्लेन उड़ाईए, ट्रक चलाइए,पुरुषों के माने जाने वाले खेल खेलिए,आटोमोबाइल सहित सिविल इंजीनियर और भी कई अनगिनत काम ऐसे हैं, जो अब तक पुरुष ही करते आए हैं,उनकी तरफ नजर डालिए और फहरा दीजिए परचम अपनी योग्यता का। न जाने क्यूँ आज की नारियां अपने नारीत्व की गरिमा को गिराने की राह पर चल पड़ी हैं। पुरुषों की बराबरी की अंधी दौड़ में वे स्त्री सुलभ गुणों को नकारने पर तुली हैं। ईश्वर ने हमें खुद के समान सृजन क्षमता,दया,प्रेम,त्याग,सेवा,साहस,त्वरित निर्णय शक्ति,कोमलता के साथ दृढ़ता जैसे असीमित गुणों से परिपूर्ण करके धरती पर भेजा है,ताकि जब भी पुरुष अपनी राह से डिगे या धरती पर कोई संकट आए तो नारियां उसे सम्भाल लें।

गुलाब की अपनी अलग पहचान है,अंदाज है,अपनी महक है,कोमलता है,रंग है,गंध है..उसके पास अपना खुद का इतना कुछ है कि,उसे किसी और की नकल करना जरूरी नहीं है। जरूरत है तो बस खुद की पहचान की,खुद पर गर्व करने की,खुद की खुशबू दूर-दूर तक महकाने की और अपने आसपास बिखरे कांटों से खुद की हिफाजत की। यही बात आज की नारियों के संदर्भ में कही नहीं देखी जा सकती है। स्त्रियों को ईश्वर ने स्वयंमेव इतना अधिक दिया है कि,उन्हें खुद पर गर्व होना चाहिए।

माना कि,जमाना बहुत बदल गया है,लेकिन सोचिए यदि स्त्री सृजन करना छोड़ दे? अपने परिवार की सेवा-सम्मान न करे? दया का भाव त्याग दे? क्या होगा परिवार और समाज का?। वो सब कुछ करो,जो तुम हासिल करना चाहती हो,लेकिन समय आने पर फिर से बेटी,बहन,माँ,भाभी,दीदी,गृहिणी,चाची,मामी और दादी बनकर अपने स्त्री होने का सुख भोगो तथा समाज को नई राह दिखाओ,न कि खुद ही राह से भटक जाओ। आशा है,पत्र में छुपी एक माँ और नारी की भावनाओं को तुम आत्मसात करोगी। एक बार पुनः बहुत सारा आशीर्वाद।

प्यारी बिटिया अविका,बहुत आशीर्वाद

तुम्हारी माँ

सुनयना

-सुषमा दुबे

जीव हिंसा से बचें

पहले के जमाने में रोशनी नहीं होती थी,पर आजकल हमारे घरों में या बड़े समारोह में इतनी रोशनी होती है कि, मानो दिन निकल रहा हो,इस पर ये सवाल है कि,फिर ऐसे में रात्रि भोजन में क्या दोष है ? मेरा कहना है कि, सूर्य के अस्त होते ही सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति में अप्रत्याशित रूप से अनन्तगुनी वृद्धि हो जाती है। कुछ जीव जो सूर्य के प्रकाश में निष्क्रिय होते हैं, रात में वह भी सक्रिय हो जाते हैं । कुछ जीव अप्राकृतिक रौशनी (दीपक, मोमबत्ती, बिजली) में ही उत्पन्न होते हैं यानी इस तरह अपार जीव राशि की हिंसा तो होती ही है।

तो सवाल यह भी है कि,क्या 1 लाख वाट का बल्ब जला लेने से भी फूल को खिला सकते हैं ? ये कार्य तो सूर्य के प्रकाश से ही हो सकता है। बल्ब जला लेने से सूर्य के प्रकाश की भरपाई नहीं हो सकती है। अगर आप खुले आसमान के नीचे खा रहे हैं तो आपके भोजन की थाली चलते-फिरते जीवों की कब्रिस्तान गिनी जाएगी। आसमान से इतने सूक्ष्म जीव गिरते हैं कि,आप कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।

अगर आप हरे-भरे गार्डन में खाना खा रहे हैं या खिला रहे हों तो याद रहे कि,एक तरह से आप एक गर्भधारी महिला के उपर खड़े हैं। इस हालत में उसे जितनी पीड़ा होती है,उतनी ही पीड़ा उन मूक जीवों को दे रहे हैं। बस फर्वोक इतना है कि,ये दूसरे पौधों की तरह 'टच मी नॉट' नहीं बोल पा रहे हैं। रात्रि-भोजन के स्वास्थ्य-सम्बन्धी ढेरों दोष हैं पर उनकी चर्चा नहीं करूँगा।

स्पष्ट कहता हूँ कि,भगवान महावीर की एक भी बात आज का भी विज्ञान ठुकरा नहीं सका है। हो सकता है कि, हम रात्रि भोजन न छोड़ पाएँ,पर यदि हम हजारों को खिलाने वाले कार्यक्रम रात में ही करें,रात्रि भोजन के भवन बनाएँ,उसमे दान करें या फिर उसमें व्यापार करें,तो अवश्य सोचिए कि,क्या यह हमें शोभा देता है। क्या कोइ बेटा हजारों के बीच अपने घर में अपने माता-पिता की प्रतिष्ठा खराब करता है ? भगवान महावीर हमारे परमपिता हैं,हमें जैन धर्म की निंदा हो, ऐसे निंदनीय कार्य नहीं करने चाहिए। मेरा अनुरोध है कि,रात में खाने-खिलाने से बचते हुए हम और आप 'अहिंसा परमो धर्म' का संदेश पूरे विश्व में पहुँचाएं।

-राजेश बागरेचा

नैतिक शिक्षा सबके लिए

अशोक काम की तलाश में गाँव से शहर आया। पढ़ा-लिखा ज्यादा था नहीं,इसलिए मजदूरी करने लगा, लेकिन उसका साथी मजदूरों से अक्सर झगड़ा होता था। कारण था उसका बातचीत में गाली-गलौज का इस्तेमाल। इसलिए कुछ ही दिनों में काम से निकाल दिया जाता था। बेकारी के समय खर्चा चलाना मुश्किल हो जाता और धीरे धीरे छोटी-मोटी चोरी करते वह कब अपराध की दुनिया में फंस गया,उसे पता ही न चला।

मोहन गाँव से शहर आया तो उसे कहीं काम नहीं मिला। उसने एक ढाबे पर बर्तन साफ करने का काम कर लिया, लेकिन आमदनी इतनी नहीं थी कि जिम्मेदारियां पूरी हो पाती। उस पर जब ढाबे में लोगों को एक बार के खाने पर उसकी महीने भर की पगार जितना खर्च करते देखता तो उसका मन अपनी दुश्वारियों पर रो उठता। धीरे-धीरे उसने सुनसान रास्ते पर लूटपाट शुरु कर दी। खर्च और अधूरी आस ने कभी सोचने का मौका ही नहीं दिया कि, सही क्या और गलत क्या ? आज जेल में अपने गुनाहों की सजा काटते कई एनजीओ की कार्यशाला में जब बताया जाता है कि कैसे अपनी इच्छाओं को वश में किया जाता है या अपनी कमाई को बढ़ाने के लिए रोजगार प्रशिक्षण दिए जाते हैं , तब मोहन यही सोचता है काश ये सब पहले मिलता तो आज उसकी जिंदगी कुछ और ही होती।

दीपक गाँव का आवारा लड़का था। गलत संगत,सिगरेट-शराब की लत और रोजगार की कमी से काम ढूंढने पास के एक छोटे शहर आ गया। यहाँ जुगाड़ करके ऑटो चलाना सीख लिया। स्वभाव का अक्खड़ था,सो जब-तब सवारियों से उलझ पड़ता था। कई नए लोगों को यूं ही चक्कर लगवा कर ज्यादा पैसे ऐंठता। महिलाओं के साथ भी अभद्र व्यवहार करता। खर्चे बढ़ने पर उसने सोचा कि, बस में ड्राइवर हो जाए,लेकिन उसका कैरेक्टर सर्टिफिकेट इतना खराब था कि,उसे कहीं नौकरी नहीं मिली। अपने साथ वालों को आगे बढ़ते देख वह कुंठा का शिकार हो गया, जिससे उसका स्वाभाव बद से बदतर होता गया।

शिक्षा हमारे समाज की नींव है,जिस पर समाज का ढांचा टिका हुआ है। समाज के हर वर्ग तक शिक्षा पहुंचे जिससे लोगों का जीवन सुगम हो,लोग उनके अधिकारों के बारे में जानें, सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी वे प्राप्त कर सकें और उनका लाभ उठा सकें। समाज के विभिन्न वर्गों के लिए शिक्षा की जरुरत अलग-अलग रहती है। यदि संपन्न उच्च और उच्च मध्यम वर्ग को छोड़ भी दिया जाए तो निम्न मध्यम वर्गीय और निम्न वर्ग के लोगों के लिए शिक्षा सिर्फ अक्षर ज्ञान तक ही काफी समझ ली जाती है। इसके चलते इन वर्गों के बच्चे अपनी प्राथमिक पढ़ाई के बाद ही पढ़ाई छोड़ देते हैं। इसका कारण परिवार का माहौल,शिक्षा की उपयोगिता की समझ न होना भी है,तो कई बार आर्थिक मजबूरी भी। इसके बाद इन बच्चों का सामना पड़ता है इन्हीं के जैसे अशिक्षित लोगों से, जिनको सामान्य शिष्टाचार की जानकारी भी कई बार नहीं होती है। गाली-गलौज,अभद्र भाषा सहज ही इनके व्यवहार में शामिल हो जाती है। इनमें से अधिकतर किसी गैराज,ढाबे, दुकानों पर ऑटो-ट्रक ड्राइवर के रुप में मजदूरी या ऐसे ही काम से जुड़ जाते हैं।

ग्रामीण इलाकों में स्थिति बहुत भयावह होती है,क्योंकि वहाँ रोजगार के अवसर सीमित होते हैं। भेदभाव और जातीय संकीर्णता के चलते ये अवसर और भी कम हो जाते हैं। ऐसे में रोजगार के लिए ये लोग जब शहरों की ओर आते हैं,तो वहाँ की चकाचौंध समृद्धि को देख कर इन्हें अपने जीवन की कमियों का एहसास होता है,लेकिन फिर अशिक्षा और अव्यावहारिक बर्ताव इनके आगे बढ़ने के रास्ते में रुकावट डालता है। विडम्बना ये है कि, इन अड़चनों को न ये समझ पाते हैं, न ही इनसे पार पा पाते हैं। खर्चे बढ़ते रहते हैं और जीवन की चाहतें भी, जिससे इन लोगों में कुंठाएं बढ़ती हैं। पैसों की तंगी, खराब व्यवहार के कारण आपसी रिश्ते खराब होते हैं और ऐसे में ये लोग जाने-अनजाने अनैतिक कामों की ओर अग्रसर हो जाते हैं। शराब, जुएं की लत,चोरी-चकारी और आपराधिक गतिविधियों द्वारा पैसे कमाने का शार्टकट अपना लेते हैं।

मजदूर गैराज या ढाबों पर काम करने वाले कुली या हॉकर,चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी मैकेनिक के तौर पर काम करने वाले या इसी श्रेणी के लोग जिनकी शिक्षा पूरी नहीं हो पाती,इन्हें स्वस्थ माहौल नहीं मिल पाता है। जिन्हें अच्छा क्या,बुरा क्या बताने वाला कोई नहीं होता, क्या करना चाहिए-क्या नहीं और अगर नहीं तो कैसे?, ये बताने वाला भी कोई नहीं होता है। इनके जीवन की जद्दोजहद सिर्फ पैसा कमाने से भी बहुत अधिक होती है। हमारी शिक्षा पद्धति में व्यवहारगत इन मूलभूत सिद्धांतों को शामिल नहीं किया गया है। ये माना जाता है कि, छात्र जीवन में आगे बढ़ते हुए दैनंदिन व्यवहार में ये बातें शामिल होती जाएँगी। उन बच्चों के लिए जो बीच में ही पढ़ाई छोड़ देते हैं, या लगातार खराब माहौल में रहने को बाध्य हैं उन्हें सही नीतिगत व्यवहार की शिक्षा का कोई प्रावधान नहीं है। स्कूली शिक्षा में समय-समय पर बदलाव होते रहते हैं,लेकिन शिक्षा की बढ़ती पहुँच के बावजूद भी समाज में आपराधिक मामलों की कमी नहीं हुई है। इसका बड़ा कारण नैतिक शिक्षा का अभाव है।

यही हाल मजदूर वर्ग का भी है। जीवन के कटु अनुभवों से वे जो सीख लें,बस वही आगे बढ़ पाता है,लेकिन इन्हें व्यवहारगत ट्रेनिंग देने की शासन के पास बहुत विस्तृत योजना नहीं है। हालांकि,अवसर विशेष पर कुली, ऑटो चालकों,बस चालकों के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाती है, लेकिन वह सिर्फ तब,जब कोई बड़ा विदेशी समागम होने वाला हो, लेकिन हमारे खुद के लोगों के लिए नहीं।

ऐसे लोग जब अज्ञानतावश या अपनी कुंठा-हताशा वश अपराधों में लिप्त होकर सजा पाते हैं,तब उन्हें सही- गलत के लिए प्रशिक्षण और कार्यशाला की जाती है,लेकिन ऐसा कुछ होने से पहले और सभी के लिए आवश्यक तौर पर नहीं। हाँ,अब कुछ स्वयंसेवी संगठन सरकार के सहयोग से कुछ प्रोग्राम जरूर चला रहे हैं,पर अभी भी उनकी पहुँच सब तक नहीं है। साथ ही ये कार्यक्रम इतने अनियोजित हैं कि,एक बार के प्रशिक्षण के बाद उनका प्रभाव और पुनः जरुरत की निगरानी ही नहीं कर पाते हैं।

कार्यालय में अधिकारियों के लिए समय-समय पर प्रशिक्षण होते रहते हैं,लेकिन क्लर्क,चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों(हेल्पर, लाइनमेन, चपरासी) के लिए ये नहीं के बराबर हैं जबकि इन्हीं का जनता से सीधा वास्ता पड़ता है। यही लोग मुख्यतः दुर्व्यवहार के लिए जाने जाते हैं। देखा जाए तो सरकारी नौकरियों में रहते हुए भी इनके लिए तरक्की के रास्ते बहुत सीमित होते हैं,जिसका असर इनके व्यवहार पर पड़ता है। हालांकि, आर्थिक रूप से इनकी उत्तरोत्तर प्रगति होती रहती है,लेकिन जिस जगह ये काम करते हैं वहाँ पैसे के साथ पॉवर की बड़ी महत्ता होती है जिसे पाने के लिए कामों में अड़ंगे लगाना,लोगों को भ्रमित करना,जल्दी काम करवाने के नाम पर पैसा मांगना जैसी बातों से ये स्वयं को पावर पोजीशन में मानते रहते हैं।

सरकार को चाहिए कि, एक ऐसा विस्तृत कार्यक्रम बनाए,जिसमें रोजगार मूलक, प्रगति मूलक और व्यवहारगत प्रशिक्षण दिया जाए। आरटीओ,कर्मचारी संघ और मजदूर यूनियन के साथ ऐसे लोगों का प्रशिक्षण और कार्यशाला सुनिश्चित की जाए। साथ ही

एक निश्चित समय अंतराल पर इनके एडवांस कोर्स के साथ इन ट्रेनिंग की पुनरावृत्ति हो ताकि इसका असर और सुधार और बदलाव के लिए आवश्यक परिवर्तन इन पाठ्यक्रमों में किए जा सकें।

ऑटो टैक्सी,बस ड्राइवर के लाइसेंस का नवीनीकरण करते समय अंतराल पर काम किया जाना जरूरी है,ताकि इनके प्रशिक्षण की निगरानी की जा सके। साथ ही मजदूर,मैकेनिक मजदूर आदि के लिए उनके नौकरी प्रदाता व्यक्ति या संगठन को जिम्मेदार बनाया जाए। समाज में बढ़ती कुंठा, हताशा और आपराधिक मामलों को देखते हुए अब अपारम्परिक रोजगार मूलक और नैतिक शिक्षा पर जोर दिया जाना जरुरी है। या कहें कि,बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत को कार्यरुप देने का समय आ गया है। साथ ही बढ़ती भौतिक जरुरतों के मद्देनजर रोजगार मूलक प्रशिक्षण की समयावधि को कम किया जाकर इनका भरपूर प्रचार- प्रसार कर ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को इससे जोड़ने की जरूरत है। **-कविता वर्मा**

यह स्थिति अपने-आप में बेहद दुखद

हिंदी पटकथा लेखकों की इस प्रतियोगिता में जिसके निर्णायक मंडल में हिंदी फिल्मों के बड़े नाम जुड़े हुए हैं आमिर खान सहित रोमन लिपि की लगाई गई शर्त प्रतिभागियों के लिए,हिंदी के लिए और भाषा मात्र के लिए अपमानजनक है और बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है।

यह अवैध या असंवैधानिक तो नहीं कही जा सकती,क्योंकि राजभाषा अधिनियम सरकारी कार्यालयों और निगमों के लिए है,गैर सरकारी संस्थाओं के लिए नहीं,लेकिन इस बात से इसकी गंभीरता कम नहीं हो जाती। यह सब जानते हैं कि हिंदी फिल्म जगत की युवा पीढ़ी चाहे वह अभिनेताओं का सवाल हो या निर्देशकों का हिंदी पढ़ने और लिखने की अभ्यस्त नहीं है,इसलिए पटकथा और संवादों के मामले में रोमन का प्रयोग हो रहा है। यह अपने-आप में हिंदी फिल्म जगत और उसके जिम्मेदार लोगों के लिए शर्म की बात होनी चाहिए लेकिन नहीं है। सामान्य-सी बात है कि दुनिया के सबसे बड़े फिल्म उद्योग के कामकाज की भाषा वही होनी चाहिए,जिस भाषा में वे फिल्में बनती हैं,चलती हैं और जिसके कारण लाखों लोग रोजी-रोटी कमाते हैं,लेकिन अभिनेताओं और निर्देशकों की जो नई पीढ़ी आई है वह बचपन से ही हिंदी पढ़ने और लिखने की अभ्यस्त नहीं है,अंग्रेजी में ही जीती है। उनसे यह सवाल पूछा जाना चाहिए कि,जब वह फिल्मों में काम करने के लिए मेहनत करके अभिनय,निर्देशन तथा फिल्म निर्माण और उसकी विभिन्न विधाएं सीखते हैं तो उस भाषा को सीखने में क्या समस्या है जो उनके काम की भाषा भी है और आय की भाषा भी है,लेकिन हमारे देश में और फिल्म उद्योग में इतनी समझ और अपनी भाषाओं पर स्वाभाविक अभिमान और प्रेम होता तो देश इस हाल में न होता। हिंदी फिल्म जगत की यह स्थिति अपने-आप में बेहद दुखद है। युवा पटकथा लेखकों के लिए प्रतियोगिता में भाग लेने की शर्त ही रोमन लिपि को बना दिया जाए तो यह लगभग आपराधिक हो जाता है। यह और भी दुखद है कि, निर्णायक मंडल में आमिर खान और राजू हिरानी जैसे मूर्धन्य फिल्मकार भी हैं। आमिर तो विशेष तौर पर भाषा के प्रति अपनी संवेदनशीलता और विचारशीलता के लिए जाने जाते हैं। उन्हें यह समझना चाहिए कि यह शर्त न केवल बेहद अनुचित और अनैतिक है,बल्कि यह पूरे हिंदी जगत की उभरती हुई प्रतिभाओं को प्रतियोगिता से बाहर रखेगी और इससे यह प्रतियोगिता ही प्रतिभाओं से वंचित रहेगी। कहानी और पटकथा लेखन एक मौलिक और रचनात्मक काम है,जिसमें अभिव्यक्ति की सहज भाषा हिंदी ही हो सकती है अटपटी रोमन नहीं। मैं यह भी आशा करता हूं आमिर और अमिताभ जैसे शीर्षस्थ अभिनेता-फिल्मकार इस मामले में फिल्म उद्योग में हिंदी को संवाद और पटकथा में पुनर्स्थापित करने की पहल का नेतृत्व करेंगे। इससे हमारी फिल्में बेहतर और समृद्धतर ही होंगी। इस मामले को केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के स्तर पर भी उठाया जाना चाहिए।

(साभार-वैश्विक हिंदी सम्मेलन)

-राहुल देव(वरिष्ठ पत्रकार)

जेसिका कॉक्स

हाथों से नहीं, पैरों से हवा में उड़ान भरती हैं जेसिका- अमेरिका के एरिज़ोना में जन्मी और वहीं रहने वाली जेसिका कोक्स (32) जन्म से अपंग हैं। उनके दोनों हाथ नहीं थे, इसके बावजूद वह पायलट है। बिना हाथों वाली वह दुनिया की पहली पायलट है, जो हाथों से नहीं, पैरों से प्लेन उड़ाती हैं।लेकिन यह कमजोरी ही उनकी ताकत बनी।

आज जेसिका वो सभी काम कर सकती हैं और करती हैं, जो आम लोग भी नहीं कर पाते। उनके पास 'नो रिस्टिक्शन' ड्राइविंग लाइसेंस है। जिस विमान को जेसिका उड़ाती है उसका नाम 'एरकूप' है। जेसिका के पास 89 घंटे विमान उड़ाने का एक्सपीरियंस है।

जेसिका डांसर भी रह चुकी हैं और ताइक्वांडो में ब्लैक बेल्ट भी हैं। वे 25 शब्द प्रति मिनट से टाइपिंग भी कर सकती हैं। जेसिका पर एक डॉक्युमेंट्री भी बन चुकी हैं 'राइट फुटेड' जिसे डायरेक्ट किया है एमी अवॉर्ड विनर 'निक स्पार्क' ने।

हर दिन महिला दिवस मनाएं, सम्मान दें

महिला शक्ति का मान-सम्मान और उसकी प्रतिष्ठा की रक्षा करने के साथ उनकी भावनाओं का आदर करना ही सही मायने में महिला दिवस मनाने जैसा हैक्क्योंकि, भारतीय संस्कृति में नारी के सम्मान को बहुत महत्व दिया गया है। संस्कृत में एक श्लोक है-

क्व्यस्य पूज्यंते नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवताक्क अर्थात,जहां नारी की पूजा होती है,वहां देवता निवास करते हैं,किंतु वर्तमान में जो हालात दिखाई देते हैं,उसमें नारी का हर जगह अपमान हो रहा है। उसे क्व्भोग की वस्तुक्क समझकर आदमी क्व्अपने तरीके सेक्क इस्तेमाल कर रहा है। यह बेहद ही चिंताजनक विषय है,लेकिन हमारी संस्कृति को बनाए रखने के लिए नारी का सम्मान कैसे होना चाहिए, इस पर विचार करना अति महत्वपूर्ण है। यही कहूँगा कि,

हम हर महिला,माता,बहन का सम्मान करें। अवहेलना से बचें, सम्मान को आगे रखें,आदर करके निरादर से बचेंद्य। भ्रूण हत्या और नारी की अहमियत न समझने के परिणाम स्वरूप ही महिलाओं की संख्या,पुरुषों के मुकाबले तेजी से घटी है। इंसान को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि,नारी द्वारा जन्म दिए जाने पर ही वह दुनिया में अपना अस्तित्व बना पाया है और यहां तक पहुंचा है। उसे ठुकराना या अपमान करना कतई सही नहीं है। भारतीय संस्कृति में महिलाओं को देवी,लक्ष्मी,दुर्गा व सरस्वती आदि का सम्मान दिया गया है,अतः आदमी द्वारा भी उसे उचित सम्मान दिया ही जाना चाहिए।

माता का सम्मान हो

क्व्मांक्क अर्थात माता के रूप में नारी,हमारी संस्कृति व धरती पर अपने सबसे पवित्र रूप में माँ ही है। माता यानी जननी माँ को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है,क्योंकि ईश्वर की जन्मदायिनी भी नारी ही रही है,लेकिन कलयुग कहें या इस बदलते समय में नवयुवकों (संतानों) ने अपनी मां को ही महत्व देना कम कर दिया है,जो चिंताजनक है। सब धन-मोह माया में अपना स्वार्थ तलाश रहे हैं,लेकिन जन्म देने वाली माँ के रूप में नारी का सम्मान उचित तरीके से नहीं कर रहे हैं।

हर क्षेत्र में लड़कियां अव्वल

अगर बदलती सोच व नारी की काबिलियत पर नजर डालें तो हम देखते हैं कि,आज के दौर की बालिकाएं हर क्षेत्र में बाजी मार रही हैं। कई परीक्षाओं की प्रावीण्य सूची में लड़कियां तेजी से आगे हो रही हैं। किसी समय इन्हें कमजोर समझा जाता था,किंतु इन्होंने अपनी मेहनत और मेधावी शक्ति (शक्ति का एक रूप दुर्गा) के बल पर हर क्षेत्र में प्रवीणता अर्जित कर ली है। इनकी इस प्रतिभा का सम्मान किया जाना और होते रहना चाहिए।

कंधे से कंधा मिलाकर चल रही

नारी का सारा जीवन पुरुष के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर चलने में ही बीत जाता है। पहले पिता की ममता की छाया में उसका बचपन बीतता है,लेकिन पिता के घर में भी उसे सारा कामकाज करना होता है। वजह कि,ससुराल में काम आएगाद्यद्यद्य। इसके अलावा अपनी पढ़ाई भी पर भी ध्यान देना होता है,वजह नौकरी होगी,अच्छा घर मिलेगा,जो क्रम विवाह तक जारी रहता है। उसे इस दौरान दोहरी-तिहरी जिम्मेदारी निभानी होती है,जबकि इस समय लड़कों को पढ़ाई-लिखाई के अलावा और कोई काम नहीं रहता है। कुछ नवयुवक तो ठीक से पढ़ाई भी नहीं करते हैं,जबकि उन्हें इसके अलावा और कोई काम ही नहीं रहता है। इस नजरिए से देखा जाए,तो नारी सदैव पुरुष के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर चलती ही नहीं रही है,बल्कि उनसे भी अधिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करती है। तब भी कभी गिनवाती नहीं है।द्य नारी इस तरह से भी सम्माननीय है।

विवाह के पूर्व व पश्चात

जैसे पूर्व में यह अपना दायित्व पिता के यंहा निभाती है,वैसे ही विवाह के पश्चात तो महिलाओं पर और भी बड़ी जिम्मेदारियां आ जाती है। पति,सास-ससुर,देवर-ननद की सेवा के बाद उनके पास अपने लिए समय ही नहीं बचता है । वे कोल्हू के बैल की भांति घर-परिवार में ही व्यस्त रहती हैं। तत्पश्चात संतान के जन्म के बाद उनकी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। घर-परिवार,चौका-चूल्हा देखने में ही एक आम महिला का जीवन कब बीत जाता है,उसे पता ही नहीं चलता है। कई बार तो ममतामयी घर-परिवार की खातिर अपने अरमानों का भी गला घोंट देती हैं। उन्हें इतना समय भी नहीं मिल पाता है कि,वह अपने लिए भी कुछ पल सुकून का जिएं। परिवार की खातिर अपना जीवन हवन की आहुति यों को समर्पित करने में ही बिता देती हैद्यद्य। भारतीय महिलाएं इसमें भी सबसे आगे हैं। परिवार के प्रति उनका यह त्याग उन्हें सम्मान का अधिकारी बनाता ही है।

बच्चों में संस्कार डालना भी जिम्मेदारी

बच्चों में संस्कार भरने का काम भी मां के रूप में नारी द्वारा ही किया जाता है। यह तो हम सभी बचपन से सुनते चले आ रहे हैं कि,बच्चों की प्रथम पाठशाला व गुरु माँ ही होती है। माँ के व्यक्तित्व-कृतित्व का बच्चों पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार का असर पड़ता है। अगर आज का नौजवान इतिहास उठाकर देखे तो,मां पुतलीबाई ने गांधीजी व जीजाबाई ने शिवाजी महाराज में श्रेष्ठ संस्कारों का बीजारोपण किया था। इसका ही परिणाम है कि,शिवाजी महाराज व गांधीजी को हम आज भी उनके श्रेष्ठ कर्मों की वजह से जानते हैं। इनका व्यक्तित्व विराट व अनुपम है। बेहतर संस्कार देकर बच्चे को समाज में उदाहरण बनाना,नारी ही कर सकती है।

अभद्रता की पराकाष्ठा

आजकल महिलाओं के साथ अभद्रता की पराकाष्ठा हो रही है। हम रोज ही अखबारों और न्यूज चैनलों में पढ़ते,सुनते व देखते हैं,कि महिलाओं के साथ छेड़छाड़ की गई या सामूहिक बलात्कार किया गया। इसे नैतिक पतन ही कहा जाएगा। शायद ही कोई दिन ऐसा बीतता होगा,जब महिलाओं के साथ की गई अभद्रता पर समाचार न हो।

अंत में यही लिखूंगा कि,

हम हर महिला, माता, बहन, का सम्मान करें। अवहेलना से बचे सम्मान को आगे रखे आदर करे निरादर से बचे भ्रूण हत्या और नारी की अहमियत न समझने के परिणाम स्वरूप महिलाओं की संख्या, पुरुषों के मुकाबले आधी भी नहीं बची है। इंसान को यह कभी नहीं भूलना चाहिए, कि नारी द्वारा जन्म दिए जाने पर ही वह दुनिया में अपना अस्तित्व बना पाया है और यहां तक पहुंचा है। उसे ठुकराना या अपमान करना कतई स्तय नहीं है। भारतीय संस्कृति में महिलाओं को देवी,लक्ष्मी, दुर्गा व श्रस्वती आदि का सम्मान दिया गया है अतः उसे उचित सम्मान दिया ही जाना चाहिए।

-संजय यादव

अलगाववाद पर नकेल कसने की जरूरत

जम्मू-कश्मीर के नौहट्टा में मस्जिद के बाहर ड्यूटी में तैनात पुलिस अधिकारी को कुछ उपद्रवियों की भीड़ ने पीट-पीट कर मार डाला। मारे गए अधिकारी अयूब पंडित की गलती बस इतनी-सी थी कि,उन्होंने मस्जिद के बाहर खड़े होकर अपनी ड्यूटी पूरी निष्ठा से निभाने की कोशिश की थी।

अपनी ड्यूटी के दौरान वे किसी भी तरह के संभावित दंगे की स्थिति से निपटने के लिए पहले से ही सतर्क होना चाह रहे थे और इसी क्रम में उन्होंने मस्जिद के आस-पास हो रही सभी तरह की गतिविधियों पर अपना ध्यान केन्द्रित कर दिया था।उनकी यह सक्रियता वहां खड़ी भीड़ को नागवार गुजरी, जिसके परिणामस्वरूप वहां खड़े उपद्रवियों के झुंड ने बिना किसी पूर्व चेतावनी के ही उन पर अचानक हमला बोल दिया।

हमला भी ऐसा कि,पीट-पीट कर उनकी जान ही ले ली। उनकी हत्या के दौरान हमलावरों ने उनके कपड़े तक फाड़ डाले। उन्हें यातनाएं दी और फिर क्रूरता की सारी हदें पार करते हुए उनकी हत्या कर दी। ऐसे में अब सवाल यह उठता है कि आखिर मस्जिद में उस वक्त ऐसा क्या चल रहा था जिसे लेकर डीएसपी अयूब विशेष तौर पर सतर्क हो गए थे? मस्जिद में आखिर ऐसी कौन-सी योजना बनाई जा रही थी जिसका संदेह होने पर डीएसपी अयूब की इतनी बेरहमी से हत्या कर दी गई?

इस संदर्भ में अगर समाचार एजेंसियों की मानें तो उस रात हुए इस दुखद वारदात से पहले शबे कद्र के मौके पर विशेष नमाज के पर उक्त मस्जिद में कुख्यात भारत विरोधी अलगाववादी नेता मीरवाइज पहुंचा था,जो नमाज के बहाने कोई संदेहास्पद योजना बना रहा था। योजना भी ऐसी जिसकी भनक ने एक पुलिस स्थिकारी की जान तक ले ली। इतना ही नहीं,बल्कि इस पूरी वारदात के दौरान भी वो वहीं मस्जिद के अंदर ही मौजूद था। मीरवाइज नाम के उस अलगाववादी नेता की उपस्थिति ने वहां खड़ी भीड़ को इतना अधिक उत्साहित कर दिया था कि,उन्होंने बिना किसी भूल के ही नमाजियों की सुरक्षा के लिए तैनात एक डीएसपी की हत्या कर दी। हत्या के दौरान भीड़ ने जो वहशीपन दिखाया है,उस पर गौर करें तो सहज ही यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि,कहीं-न-कहीं उपद्रवियों को मीरवाइज और उसके संगठन का संरक्षण प्राप्त था। जो उन्हें कुछ भी कर गुजरने की प्रेरणा दे रहा था। अन्यथा बिना किसी राजनीतिक संरक्षण के ड्यूटी पर पुलिस अधिकारी की हत्या का जोखिम उठाना आम लोगों के लिए भी इतना सहज नहीं होता,जितना मीरवाइज के गुण्डों ने दिखाया था। फिलहाल नौहट्टा की इस घटना ने जम्मू-कश्मीर की वर्तमान परिस्थिति की ओर इशारा करते हुए हमारे हुक्मरानों को सचेत किया है कि,अब वो समय आ गया है जब राजनीतिक संरक्षण प्राप्त इन अपराधियों पर हमें सख्ती दिखानी होगी। उन पर सख्त कारवाई करते हुए देश में अमन-शांति का माहौल बनाना होगा,जिससे विकास की रफ्तार को गति दी जा सके। इस घटना ने जहां एक ओर पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है ,वहीं प्रदेश की मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने इस हत्याकांड के खिलाफ कड़ी कारवाई करने के वजाए उपद्रवियों को हल्की चेतावनी देकर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर ली है। देश को हिलाकर रख देने वाले इस हत्याकांड के विरूद्ध पुलिस ने मामला दर्ज तो कर लिया है,पर इस हत्याकांड के असली गुनाहगार को वो छू भी पाएगी,इस बात पर संदेह बरकरार है। मीरवाइज जैसे ये अलगाववादी नेता हमारे देश के नेताओं के संरक्षण में पूरी तरह से सुरक्षित हैं। फिर पाकिस्तान से मिलनेवाला बेशुमार पैसा हमारे अपाहिज तंत्र से उन्हें बचाने के लिए पहले से ही तैयार बैठा है।

ये हमारे देश का दुर्भाग्य ही है,जो संसार के सबसे बड़े बेईमानों ने इसी धरा पर जन्म लिया है और वे अपने फायदे के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। शायद यही वजह है कि,इस देश को अपना सबसे बड़ा दुश्मन मानने वाले मीरवाइज,सैयद अली शाह गिलानी,यासीन मलिक जैसे गद्दार बेरोक-टोक पाकिस्तान से हर तरह की मदद लेकर घाटी को अशांत करने की कोशिश करते रहे हैं। अपने इसी षडयंत्र के तहत वे हमारे जवानों पर हमले का प्रयास करते आए हैं। ये वही नेता हैं,जिन्होंने धरती का स्वर्ग कहे जाने वाले जम्मू-कश्मीर को मौत का समंदर बना दिया है। जहां आए दिन अक्सर सेना और पुलिस के जवानों पर जानलेवा हमले की कोशिश की जाती है और इन हमलों में शहीद होने वाले जवानों के मृत शरीर के साथ अमानवीय बर्ताव किया जाता है। इतना सबकुछ होने बाद भी ये सभी कुसूरवार हमारे नेताओं के संरक्षण के कारण सुरक्षाबलों के हाथों से बच निकलते हैं,और समय-समय पर अपने मंसूबों को अंजाम देते हुए घाटी को अशांत कर रहे हैं। वे अपनी इन कायराना हरकतों से लोगों के दिलों में खौफ पैदा करना चाहते हैं,ताकि घाटी में उनकी हुकूमत चलती रहे। ये अलगाववादी जान बूझकर हमारी सेना को निशाना बनाते हैं,ताकि आम लोगों को अंधेरे में रखा जा सके और घाटी पर उनकी बादशाहत कायम रहे। इतना सबकुछ होने के बावजूद हमारी सरकारें इनके खिलाफ सख्त नहीं होती और न ही इनके खिलाफ कोई कार्रवाई करती है,बल्कि इन सबसे उलट हमारे कुछ नेता इन अलगाववादियों की जी-हुजूरी करते हुए नजर आते हैं। इनकी चापलूसी तक करते हैं। यही वजह है कि जिस सेना को ये एहसानफरामोश गालियां बकते हैं,उसी सेना के जवानों को उनकी सुरक्षा में तैनात कर दिया जाता है। इस तरह की खुशामद पाकर इनका हौंसला और अधिक बढ़ जाता है और फिर ये दोगले अलगाववादी नेता हमारे देश को नुकसान पहुंचाने के उद्देश्य से अधिक सक्रिय हो जाते हैं,क्योंकि उन्हें ये बात स्पष्ट पता होती है कि,जब तक उनके पास पैसे की ताकत है तब तक इस देश का लचर कानून उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता है,और वे इस देश में बिल्कुल सुरक्षित हैं।

वैसे समय के हिसाब से हमें अब यह सोचना होगा कि आखिर हमारे देश में ऐसी लचर कानून व्यवस्था क्यों बनाई गई है जो देश को इस हद तक नुकसान पहुंचा रही है? समय के साथ हमें यह विश्लेष्ण करना होगा कि,आखिर बोलने की आजादी के कानून के नाम पर देश के विरूद्ध बोलने वालों को कब तक बचाया जाएगा? वैसे अब तक जो भी हुआ हो,उसे जाने दीजिए,पर अब तो देश के अस्तित्व की रक्षा के लिए हमें अपने संविधान और कानून में बदलाव की जरूरत है। अब दरकार है देश के गद्दारों पर कसकर नकेल कसने की। अब समय आ गया है जब अलगाववाद की कमर तोड़कर उन्हें ऐसी स्थिति में पहुंचा दिया जाए,जहां से वे फिर कभी इस देश को नुकसान पहुंचाने के बारे में सोच न सकें। अब जरूरत है तो खुद को सजग और सक्षम बनाने की,जिससे इस देश में फिर कभी कोई और मीरवाइज या यासीन भटकल जैसे लोग ही पैदा न हों,जिनसे इस देश को खतरा है या जो इस देश को नर्क की राह पर ढकेलते हैं। अब आवश्यकता है तो हमारी सरकारों और सभी दलों को एकत्रित होकर एक ऐसी व्यवस्था बनाने की,जिसके बारे में सोचने भर से भारत विरोधी ताकतों की हालत पतली हो जाए। हमें जरूरत है आपस में मिलकर आतंकवाद और अलगाववाद का संपूर्ण अंत करने की,ताकि हमारे इस देश में शांति और सुकून का फूल खिलाकर इस देश को विकास की बुलंदियों के शिखर पर स्थापित किया जा सके और संसार में शांति-सृमद्धि के अगुवा रूप में भारत पूरे विश्व का नेतृत्व कर सके।

- मुकेश सिंह

‘वुमन आवाज’ पुस्तक विमोचित

इंदौर । स्त्री शक्ति द्वारा संचालित %वुमन आवाज़% द्वारा देशभर की महिला साहित्यकारों के परिचय और रचनाओं को सहेजकर अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से पुस्तक प्रकाशित की जिसका विमोचन बुधवार को सांसद व अभिनेत्री सुश्री रुपा गांगुली एवं अभिनेत्री सुश्री पूनम झंवर, नवभारत टाईम्स दिल्ली से सुश्री मंजरी चतुर्वेदी, इंडिया न्यूज दिल्ली से सुश्री कंचन डोगर व न्यूज नेशन दिल्ली से सुश्री पिनाज त्यागी ने दुआ सभागृह में किया । वुमन प्रेस क्लब द्वारा आयोजित मीडिया अवार्ड कार्यक्रम में मातृभाषा उन्नयन संस्थान व वुमन आवाज की सहभागिता के साथ प्रीतमलाल दुआ सभाग्रह वुमन प्रेस क्लब के आयोजन मीडिया अवार्ड में यह आयोजन हुआ। संस्था वुमन आवाज द्वारा देश की 60 महिला साहित्यकारों की कृतियों को सहेज कर पुस्तकबद्ध कर %वुमन आवाज% तैयार की जिसका विमोचन हुआ। आयोजन में वुमन आवाज की संस्थापिका शिखा जैन व सह संस्थापिका डॉ.प्रीति सुराना ने इस कृति को तैयार किया है।

वुमन आवाज व अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन की यह पहल निश्चित तौर पर महिलाओं के हौसलों में वृद्धि करेगा। उक्त जानकारी संस्था के संवादसेतु शिरिन भावसार ने दी।

हिन्दीग्राम को द्वय आचार्य श्री ने दिया आशीर्वाद

कुक्षी 7 पुण्यसम्राट लोकसंत राष्ट्रसंत श्रीमद विजय जयंतसेन सुरिश्वर जी से पट्टधर गच्छाधिपति जैनाचार्य नित्यसवेन सुरिश्वर जी महाराज साहब, जैनाचार्य जयरत्न सुरिश्वर जी महाराज, मुनि चारित्ररत्न विजय जी महाराज, मुनि प्रशम सेन विजय जी महाराज के साथ हिन्दी ग्राम के संस्थापक *डॉ.अर्पण जैन %अविचल%* ने भेंट की 7 गुरुदेव व मुनिभगवन्तों ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने हेतु खूब आशीर्वाद दिया और अभियान का समर्थन करते हुए मुनिराज चारित्ररत्नविजय जी ने व्याख्यान आदि में भी हिन्दी में हस्ताक्षर करने हेतु प्रेरणा प्रदान करना निश्चित किया 7 साथ में रहें मधुकर संदेश के सह सम्पादक स्वस्तिक जैन भी उपस्थित रहें 7

हिन्दी के सम्मान में हर भारतीय मैदान में

जैनाचार्य नित्यसेन सूरीश्वर जी, आचार्य जयरत्न सूरीश्वर जी, मुनिश्री चारित्ररत्न जी, मुनि श्री प्रशमसेन जी के साथ हिन्दीग्राम के संस्थापक डॉ.अर्पण जैन 'अविचल' की भेंट

पुस्तक समीक्षा

-मुकेश दुबे

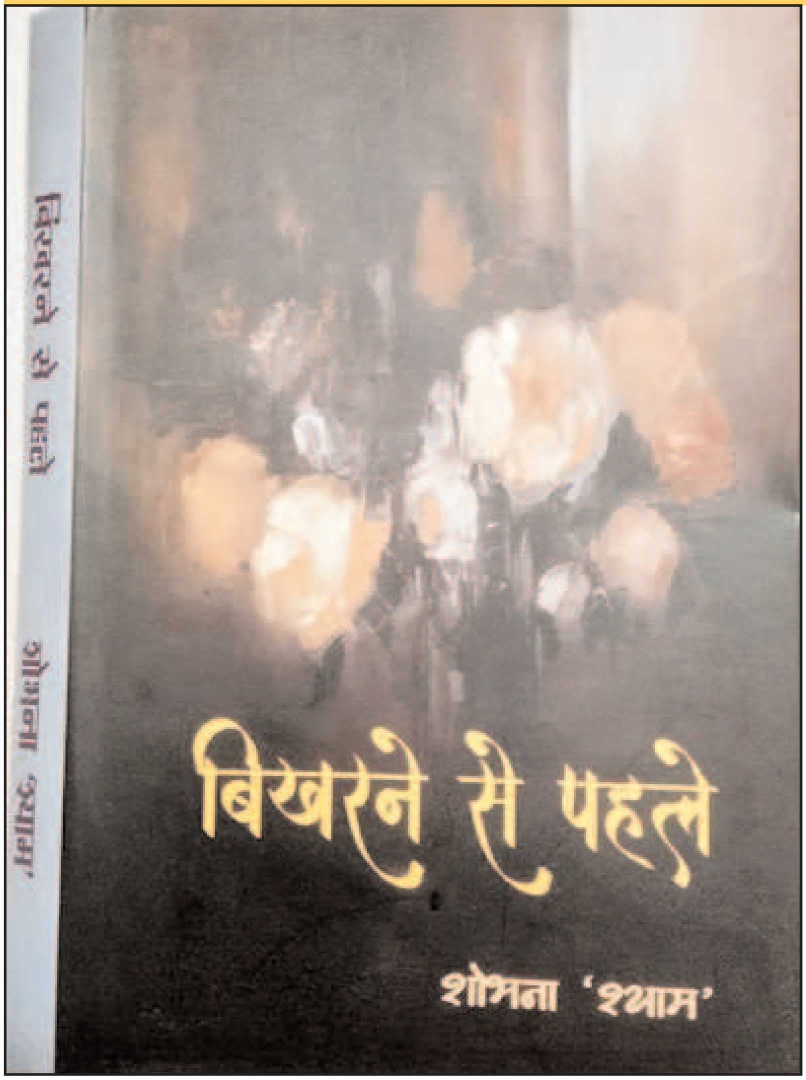

कभी-कभी मनःस्थिति बड़ी विचित्र लगती है। किसी काम में एकाग्रता लाना दुश्कर प्रतीत होता है। ऐसे में सबसे अच्छा लगता है कुछ पढ़ना.. ऐसा जिसे पढ़कर उन अवसाद के पलों से बाहर आना संभव हो। या तो विशुद्ध हास्य अथवा काँटे से काँटा निकालना यानि जीवन के सत्य को शब्दों में ढालकर लिखा दर्द... कसक या पीड़ा समाज की, जिसमें कथ्य अपने आसपास के हों, पात्र जाने पहचाने व शैली आडंबर से दूर विशुद्ध विषय को उभारने वाली हो।

और इन सारी खूबियों का समवेत समावेश मिलता है एक विलक्षण रचनाकार.. जिसका परिचय किसी एक विधा तक सीमित नहीं है। साहित्य व कला के हर पहलू की सशक्त हस्ताक्षर... मिलनसार व इंसानियत की मुकम्मल तस्वीर आदरणीय शोभना %श्याम% जी के लेखन में।

हाल ही में पुस्तक मेले में आपने अपना सद्यप्रकाशित लघुकथा संग्रह ¤बिखरनेङ्कसेङ्कपहले भेंट किया था।

लगा इस कठिन समय में उसे पढ़ने से विचलित मन शांत होगा। शोभना जी की लेखनी से परिचय कुछ समूहों में उनकी लघु कथाओं को पढ़कर हुआ था। आपके भावों की सहजता व कथ्य की सादगी ने बड़ा प्रभावित किया और बात प्रतिक्रिया से बढ़कर विमर्श तक पहुँचने लगी। जब कभी इस विधा की पेचीदगियों पर कहीं संशय के बादल मंडराये, आपसी बातचीत में हमने हल तलाशने का प्रयास किया। जबकि लघुकथा लेखन से बहुत करीब नहीं हूँ परन्तु शोभना जी का अपनत्व था जिसने इस काबिल समझा। दोस्तों, मुख्य विषय पर आते हैं। इस संग्रह ÷बिखरने से पहले÷ को जब पढ़ना आरम्भ किया पहली कथा %समझौता% ने हालात से जूझती शिप्रा के आजीविका के लिए संस्कारों के प्रति तटस्थ रहने के फ़ैसले ने चौंका दिया।

उसके बाद शीर्षक कथा %बिखरने से पहले% उम्र के चौथेपन के बिखराव को सहेजती लगी। ऐकाकीपन के दंश को झेलते दो बुजुर्गों का सामीप्य बेटे को खटका लेकिन पत्नी के तर्क के सम्मुख निश्शब्द हो गया। यहाँ एक स्त्री की वेदना को महसूस किया एक स्त्री ने जो बहू थी.... यह समीकरण आशा की किरण दिखला गया।शोभना जी के लेखन की यह विशेषता है और सशक्त पहलू भी कि आप जीवन के अनुभवों को गूँथकर कथा बुनती हैं। आपकी रचनाओं में कल्पना की जगह यथार्थ उभरकर सामने आता है शायद यही वजह है कि पाठक अपने आप को शब्दों में तलाशता है स्वयं को। रिश्तों के बिखराव और संघर्ष को उकेरने में आपको महारथ हासिल है। संजीदगी के साथ व्यंग्यात्मक पुट कथाओं को उत्कृष्टता की ओर ले जाकर जिस जगह छोड़ता है वह अंत नहीं आरम्भ होता है पाठक के मन-मस्तिष्क में विचारों के मंथन का।

आपकी कहानियों में एक पूर्णता या मैच्योरिटी का भाव नज़र आता है। गंभीरता से कथ्य का निर्वहन जिसमें कहीं जल्दबाजी नहीं दिखती।

इस संग्रह में 80 से अधिक कथाएँ हैं और हर कथा अपने आप में विशिष्ट है। कभी सामाजिक सरोकार कभी मन का अंतर्द्वंद, कभी रिश्तों की दरार कहीं लालच का व्यापार... विस्तृत कैनवास है आपकी कलम का। जी चाहता है हर कथा पर बात करने को मगर इससे संग्रह के प्रति पाठकों की जिज्ञासा कम होने का अंदेशा है।

फिर भी कुछ कथाओं ने गहराई तक स्पर्श किया है। जिनावर, मास्टर बैडरूम, मातृ दिवस, मुआवजा, फोटो शॉप, साँझ, सिन्दूरी रंग, बंधन, पैबंद, जुराबें, टेक केयर, अहिल्या व भला मानुस।

बस एक बात अवश्य कहना चाहूँगा, समकालीन लघुकथा लेखन में शोभना %श्याम% जी का विशिष्ट स्थान है। यह पहला संग्रह है और हर पहला प्रयास संभावनाओं से भरपूर होता है। शोभना जी की सशक्त कलम ने इस प्रयास से ही दस्तक दे दी है लघुकथा लेखन में अपनी सशक्त उपस्थिति की। अपार संभावनाएँ दिख रही हैं आपके लेखन में, ख़ामोशी से बिना शोर शराबे और इस विधा पर पांडित्य प्रदर्शन के यह साबित कर दिया है कि होश वालों को खबर क्या... बेखुदी क्या चीज़ है !! हृदयतल से बधाई और आभार इस अद्भुत संग्रह को मुझे भेंट करने के लिए। आशा है शीघ्र ही इक नये संग्रह के साथ मुलाकात होगी शोभना जी से... अनन्त शुभकामनाएँ ।

किसी कृष्ण की तलाश करें

मनुष्य का जब जन्म होता है तो वह प्रथम तीन से जुड़ता है। पहला स्थान माँ का है। माँ का वह अभिन्न अंग है,पिता उसके लिए सूचना है और प्रसव के

समय धाय से भी वह अज्ञात भाव से परिचित हो जाता है। इन तीनों से जुड़कर वह इस धरती पर लीला शुरू करता है। जीवन की यात्रा में चलते-चलते चाहे किसी परिस्थिति के भंवर में डूब जाए,थककर चूर-चूर हो जाए,अपंगु हो जाए या गिरते-पड़ते मंजिल तक ही पहुंच जाए,पर समय का चक्र अबाध गति से चलता रहता है। सुबह और शाम अपने नियमित रूप से अपने नियमित समय पर न जाने कबसे आते और जाते रहे हैं। हमारा जीवन इस चक्र के साथ बंधा हुआ है। जीवन जब शुरू होता है,तो हम इस भागते हुए समय के किसी अंश पर निशान लगाकर चल पड़ते हैं और जब जीवन समाप्त होता है तब किसी अंश पर निशान बना देते हैं। तब कहते हैं-शांति,शांति,शांति। इन दो निशानों के बीच हम दुख-सुख का माप-तौल करते हैं,हँसते हैं और रोते हैं। असंख्य कामनाएं कर, उनकी पूर्ति-आपूर्ति पर प्रसन्नता और शोक प्रकट करते हैं। यही जीवम की सीमा है,यही जीवन का क्रम है।

संबंध बनाए जाते हैं,और फिर संबंध से अधिकार पैदा होता है,पर कभी-कभी संबंध कब और कैसे बना-यह समझाना कठिन हो जाता है। परिस्थितियाँ अपने-आप ही यूं करवटें बदलती हैं कि,गहरा से गहरा संबंध भी पलभर में टूटकर बिखर जाता है। इसके विपरीत अनायास ही संबंध जुड़कर भी मुखरित हो उठता है कि,एक का दुःख दूसरे का दुःख और एक का सुख दूसरे का सुख कहने में तनिक भी दुविधा या हिचक का आभास नहीं होता।

जिंदगी के अज्ञात क्षणों में मनुष्य कभी-कभी चलते-चलते ऐसे चौराहे पर पहुंच जाता है,जहां से आगे का रास्ता कठिन ही नहीं,बल्कि असंभव-सा जान पड़ता है। वह पीछे मुड़कर देखता है,तो अतीत के सम्बन्धों से इतनी दूरी बढ़ गई होती है कि,पीछे लौटना संभव नहीं होता है। वह अंधेरी रात के समान भयानक लगने वाले समय तथा घने जंगल के समान सांय-सांय करने वाले अनजान स्थान के सीने पर अकेला खड़ा-खड़ा यह सोचने लगता है कि क्या करूं,कहां और किधर जाऊं ?,पर कहीं से कोई आवाज नहीं आती,कोई सुझाव नहीं देता-कोई रास्ता दिखाई नहीं पड़ता है,और मनुष्य फिर अपने मष्तिष्क पर जोर देकर स्वयं से बिलखकर पूछता है-क्या करना चाहिए ?

अनिश्चित मार्ग पर चलते समय केवल विवेक का सहारा होता है। इंसान यदि साधारणतया स्वाभाविक तौर पर हो जाने वाली गलतियों का ध्यान न रखे,तो

संभवत उसे अत्यधिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है। जब दिशा अंजान हो तो ऐसा लगता है कि,मैं अज्ञात सागर में बढ़ता जा रहा हूं,और फिर जब लक्ष्य दुर्लभ हो जाए,या ऐसा हो जिसमें कई मानव जीवन सिमटे पड़े हों,तो उत्सुकता और अनिश्चित फल के कारण ह्रदय की गति अस्वाभाविक हो उठती है। फिर भयमिश्रित शंका रह-रहकर तनहा इन्सान को दबोच लेती है।

लाख यतन करने पर भी जीवन कभी-कभी अनायास ही कष्टदायक बन जाता है और अंततः मनुष्य बुद्धिहीन हो यह सोचने लगता है,कि आखिर मैंने ऐसी कौन- सी गलती की कि,जिसका परिणाम मुझे यह मिला। हर पल ह्रदय में दूसरों के लिए प्यार एवं सहानाभूति रखने पर भी विधाता कभी-कभी कदम-कदम पर ठोंकरों का अनुभव देता है,जबकि परोपकारी और दयालु ह्रदय के लिए संसार एंव प्रकृति अपनी आंखें बिछाती आई है।

मनुष्य के उत्थान या पतन में,विकास या ह्रास में, ऊपर उठने या गिरने में जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है,वह है-चौथा व्यक्ति। अर्जुन परम भाग्यशाली थे कि,उनको चौथे विश्वस्त व्यक्ति भगवान कृष्ण मिले। उनकी अनंत कृपा से उनके सहचर्य और पथ प्रदर्शन से उन्हें विजय मिली।

महारथी कर्ण के साथी थे-शल्य,जो कदम-कदम पर उसे निराश कर उसका तेजों भंग करते रहे। कर्ण के पतन का यही कारण था। इतिहास साक्षी है,जिन

महापुरूषों को अपने जीवन में कृष्ण जैसे साथी मिले चाहे उनका नाम चाणक्य हो,चाहे समर्थ रामदास हो, वे ही अपनी शक्तियों को विकसित कर पाए हैं।

प्रयास अनवरत प्रयासज्यही जिंदगी है,इसी में जिंदगी का लक्ष्य निहित है।

इच्छा की उत्पत्ति और प्रयास का प्रारंभ दोनों बहुधा साथ-साथ होता है। प्रयास फलीभूत हुआ और इच्छा की पूर्ति हुई कि प्रयास की गति में अवरोध आया। यही है जीवन जिसमें मनुष्य निशि-दिन भटक रहा है। इच्छाओं का जाल कितना विस्मृत है,जिसमें मनुष्य सब-कुछ भूला हुआ है। मस्तिक और ह्रदय इच्छाओं की पूर्ति में अनवरत रत है,फिर भी जीवन के अंत में कुछ इच्छाएं अपूर्ण रह ही जाती हैं। प्रयास के मार्ग पर चलते-चलते मनुष्य थककर पलभर के

लिए रूकता है और फिर चल पड़ता है-प्यासा-सा मंजिल की ओर। इस जीवन में विश्राम कहाँ,शांति कहाँ,संतोष कहाँ? बस संघर्ष ही संघर्ष है-संघर्ष ही सत्य है,संघर्ष ही जीवन है,संघर्ष ही इच्छा है,संघर्ष ही

लक्ष है,संघर्ष ही आदि है,संघर्ष ही अंत है। इसी संघर्षमय जीवन में अक्सर वो शक्ति उसका मार्ग निर्देशन करती है,जिसे हम ‘भगवान’,क्कखुदाक्क या क्कभाग्यक्क के नाम से पुकारते हैं,पर वह अवसर कब आए,वह शक्तियां,भाग्य उसका हाथ कब थाम ले- इसमें गहरा मतभेद है।

साधारणतया जब मनुष्य थककर सोचने लगता है कि, वह आगे कुछ नहीं कर सकेगा,वह इस जीवन को और आगे नहीं धकेल सकेगा और भगवान को अब सच्चे अर्थ में हम पर दया करनी चाहिए-तब हम देखते हैं कि,उस समय क्कसमय और भगवानक्क दोनों अंतरिक्ष में खड़े तमाशा देखते रहते हैं। इंसान घबराकर आंसू भरी आंखों से नीले अन्तरिक्ष की ओर देखता है,पर शून्य से दृष्टि टकराकर मूर्छित होकर स्वयं तक अपने-आप लौट आती है। फिर उसे भगवान या भाग्य के अस्तित्व पर शंका-सी होने लगती है। वह सोचता है-कहीं हमने उसको तो सब कुछ नहीं मान लिया,जो कुछ भी नहीं है,पर जीवन चलता है-मौन वातावरण में विचारों का तारतम्य चलता रहता है। जब कोई साथ नहीं होता,तो बीती हुई अनुभूतियों के आधार पर विचार लहराने लगते हैं। मनुष्य अनजाने में सोचने लगता है-कब क्या हुआ,क्यों हुआ,कैसे हुआ ? सुखद और दुखद घटनाओं और अनुभूतियों का जैसे प्रवाह फूट पड़ता है,और इंसान पलभर में विचारों के पंख पर उड़ता हुआ कहीं से कहीं पहुँच जाता है। यादें सजग हो उठती हैं,और मानव शरीर प्रभावित हो हंसने या रोने लगता है। इन ऊंचे-नीचे विचारों,शंकाओं,समस्याओं और प्रतिपल मिटती-बनती आशा-निराशा की लहरों के बीच से बहता हुआ समय के साथ धीरे-धीरे समीप आते हुए उस किनारे की ओर बढ़ता जाता है,जिसे हम मौत कहते हैं। इस प्रयासरत और संघर्षमय जीवन में माता-पिता हमारी नियती हैं। धाय अल्प काल्पनिक है,चौथा व्यक्ति हमारी तलाश है,हमारी रूचि है,हमारा पुरूषार्थ है। आओ,करोड़ों की इस भीड़ में हम किसी कृष्ण की तलाश करें,नहीं तो अपने भीतर किसी कृष्ण की आदर्श मूर्ति की सृजनता कर एकाकी गंतव्य पथ

पर सकारात्मकता से चल पड़ें,अभय मजबूत कदमों से।

-नसरीन अली 'निधि'

पर्यटन विकास से खुलेंगे रोजगार के द्वार

हिमाचल प्रदेश को प्रकृति ने भरपूर प्राकृतिक सुन्दरता,स्वच्छ जल,जंगल,पहाड़,नदियों और स्वच्छ परिवेश से नवाजा है। यहां वर्ष पर्यन्त किसी–न–किसी क्षेत्र में मेलों का आयोजन भी होता रहता है। यहां के 2 हजार से ज्यादा प्रमुख देवस्थलों पर लोग अपनी आस्था के पुष्प अर्पित करते हैं।

यहां के मेलों में कुल्लू का दशहरा,रामपुर का लवी,चम्बा का मिंजर,सुजानपुर की होली,बैजनाथ तथा मंडी का शिवरात्रि महोत्सव,लाहुल का हाल्दा पर्व,स्पीति घाटी में देचांग और फाग्ली,भागा घाटी का गोच्ची उत्सव,ऊना में बाबा बड़भाग सिंह मेला और बौद्ध अनुयायियों का लोसर पर्व विश्व प्रसिद्ध है ही,वहीं रेड-डी-हिमालया,माउंटेन बाइकिंग,रिवर राफ्टिंग और बिलिंग में पैराग्लाइडिंग जैसे साहसिक खेल पर्यटन से यहां के युवाओं को स्थाई रोजगार के विकल्प भी मिले हैं। होटल तथा होम स्टे द्वारा भी आतिथ्य सत्कार की दर में वर्ष-दर-वर्ष बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है,लेकिन अभी भी वैश्विक पर्यटन परिदृश्य की तुलना में भारत और हिमाचल प्रदेश को कई सुधारात्मक कार्यों को सिरे चढ़ाने की जरुरत है। इससे न केवल पर्यटकों की आमद में बढ़ोतरी होगी,बल्कि हमारे युवाओं के लिए इस क्षेत्र में रोजगार के द्वार भी खुलेंगे और राज्य की आर्थिकी को भी सहारा मिलेगा। हिमाचल प्रदेश को पर्यटन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए कई संस्थाओं द्वारा अनेक पुरस्कारों से भी नवाजा गया है। इसमें 2015-16 की अवधि के लिए नेशनल गोल्ड ई-गवर्नेंस अवार्ड, की अवधि में ही बेस्ट इंडियन डेस्टिनेशन फार एडवेंचर अवार्ड और सीएनबीसी द्वारा बेस्ट माउंटेन एंड हिल डेस्टिनेशन अवार्ड भी शामिल है। राज्य में जनवरी से दिसम्बर 2016 की अवधि में कुल 1.79 करोड़ 97 हजार 750 घरेलू पर्यटकों और 4.52 लाख 777 विदेशी सैलानियों ने सैर की,वहीं भारत के परिप्रेक्ष्य में देखें तो जनवरी से जुलाई 2017 के बीच कुल 56.74 लाख विदेशी पर्यटकों की आमद रहीद्य यह गत वर्ष इसी अवधि की तुलना में 15.7 फीसदी ज्यादा है। वर्ष 2016 के 11 महीनों में कुल 79 लाख विदेशी सैलानियों ने भारत की सैर की,और इससे भारत को 1.39 लाख करोड़ रुपयों की कमाई हुई। विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार वर्ष 2007 में कुल अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक प्राप्तियां 856 अरब डालर की थीं और इसमें भी मिश्र,फिजी और थाईलेंड जैसे राष्ट्रों की महत्वपूर्ण हिस्सेदारी थी। आप यहां गौर फरमाएं तो पाएंगे कि,प्राचीन भारतीय नाम वाले श्यामदेश-थाईलेंड जैसे मात्र 7 करोड़ की जनसँख्या वाले देश में ही प्रतिवर्ष लाखों पर्यटक सैर-सपाटे के लिए पहुँचते हैं। वहां की सरकार द्वारा पिछले तीन दशकों में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कई नीतियों और कार्यक्रमों की रूपरेखा से यह उपलब्धि हासिल की गई है। विश्व पर्यटन संगठन के आंकड़ों के अनुसार 2016 में 1.235 बिलियन अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों ने विश्वव्यापी सैर की,जिसमें सर्वाधिक 82.6 मिलियन पर्यटकों ने फ्रांस की सैर की थी। फिर क्रमशः अमेरिका,स्पेन,चीन,इटली,ब्रिटेन,जर्मनी,मेक्सिको,थाई लेंड और दसवें स्थान पर तुर्की में पर्यटक पहुँचे। एशिया में पर्यटक आवाजाही के मामले में भारत 8वें स्थान पर है। चीन पहले और थाईलेंड दूसरे स्थान पर है।इतना ही नहीं,थाईलेंड जैसे छोटे से द्वीपीय देश ने 2016 में पर्यटन द्वारा 49.9 बिलियन डालर की कमाई की,जबकि इसी अवधि में भारत की आय मात्र 22.4 बिलियन डालर थी। हिमाचल प्रदेश के वन विभाग ने 2005 में ईको पर्यटन नीति तैयार की थी। इसका मकसद प्रदेश में ऐसा माहौल तैयार करना था,ताकि प्रकृति के सानिध्य का पर्यटक भरपूर आनंद भी उठाएं और यहाँ के सांस्कृतिक एवँ प्राकृतिक परिवेश को भी कम-से-कम नुकसान पहुँचे। इसी उद्देश्य से 16 ईको सर्किट्स प्रोजेक्ट्स की रुपरेखा तैयार भी की गई थी,ताकि ग्रामीण एवँ दूरदराज के इलाकों के नागरिकों के लिए इसके जरिए रोजगार एवँ स्वरोजगार के साथन जुटाए जा सकें।

इस योजना के तहत विदेशी सैलानियों के साथ-साथ विद्यार्थियों को भी जोड़ने और ट्रेकिंग रूट तैयार करना था। इसके अलावा प्रदूषण पर नियंत्रण तथा नशा विरोधी अभियान को भी इससे जोड़ने की योजना थी। हिमाचल के नैसर्गिक सुंदरता से भरपूर दुर्गम क्षेत्रों में घरेलू तथा विदेशी सैलानियों को पहुंचाने की योजना वाले इस प्रोजेक्ट से हिमाचल में पर्यटन को गति मिल सकती है,यदि इस योजना को सिरे चलाया जाए। हाल ही में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान(शिमला)द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में क्संरक्षित क्षेत्रों के आसपास रहने वाले सीमांत समुदायों के लिए आजीविका विकल्प के विकास की दिशा में एकीकृत दृष्टिकोणक्र विषय पर कार्यशाला में ईको टूरिज्म और होम स्टे योजनाओं को अपनी समग्रता में लागू किए जाने की वकालत की गई, ताकि यहां के स्थानीय निवासियों को भी रोजगार उपलब्ध हो सकें और पर्यटकों को भी रहने-ठहरने की सुंदर व्यवस्थित सुविधाएँ मिल सकें।वर्तमान समय में तकनीक,सड़क तथा परिवहन ढाँचे में विकास,कम लागत वाली एयरलाईनों,अधिक मात्रा में हवाई अड्डों का निर्माण इत्यादि की उपलब्धता बढ़ाने की जरुरत है। अब लोगों की जीवनशैली में परिवर्तन आ रहा है और अंतरजाल की सुलभता से सूचना एवं जानकारी में बढ़ोतरी के अलावा सस्ते यात्रा पैकेज के कारण भी पर्यटकों की तादात में वृद्धि दर्ज की गई है। लिहाजा, भारत एवं हिमाचल प्रदेश में ज्यादा-से-ज्यादा घूमने योग्य स्थलों की पहचान करके तथा उन्हें उन्नत बनाकर और वहां रहने-खाने की सुंदर सुविधाएँ प्रदान करना आवश्यक हो गया है। अब तो सामान्यतःघूमने- फिरने के अलावा पर्यटन में भी नए क्षेत्रों को जोड़ा गया है। चिकित्सा पर्यटन,शैक्षिक, साहित्य,निर्माणात्मक,साहसिक, योग तथा एकाग्रता शिविर आदि क्षेत्र भी पर्यटन के दायरे में आ गए हैं। और तो और,युध्दभूमि क्षेत्र,नरसंहार वाले स्थल और आतंकवादी घटनाओं के गवाह रहे स्थल भी कला पर्यटन के नाम पर्यटकों को अपने यहां आकर्षित कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त आज ग्रामीण पर्यटन को भी बढ़ावा देने की जरुरत है। भारत के लगभग 6लाख गांवों में 74 प्रतिशत आबादी रहती है,वहां की सुध लेना भी जरूरी है। भारतीय जीडीपी में पर्यटन का योगदान 9.6 फीसदी है और यहां 6.70 करोड़ लोग प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से पर्यटन उद्योग से आजीविका कमा रहे हैं,लेकिन वर्ल्ड ट्रेवल एंड टूरिज्म कौंसिल का कहना है कि,पर्यटन क्षेत्र में कौशल के अभाव के चलते 12 लाख नौकरियां दांव पर भी लगी हुई हैं। इसलिए,आतिथ्य सत्कार से जुड़े गुणवतायुक्त पाठयक्रमों एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा युवाओं को प्रशिक्षित किया जाना अनिवार्य हो गया है। आज पर्यटकों को सुविधाओं से सुसज्जित आवास,गुणवत्तायुक्त भोजन के अलावा सैर-सपाटे के लिए साफ-सुथरी गाड़ियों को उपलब्ध करवाना समय की माँग है। हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास विभाग ने इन दिनों प्रदेश के 53 होटलों में बुकिंग पर 20-40 प्रतिशत छूट की घोषणा की है,जो स्वागत योग्य पहल है। हिमाचल प्रदेश सरकार को चाहिए कि,अधिक पर्यटकों वाली जगहों पर अमृतसर में सारागढ़ी सराय की तर्ज़ पर पार्किंगयुक्त बहुमंजिला आवासीय इकाईयों का निर्माण करवाया जाए तथा तकनीक के उचित इस्तेमाल से आनलाईन बुकिंग की व्यवस्था की जाए। हमें ध्यान रखना होगा कि,पर्यटकों को बेहतर सड़क,संचार,सुरक्षा तथा आधुनिक सुविधाओं के दम पर ही अपने यहां आने के लिए हम राजी कर सकते हैं।

–अनुज कुमार आचार्य

जनसुनवाई में जीव-जन्तु

आज पहली बार गाँव में जीव-जन्तुओं की सुनवाई के लिए रात्रि चौपाल का विशेष आयोजन रखा गया है। समस्त क्षेत्रीय जीव-जन्तु पूरी तैयारी के साथ चौपाल पर आते हुए राजमार्गों पर दिखाई दे रहे हैं। सभी जीव-जन्तु अपने-अपने समूह में चले आ रहे हैं। जीव-जन्तुओं में शाकाहारी,मांसाहारी,उड़ने वाले,रेंगने वाले तथा फुदकने वाले प्रजातियों के जीव प्रस्तुत हो रहे हैं। गाँव में अजीब चहल-पहल है। जन्तुओं के स्वागत सत्कार के लिए गली-मोहल्लों को सजाया गया है। घरों में साफ-सफाई,घरों के बाहर रंगोली,तोरण द्वार तथा रंग-बिरंगी वन्दनवारों से सजावट दिखाई दे रही है। दीवारों को विकास सम्बन्धी पोस्टरों से सजाया गया है,जिन पर स्वच्छ भारत मिशन,बेटी बचाओ-बेटी बढ़ाओ आदि नारे अंकित है।

समूचा गाँव रोशनी से जगमगा रहा है। चौपाल को जीव-जन्तुओं की विशेष कलाकृतियों से सजाया गया है,जो दूधिया रोशनी में नहाती हुई दिखाई दे रही है। सभा स्थल रंग-बिरंगी रोशनी से दर्शकों को आकर्षित कर रहा है।

इस आयोजन की विशेषता यह भी है कि,स्थानीय पशु समाज ने विशेष तैयारी के साथ आगन्तुक जीव-जन्तुओं का स्वागत करने की व्यवस्था की है। जन्तुओं के गाँव में प्रवेश करते ही पशु प्राणियों ने रोली,तिलक तथा मालाएं पहनाकर सम्मान किया। मुख्य द्वार पर शहनाई वादन के साथ भारतीय परम्पराओं के अनुसार उनकी अगवानी करते हुए नाच-गान के साथ उन्हें सभा स्थल तक पहुँचाया गया। ग्रामवासियों में विशेष हर्ष व उल्लास था। भारी संख्या में पशु वर्ग के साथ ही जनसमुदाय भी रात्रि चौपाल पर सुनवाई कार्यक्रम को देखने हेतु उमड़ पड़े। सभा स्थल का दृश्य किसी कुम्भ से कम नहीं था।

पंचायत भवन के विशाल प्रांगण में आज का यह अनूठा कार्यक्रम था। सभी जीव-जन्तु अपनी-अपनी बिरादरी के समूह में चौपाल पर उपस्थित हुए। चौपाल पर मंच के दाईं और स्थानीय अधिकारी तथा मुख्य मंच पर क्षेत्रीय विधायक के साथ जिलाधीश महोदय आसीन थे। मंच के बांई ओर हरे रंग की गद्दीदार कुर्सियों पर जिले के जिलाधिकारीगण विराजमान है। प्रत्येक वर्ग के जन्तुओं के प्रमुख प्रतिनिधियों के लिए मंच के निकट बैठक व्यवस्था है,जिसमें हाथी,शेर, लोमड़ी,मगरमच्छ,मोर,खरगोश,बगुला,मछली,अजगर और तोता तथा कछुआ प्रमुख थे। जन्तु वर्ग की सार-सम्हाल तथा उन्हें किसी भी प्रकार की असुविधा न हो,इसलिए स्थानीय पशु-प्राणियों ने अपनी ओर से ऊँट को अपने वर्ग का नेतृत्व करने हेतु विशेष अनुमति से चौपाल पर प्रस्तुत किया।

क्कजनसुनवाईक्क का कार्यक्रम प्रारम्भ होने की उदघोषणा हुई। स्वागत गीत के बाद जिलाधीश महोदय ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया-क्कमेरे क्षेत्र के समस्त जीव-जन्तु महानुभाव! आज बड़ी प्रसन्नता है कि,सभी वर्ग के जीव-जन्तु यहाँ उपस्थित है। मैं प्रशासन की ओर से आप सभी का हार्दिक स्वागत करता हूँ,और यह विश्वास दिलाता हूँ कि आपकी जो भी समस्याएं हैं,उनका यथासम्भव समाधान किया जाएगा। विधायक के साथ ही सभी अधिकारी बन्धुओं से भी आग्रह है कि,हमारे ही इन अन्तरंग मूक प्राणियों की गम्भीरतापूर्वक सुनवाई करते हुए इनकी मांगों को तत्परता के साथ पूरी करने में सहयोग कराएं।क्क

विधायक ने भी खड़े होकर सभी का हाथ जोड़कर सम्मान किया। जन्तु वर्ग के प्रमुख प्रतिनिधि क्कहाथीक्क ने विधायक और जिलाधीश का आभार स्वीकारते हुए खड़े होकर कहा-

'मान्यवर ! हम समस्त प्राणियों के लिए पेड़ ही जीवन के आधार है। हमारा भोजन, आवास, उपचार, छाया तथा समस्त प्रकार की सुविधाएं इन्हीं पेड़ों से उपलब्ध होती है। आज पेड़ों की अन्धाधुन्ध कटाई हो रही है। जंगल सूने हो गए,सारे जंगल नष्ट कर दिए गए। ऐसी स्थिति में हमारा जीना मुश्किल हो गया है। हमारे तो आशियाने ही नष्ट कर दिए गए हैं। ऐसी हालत में हमारा जीना दुश्कर हो गया है। कृपया इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करते हुए उचित समाधान प्रस्तुत कराएं। इस समस्या के लिए विशेष रूप से वन विभाग उत्तरदायी हैक्क

इस समस्या के समाधान हेतु वन विभाग के अधिकारी ने मंच पर प्रस्तुत होकर कहा-'यह सही है कि सड़कों के चौड़ाईकरण,नई सड़कों के निर्माण और कल-कारखानों की बढ़ती संख्या के कारण पेड़ों की अन्धाधुन्ध कटाई होती है। नई कॉलोनियों की बसावट के कारण भी भारी मात्रा में पेड़ काटे जाते हैं। इससे न केवल जीव-जन्तु वर्ग को ही नुकसान उठाना पड़ता है,अपितु मानव समुदाय भी प्रदूषण से पीड़ित होकर रोगग्रस्त होता जा रहा है। इसके लिए वन विभाग व पर्यावरण विभाग ने व्यवस्था की है कि-हरे पेड़ों की कटाई पर पूरा प्रतिबन्ध है। विशेष दशा में अनुमति प्राप्त करके ही पेड़ काटे जाने का प्रावधान है।

उद्योगपतियों को अधिक से अधिक पेड़ लगाने के लिए पाबन्द किया गया है। बड़े और छायादार पेड़ों को जड़ सहित उखाड़कर अन्यत्र उपयुक्त स्थान पर रोपित करने का भी प्रयास प्रारम्भ हुआ है। सार्वजनिक सेवा संस्थाओं, विद्यालयों, महाविद्यालयों, सामाजिक संगठनों तथा सरकारी इकाईयों द्वारा भी वृक्षारोपण अभियान चलाया जाता है। विशेष उत्सवों, पर्वों तथा जन्मदिवस के अवसर पर नागरिकों को वृक्षारोपण हेतु प्रेरित किया जाता है। विभाग द्वारा भी अधिकाधिक पेड़ लगाने के लिए तथा उन्हें सुरक्षित पनपाने के लिए योजनाबद्ध प्रयास किए जा रहे हैं। हमें विश्वास है कि,शीघ्र ही इस समस्या का समाधान अवश्य होगा।क्क

तभी सभा स्थल पर उपस्थित बन्दरों में से एक ने कहा कि- क्कध्यान रहे, हमें पेड़ों का आश्रय नहीं मिला तो बस्ती में हमारी आवाजाही बढ़ जाएगी,इसलिए जंगलों को समुचित योजनानुसार बढ़ाना आवश्यक है।

तभी शेर ने अपनी बात रखते हुए स्पष्ट किया-

क्कमहोदय,प्राणी मात्र के लिए पानी अनिवार्य आवश्यकता है। हम विशेषतः नदी,नाले,नहरें तथा सूने जलाशयों का पानी पीने के काम में लेते हैं। वह पानी इतना गन्दा और दूषित हो गया है कि,उसे पीकर आए-दिन भयंकर बीमारियाँ हमारा पीछा नहीं छोड़ती हैं। यदि समय रहते पानी को प्रदूषित होने से नहीं बचाया गया तो हम जीवधारियों की समस्त प्रजातियाँ पृथ्वी से लुप्त

हो जाएगी। कृपा कर हमें आश्वस्त करें कि,इस सम्बन्ध में आपका क्या प्रयास रहेगा। इस कार्य में पर्यावरण विभाग ही विशेष रूप से सहयोगी हो सकता है।क्ष जिलाधीश महोदय ने पर्यावरण विभाग के अधिकारी को संकेत करते हुए प्रत्युत्तर के लिए कहा तो वे कहने लगे-

क्षवस्तुतः शेर महोदय का कथन सही है। वर्तमान में कल-कारखानों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। इनसे निकलने वाला प्रदूषित पानी नदी-नालों में बहा दिया जाता है। इससे पानी दूषित,विषैला और बदबूदार हो जाता है जो पीने योग्य नहीं रहता। पीने पर पेट की कई तरह की बीमारियाँ हो जाती है। तीर्थ स्थानों,मन्दिरों तथा धार्मिक आस्था के केन्द्रों से भी बासी प्रसाद,फूल-पत्तियाँ,मालाएं, दूषित भोज्य पदार्थ तथा प्लास्टिक की थैलियां आदि नदियों में बहा दी जाती है। इससे पानी दूषित,मटमैला और दुर्गन्ध युक्त हो जाता है। अभी माँ गंगा की साफ-सफाई का कार्यक्रम इसी समस्या के समाधान हेतु किया जा रहा है।क्ष

इस कथन पर जल की रानी मछली ने सुझाव दिया कि यह समस्या तब तक नहीं सुलझेगी,जब तक हमारे देशवासी जागरूक नहीं होंगे। वे लोग ऐसा प्रयास क्यों नहीं कर सकते कि उनके किसी भी उपयोग से पानी दूषित नहीं हो। शहर की गन्दी नालियों का पानी,गटर का पानी,कूड़ा-कचरा,मृत पशु तथा मल-मूत्र आदि प्रवाहित होता रहा तो वही-'ज्यों ज्यों दवा की गई,मर्ज बड़ता ही गया',वाली स्थिति होगी। आवश्यकता तो जनचेतना की है। इस दिशा में प्रयास किया जाना अनिवार्य है।

तभी लोमड़ी बहिन खड़ी हो गई और कहने लगी- 'पेड़ लगाने तथा पानी को प्रदूषण से सुरक्षित बनाने के लिए सरकार का इस वर्ष कितना बजट निर्धारित है।'

तभी जिलाधीश महोदय खड़े हुए और कहा कि- 'इस कार्य के लिए पाँच लाख रूपया आवंटित हुआ हैक्ष

तभी मगरमच्छ ने हुँकार भरते हुए कहा-क्षश्रीमान ! यह तो ऊँट के मुँह में जीरा मात्र हैक्ष यह सुनते ही समस्त जीवों के कान खड़े हो गए और ऊँट महाशय की ओर मुखातिब हो गए। तभी कोयल ने अपना हाथ खड़ा कर अपना वक्तव्य प्रस्तुत करने की अनुमति प्राप्त की,और कहने लगी-

'महाशय ! जैसे-जैसे जनसंख्या में वृद्धि होती जा रही है, औद्योगिकीकरण का विस्तार हो रहा है,आवागमन के साधनों में अवांछनीय वृद्धि हो रही है। इनसे निकलने वाली विषैली गैस और धुंए के कारण पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है। श्वांस लेना भी दूभर हो गया है। आए-दिन श्वांस की बीमारी से जन्तु मर रहे हैं। हमें उड़ने,चलने,रेंगने तथा फुदकने में कमजोरी महसूस होती हैक्ष इस बात का समर्थन करते हुए तोता बोल उठा-

क्षमान्यवर ! वायु प्रदूषण से हमारी स्थिति बड़ी विकृत हो गई है। 'साँप छछूंदर की-सी' स्थिति बन गई है। हम न मर सकते हैं,और न जी सकते हैं। श्रीमान निवेदन यह है कि,यातायात के साधनों को कम करना,खुले में शौच पर नियन्त्रण,कचरा खुले में न रहे,इसके साथ ही ध्वनि प्रदूषण को भी रोकने का प्रयास किया जाए। कारखानों की चिमनियाँ,वाहनों के हॉर्न तथा ध्वनि विस्तारक यन्त्रों को प्रतिबन्धित किया जाए।क्ष कौआ अपने-आपको नहीं रोक सका और सभी जीव-जन्तुओं की ओर मुखातिब होकर कहने लगा-क्षमित्रों ! कहीं ऐसा न हो जाए कि,हम मूक प्राणियों को 'घर की मुर्गी दाल बराबर' समझते हुए प्रशासन केवल कागजी घोड़े ही दौड़ाता रहे। मेंढक ने बीच ही में मजाकिया अंदाज में बोल दिया-भाइयों ! तब तो ऐसा ही होगा। 'हमने भैंस के आगे बीन बजाई।' सभी सभासद ठहाका लगाकर हँस पड़े। इतने में अजगर भी क्यों चुप रहने लगा। वह कहने लगा- क्षअब तक तो लोग हमें सुना-अनसुना कर देंगे,तो समस्या ज्यों की त्यों बनी रहेगीक्ष तभी गीदड़ ने अपना मुँह खोला,कहने लगा-

क्षभाइयों ! पहले तो आप सभी 'भीगी बिल्ली बनकर रहते थे। आज समय बदल गया है। सभी को अपनी समस्या रखने का अधिकार है। यह भी सही है कि,जनप्रतिनिधि आश्वासन देते रहे और अधिकारी काम को आगे सरकाते रहे,काम कुछ भी नहीं हुआ,जो थोड़ा हुआ भी वह 'खोदा पहाड़ निकली चुहिया' की कहावत को चरितार्थ करने जैसा था। हुआ यह कि एक 'सांपनाथ तो दूसरा नागनाथ' जैसी स्थितियाँ थी। इससे समस्या विकराल होने लगीक्ष चतुर बगुला भी पीछे क्यों रहने लगा। लगते हाथ चुटकी लेते हुए बोल ही दिया- क्षजनप्रतिनिधि भी 'गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं। अब लगता है ऐसा नहीं होगाक्ष

मुर्गी भी चुप रहने वाली नहीं थी। बोली-मैं अनपढ़ अवश्य हूँ। मेरे लिए तो यह सब लिखा-पढ़ी 'काला अक्षर भैंस बराबर है', किन्तु अनुभव से कहती हूँ कि 'जो बीत गई-सो बात गई',अब 'सांप निकल जाने पर लकड़ी पीटने से कोई लाभ नहीं',हमें अपने विधायक और जिलाधीश महोदय पर भरोसा करना चाहिए। कहावत है न कि 'डूबते को तो तिनके का सहारा ही पर्याप्त हैक्षद्य विधायक महोदय ने अपने कोटे से प्रदूषण दूर करने के लिए पाँच लाख रूपए की ओर घोषणा की है। यह प्रसन्नता की बात है। ध्यान रहे हमें 'समुद्र में रहकर मगर से बैर' कभी नहीं रखना चाहिए। हमारी ज्वलन्त समस्याओं के समाधान हेतु विधायक महोदय संवेदनशील हैं,अतः इस समय हमें इसका लाभ अवश्य मिलेगाक्ष

तभी विधायक ने इच्छा प्रकट की-यदि समस्या समाधान के लिए और भी धनराशि की आवश्यकता होगी तो अतिरिक्त बजट आवंटन किया जा सकता है। मैं वही करूंगा,जो कहता हूँ ऐसा नहीं है कि 'हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और 'हो,मेरा विश्वास कीजिएक्ष

जन्तुओं के पूर्व अध्यक्ष भेड़िए ने कुछ मांगें रखते हुए जन्तुओं की ओर से एक मांग-पत्र प्रस्तुत कर दिया,जिसमें लिखा था-

क्षमान्यवर ! मैं समस्त जीव-जन्तु समाज की ओर से प्रार्थना करता हूँ कि-हमारे लिए अलग से चिकित्सालयों की व्यवस्था की जाए ताकि समय पर सही रोगोपचार हो सके। मांसाहारी एवं हिंसक लोगों द्वारा की जाने वाली जीव हत्या पर रोक लगाई जाए। रेंगने और फुदकने वाले जन्तुओं के लिए अलग से सुविधाजनक जन्तुआलय स्थापित किए जाएं। गर्मियों में जल समस्या के निवारण हेतु प्रशासन एवं जनसहयोग से छोटे जलाशय,पानी की पौ,परिण्डे आदि की तात्कालिक व्यवस्था की जाए। बाहरी हिंसक जीवों से हमारी सुरक्षा हो।बाग-बगीचों के निर्माण को बढ़ावा दिया जाए। हमारी सुरक्षा व सुविधाओं की प्राप्ति के लिए मानवाधिकार आयोग की तरह विशेष आयोग का गठन किया जाए। मानवीय अत्याचारों की सुनवाई एवं कारवाई हेतु विशेष न्यायालयों की स्थापना हो।जनसेवा की दृष्टि से हमें अपनी क्षमता के अनुसार सेवा प्रकल्पों से जोड़ने हेतु विशेष प्रशिक्षण दिया जाएक्ष

इस प्रकार चौपाल की कार्यवाही समाप्त होने से पूर्व विधायक ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा-'मेरे जीव-जन्तु भाई बहिनों,आज मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है कि लम्बे समय बाद आप सब चौपाल पर एकत्रित हुए और अपनी समस्याओं को समय रहते प्रस्तुत किया। यह अच्छा किया,अन्यथा 'अब पछताए क्या होत है,जब चिड़िया चुग गई खेत' वाली कहावत चरितार्थ हो जाती। आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आज प्रस्तुत समस्त समस्याओं के समाधान हेतु त्वरित गति से कारवाई होगी। मैं इससे अधिक कुछ नहीं कहना चाहता हूँ 'मिया मिट्ठू' बनने की आदत मेरी नहीं है।' कई लोग बड़- चढ़कर बातें तो करते हैं,किन्तु समय आने पर 'नाक पर मक्खी तक नहीं बैठने देते'द्य आप भरोसा कीजिए,जो चौपाल पर आज कहा गया है इससे ऊँट सही करवट बैठेगा।धन्यवादक्ष

चौपाल की कार्यवाही के समापन पर स्थानीय पशु-प्राणियों द्वारा आयोजित प्रीतिभोज में उपस्थित समस्त अतिथियों, जीव-जन्तुओं ने भोजन किया। तत्पश्चात सभी जीव-जन्तुओं ने अपने गन्तव्य के लिए प्रस्थान किया। आज के इस रात्रि चौपाल की कार्यवाही से सभी सन्तुष्ट थे तथा सभी ने भूरी-भूरी प्रशंसा की। **-शंकरलाल माहेश्वरी**

चम्पारण से गांधी बने, पर सीमांचल आज भी पिछड़ा

हिमालय की उपत्यका में गंडक नदी की यह तटवर्ती भूमि वैदिक युग में अनेक ऋषि-मुनियों एवं संत महात्माओं की साधना स्थली रही। प्राचीन काल में यह भूभाग लिच्छिवी गणराज्य के अंतर्गत था जहां प्राचीन भारत की सभ्यता और संस्कृति का अभ्युदय हुआ। कालांतर में यह भू-भाग मगध साम्राज्य के अधीन भी रहा। मौर्य वंश के संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य का गहरा संबंध इस भू-भाग से था। महात्मा बुद्ध की इस तपोभूमि में सम्राट अशोक के स्तम्भ आज भी कई स्थलों पर मौजूद हैं। गुप्त वंश के राजाओं तथा हर्षवर्धन का भी इस क्षेत्र से संबंध था। फिर कर्नाटवंशी राजाओं ने भी यहां शासन स्थापित किया। अगले कालखंड में यह क्षेत्र दिल्ली के अफगान शासन के अधीन आया। इस सल्तनत के पतन के बाद इस क्षेत्र पर मुगलों का आधिपत्य हुआ। इसी शासन काल में बेतिया राज की स्थापना हुई,जिससे इस इलाके का भू-भाग लीज पर लेकर अंग्रेजों ने यहां अपना वर्चस्व स्थापित किया।

चम्पारण का यह भूखंड अंग्रेजों के शासनकाल में भी चर्चित रहा। नील की पैदावार के कारण उनकी खास दिलचस्पी इस क्षेत्र में रही। यहां उन्होंने अपनी कई कोठियां स्थापित की।

इस जिले का अधिकांश हिस्सा बेतिया राज के अधीन था। अंग्रेजों से लिए गए कर्ज के एवज में जब से बेतिया राज ने इस इलाके की जमीन उन्हें बंदोबस्त कर दी,तभी से अंग्रेजों का प्रभुत्व इस क्षेत्र में बढ़ना शुरू हुआ और धीरे धीरे चम्पारण का अधिकांश हिस्सा उनके अधीन हो गया।अंग्रेजी राज में खेतिहर किसान अपनी जमीन के 3/20 हिस्से में नील की खेती करने के लिए कानूनन बाध्य थे। सौ वर्षों से अधिक समय तक वे निलहे साहबों के शोषण और दमन का शिकार होते रहे।

भितिहरवा निवासी पं. राजकुमार शुक्ल के आग्रह पर आज से 100 साल पहले 1917 में महात्मा गांधी यहां के किसानों की दुर्दशा देखने चम्पारण आए। यहां के लोगों के दु:ख-दर्द को समझा,आत्मसात किया और यही भूमि सम्पूर्ण भारत की स्वतंत्रता के निमित्त उनकी कर्मभूमि बनी। यहीं से सत्याग्रह के रूप में सत्य और अहिंसा का जो प्रयोग उन्होंने आरम्भ किया,उसकी प्रतिध्वनि भारत के कोने-कोने में सुनाई दी और अंततः उसी प्रयोग ने न सिर्फ चम्पारण के किसानों को तीन कठिया कानून से मुक्ति दिलाई,बल्कि वही प्रयोग भारत के स्वाधीनता संग्राम के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। महात्मा गांधी के आह्वान पर 1921 में रक्सौल के पुराने एक्सचेंज रोड में राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना हुई,जो स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में क्रांतिकारियों की शरणस्थली भी बनी। स्व. महादेव देसाई की डायरी के पन्ने इस घटना क्रम की पुष्टि करते हैं। 9 दिसम्बर 1920 को महात्मा गांधी रक्सौल आए थे। डा. राजेन्द्र प्रसाद,मजरूल हक और शौकत अली भी उनके साथ थे। यहां के पुराने एक्सचेंज रोड स्थित हरि प्रसाद जालान की पथारी में उन्होंने भाषण दिया था। उस सभा में रक्सौल के साथ सीमावर्ती क्षेत्र के लोग भी शामिल हुए। उन लोगों ने आगे चलकर स्वतंत्रता आंदोलन में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

गांधी के चम्पारण सत्याग्रह को व्यापकता में देखें तो यह सत्याग्रह केवल यहां के किसानों को अंग्रेजों के शोषण से मुक्त कराने के लिए नहीं था,बल्कि इसी सत्याग्रह ने स्वाधीनता का शंखनाद किया और यहीं से अंग्रेजी राज के खिलाफ आंदोलन पूरे देश में फैला। इसी चम्पारण की भूमि ने गांधी को महात्मा बनाया।

चम्पारण सत्याग्रह भारत के स्वतंत्रता संग्राम की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है,और इसके 100 साल पूरे होने पर यहां के लोगों को यह आत्मचिंतन करने की आवश्यकता है कि,इतने गौरवशाली इतिहास के बावजूद भी यह सीमांचल विकास की मुख्य धारा में शामिल क्यों नहीं हो पाया। आखिर क्यों ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व होने के बावजूद यह क्षेत्र उपेक्षित पड़ा रहा। आखिर क्यों यहां राजनीतिक और सामाजिक संकल्प शक्ति का अभाव बना रहा। महात्मा गांधी ने जो लौ यहां के लोगों के दिलों में जलाई,वह समय के साथ मद्धिम कैसे पड़ गई। यहां के लोग उस सत्याग्रह को कैसे भूल गए। कैसे यह क्षेत्र विकास की मुख्यधारा में जुड़ेगा,कैसे हमारी सरकार और हमारे जनप्रतिनिधि इसके सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध होंगे,कैसे इस क्षेत्र के विकास की लंबित योजनाएं पूरी होंगी,कैसे यहां की ज्वलंत समस्याओं का समाधान होगा,आज इसी विषय पर विमर्श किए जाने की आवश्यकता है।

इस नगर के गौरव को पुनर्स्थापित करने,इसे स्वच्छ,सुंदर और समृद्ध बनाने का संकल्प लेते हुए आज के दिन हर कोई अपनी अपनी क्षमता के अनुरूप जवाबदेही तय करे,तभी सामाजिक परिवर्तन की शुरुआत होगी और यही उस महामानव के प्रति सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी।

-डॉ. स्वयंभू शलभ

यात्रा

'माँ,इतना कुछ क्यों दे रही हो! कहीं जाते वक्त इतना कुछ खाकर जाना संभव नहीं है।' माँ कुछ बोले,उससे पहले ही पिताजी जवाब दे देते हैं,-'यात्रा में निकलने से पूर्व कुछ खाकर निकलना चाहिए। इतनी दूर जाना है,क्या पता रास्ते में गाड़ी रुकेगी या नहीं,इसलिए कुछ खा लो। तुमने टेबलेट बेग में रख ली या नहीं,पानी की बोतल! बेल पत्ता ले लो, जाते समय इसे हाथ में लेकर गणेश जी का स्मरण करना,यात्रा सफल होगी।'

जब घर से कहीं यात्रा के लिए निकलती थी,माँ-पिताजी ऐसे ही बोलते और कहते, 'सावधान वाणी ! यात्रा हमेशा बारह बजे से पूर्व करना,दिन को सामने रखकर यात्रा करना उचित है।' यात्रा के दौरान क्या-क्या ध्यान रखना चाहिए,वगैरह वगैरहञ सच में तब यात्रा में निकलने की अलग ही खुशी थी,लेकिन शादी के बाद घर में रहे लोगों को कोई तकलीफ न होञऐसे ही बहुत कुछ ध्यान रखते रखते खुद बिना खाए ही निकल जाना पड़ता है।

कभी हम बस में यात्रा करते समय देखते हैं,बहुत-सी अनचाही समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे ड्राइवर ठीक बस नहीं चला रहा है या यात्री को उठाने के लिए जगह-जगह पर गाड़ी रोकना। कभी-कभी तो हमारे पास ऐसे लोग बैठ जाते हैं जिन्हें दूसरों के बारे में ख्याल ही नही रहता,भाड़ा क्या दे दिया जैसे गाड़ी अपने बाप-दादा की जागीर है। आजकल तो बस वाले ऐसे होते हैं कि आपको जहां जाना है वहाँ तक ले जाएंगे ,बोलकर आधे रास्ते में ही दूसरी गाड़ी में भेज देते हैं। मतलब छोटी हो या लम्बी हम जैसी भी यात्रा करें,यात्रा सुखद होने पर अच्छा लगता है। साथ में यात्रा करने वाला अगर सही हो,तब तो बात ही निराली है।

जैसे भ्रमण हो या यात्रा,सुख-दुख का सम्मिश्रण होता है,वैसे ही हमारे जन्म से मृत्यु तक की यात्रा भी सुख-दुख का समाहार है। जीवन यात्रा के पहले चरण यानि बचपन और दूसरा चरण यानि यौवन ऐसा है,जैसे हमने किसी सुन्दर स्थान देखने के लिए यात्रा की हो,लेकिन जब हम घर लौटते हैं तब बुढ़ापे की तरह थकानञ्लाचार हो जाते हैं। लोग कहते है कि अंतिम यात्रा की यात्रा ही सबसे सुखद यात्रा है। बात तो सही है,क्योंकि उस समय माया-मोह त्याग कर आत्मा शरीर त्याग कर देता है। दुख,सुख,वेदना आदि तो केवल शरीर के लिए है और एक बात,अंतिम यात्रा तो चार कंधों पर होती है। यात्रा तो हम उसे भी मानते हैं जब कोई खास कार्य प्रारंभ करते हैं,इसलिए हमें ध्यान रखना है,जो भी हम यात्रा करें , प्रस्तुति सही ढंग से हो और अपरिहार्य चीज़,सोच आदि से और सुखद हो सकती है। तब जीवन की अंतिम यात्रा भी सुखद एवं सार्थक हो सकती है।

-वाणी ठाकुर 'विभा'

क्या सचमुच हमारा देश 'गणतंत्र' और 'स्वतंत्र' है?

आज पूरा भारत देश 69 वां गणतंत्र दिवस मना रहा है।गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में देशभर में देशभक्ति का माहौल बन जाता हैज्नेताओं के भाषण और देशभक्ति फिल्मों व गीतों से टीवी,रेडियो,इंटरनेट सब गुलजार रहते हैंज्सोशल मीडिया के वीरों की देशभक्ति चरम पर होती हैज्हर वर्ष आने वाले इस गणतंत्र दिवस ने आज मुझे यह सोचने को मजबूर कर दिया कि क्या वास्तव में भारत राष्ट्र में ' गणतंत्रता' नाम की कोई चीज है?

दिमाग का एक प्रतिशत भी लगाकर सोचें तो पता चलेगा कि गणतंत्रता के नाम पर हमें गुमराह किया जा रहा है।गणतंत्र दिवस तो मनाते हैं पर हम ये भूल जाते हैं कि देश की करोड़ों जनसंख्या अब भी 'गणतंत्र' और ' स्वतंत्र' जैसे शब्द के अर्थों से अनभिज्ञ है। दुख होता है जब गणतंत्र दिवस पर लम्बे-चौड़े भाषण देनेवाले नेताओं को चाय परोसने दस-बारह साल का बच्चा आता हैज्दुख होता है जब स्वतंत्रता और गणतंत्रता दिवस का जश्न मनाकर शान से राष्ट्रीय मिष्ठान जलेबी खाते हैं उस दुकान पर भी 12-13 साल का कोई छोटू काम कर रहा होता है,बर्तन साफ कर रहा होता हैज्दुख होता है जब सोशल मीडिया पर देशभक्ति पर खूब सारा ज्ञान बघारने वाले खुद के घर में गरीब मासूम बच्चे-बच्चियों से काम करवाते हैं दुख तो तब भी होता है जब देश का भविष्य कचरे में अपना कल ढूंढ रहा होता हैज्क्या ऐसे में हम गर्व से कह सकते हैं कि हमारे देश में 'गणतंत्र' है?

गरीबी-लाचारी के तवे पर अपनी राजनीतिक रोटियाँ सेंकने वाले लुटेरे कब गरीबों की रोटी तक छीन जाते हैं ! इस गणतंत्र में गण 'का' तंत्र (जनता 'का' तरीका/शासन) वास्तव में जनता 'का' शोषण बन चुका है। एक ओर कुछ लोग अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के आधार पर देशद्रोह की बात करते हैं तो दूसरी तरफ कूड़ा बीनने वाला बच्चा शिक्षा के अधिकार से वंचितज्एक तरफ हजारों करोड़ रुपए के घोटाले हो रहे हैं तो दूसरी तरफ महँगाई का दंश झेलती जनताज्ऐसे में इस गणतंत्र का क्या अर्थ ?

ये गणतंत्र दिवस इसलिए मनाया जाता है क्योंकि आज ही के दिन पूरे देश में संविधान लागू हुआ था। कहा गया था कि ये संविधान सबके लिए बराबर है,चाहे गरीब हो या अमीर,नेता हो या जनता,लेकिन वर्तमान समय को देखकर ऐसा नहीं लगता है। यहाँ सारे नियम-कानून नोटों के सामने सिर झुकाकर अपनी इज्जत लुटने का इंतजार करते हैं। हद तो तब हो जाती है जब राजनीतिक इशारों पर 'न्याय' के रक्षक ही इसके भक्षक बन बैठते हैं ! न्यायिक व्यवस्था देशद्रोह की बात करने वालों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ सुरक्षा देती है और राष्ट्रवादी नारे लगाने वालों को सांप्रदायिक करार देकर गिरफ्तार करती है। ऐसे में न्यायिक व्यवस्था पर भरोसा घटता जा रहा है,जो एक लोकतांत्रिक राष्ट्र के लिए खतरे की घंटी है।

लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाने वाला मीडिया भी अब तक के सबसे खराब हालात में है। हमारे देश की मीडिया व्यस्त है अभिनेता-अभिनेत्रियों के प्यार-धोखे के ताजे किस्से देने मेंज्मीडिया व्यस्त है मरे हुए इंसान के डीएनए में दलित या मुस्लिम शब्द ढूंढने मेंज्मीडिया व्यस्त है देशद्रोहियों को देश का अभिनेता बनाने मेंज्मीडिया व्यस्त है आतंकवादियों को मानवता के नाम पर पनाह देने की कवायद करने मेंज्उसे कहाँ फुर्सत जो देश के लोग,जो देश से ही बेदखल हो रहे हैं उनका दर्द सुनने कीज्उसे कहाँ फुर्सत कि वो बुनियादी सुविधाओं से वंचित लोगों का दर्द दिखाने कीज्उसे कहाँ फुर्सत जो झूठे वादे करनेवाले नेताओं को आईना दिखा सकेज्आज पत्रकारिता की स्थिति चंद पैसों की वजह से बदतर हो चुकी है।

सच्चे अर्थ में हमारा देश 'गणतंत्र' तब कहलाएगा, जब देश का कोई भी व्यक्ति शिक्षा-भोजन-रोजगार से वंचित न होज्जब हर किसी के लिए संविधान बराबर होज्जब जाति-धर्म के नाम पर विशेष सुविधाओं का खेल समाप्त होज्जब हम सबकी पहचान बस एक भारतीय के रूप में होज्मुझे इंतजार है उस दिन का,जब हम खुद को सचमुच में एक स्वतंत्र लोकतंत्रात्मक राष्ट्र के नागरिक के रूप में महसूस कर सकें और गर्व से मना सकें स्वंतत्र और गणतंत्र होने का जश्नज। जय हिंदज्जय भारतज।

-शुभम कुमार जायसवाल

समान धरातल पर

राम घर चल
बहुत थक गया है थोडा आराम कर.
सुबह अखबार पूरा नही पढा
टी.वी. इत्मीनान से नही देखा
फोन पर गप्पें नही मारी.
बडे दिनों से दोस्तों को घर नही बुलाया.
ऑफिस का बडा टेंशन होता है
थोडा सा चैज चाहिये.
नेट पर सर्फिंग कर
एस एम एस पर जोक्स फार्वर्ड कर.
गर्म चाय की चुस्किया पकोडों के साथ ले.
टी वी पर सुन्दर बालाओं को देख
पति की झिक झिक पर
ध्यान मत दे बड्बडाती रहती है.
आंख मूद पडा रह
तू धरती पर सर्वश्रेष्ट प्राणी है
इसका अनुभव कर .

रमा घर जा
बच्चे बाट जोह रहे है.
घर पर चाय का इंतजार हो रहा है.
महरी काम पर नही आयी
सब बिखरा बिखरा है.
बच्चों का होम वर्क अधूरा है
उसे पूरा कराना है.
जल्दी घर समेट बढिया नाश्ता बना.
जल्दी जल्दी हाथ चला
बहुत काम बाकी है.
आराम का नाम मत ले
ये हराम होता है.
अपनी बीमारी पर छुट्टिया मत ले.
घर पर मेहमान आते है
तीज-त्योहार बच्चों के इम्तिहान होते है
ऊंची आवाज मत कर
किसी से अपेक्षा मत रख
फुर्ती से काम समेट सुबह जल्दी उठना है.,...

-डॉ. प्रभा मुजुमदार

'पद्मावत' फिल्म की सत्यता

भव्य,भारी देश के भारतीयों को मेरा नमस्कार और भारतीयों की सरकार को मेरा परम् नमन हो,वो इसलिए क्योंकि, उसके आगे अच्छे-अच्छों के सिर झुकते हैं,झुकाते हैं या झुकाने पड़ते हैं,इसलिए मेरा भी गर्व से भरा नमस्कार,नमन नहीं।

मैंने सुना हैं कि, देश के हिंद नागरिक 'पद्मावती' फिल्म को स्वीकार कर रहे हैं तो बताओं क्यूं नहीं करेंगे,करना चाहिए,

क्योंकि इस फिल्म को रुपए के लिए नहीं बनाया गया,ये फिल्म तो 100 फ़ीसदी इतिहास पर खरी है। जनता नहीं जानती है रानी पद्मावती के बारें में,इसलिए ये फिल्म मुफ्त में जनता को बताना चाहते हैं और दीपिका पादुकोण तो राजपूतानी है। वह ऐसी नारी है कि,अभी तक किसी इंसान को आंख उठाकर देखा भी नहीं, यहाँ तक कि वह क्षत्राणी बनकर जीती आई है,और इस फिल्म के लिए उससे अच्छी संस्कारित,शोभायमान,सुन्दरता, चरित्र,किसी के पास है ही नहीं,इसलिए उसे संजय लीला भंसाली द्वारा चुना गया, क्योंकि केवल-केवल इसी फिल्म में वह क्षत्राणी बनी है,बाकी फिल्म में तो देखा ही होगाज्एक रस्सी पर लटकते हुए..। तो बताओ हिंद देश के नागरिकों,आप इस फिल्म को क्यों नहीं देखोगे।

ये फिल्म देश में रानी पद्मावती का नाम ऊंचा करेगी,क्योंकि महाराणी पद्मावती को इतना कोई जानता नहीं हैंज। इस फिल्म के लिए जनता ने देश में ऐसा आंदोलन खड़ा कर दिया है कि,ये फिल्म तो चलनी ही चाहिए। अब सरकार क्यूं सुनवाई नहीं कर रही है।

सरकार जनता की है,या फिल्म वाले किरदारों की या रुपए का कर लेने वाली औपचारिकता।

बताओ आखिर फिल्म क्यों नहीं चलेगी, जब जनता अपना मन बना चुकी है कि, हम फिल्म देखेंगे अगर फिल्म नहीं चलाई तो हम फिल्म सिनेमाघर तोड़ देंगे, जला देंगे,सरकार का विरोध करेंगे। फिर भी देखो,फिल्म चला ही नहीं रहें,अपनी मनमर्जी कर रहे हैं।

देखिए,सम्मानित भंसाली जी और सभ्य सरकार जी,आप दोनों जनता पर ही चलते हो। आप सभी का फिल्म जगत जनता से ही चलता हैं और सरकार भी जनता से। मैंने कुछ दिन पहले ही सुना है की फिल्म का नाम पद्मावत कर दिया हैं। कि,नाम 'पद्मावत' करने के बाद भी फिल्म पर पाबंदी है,आखिर ऐसा क्यों, हम जनता को न्याय चाहिए।

मुझे लगता है कि,कांग्रेस सरकार और संजय लीला भंसाली में कोई गठजोड़ हुआ है फिल्म नहीं चलानें के लिए..इसीलिए विरोध किया जा रहा है, फिल्म नहीं चलाई जा रही हैं। मैं स्पष्ट कह रहा हूं अगर देश में कानून का राज है तो मोदी जी ये फिल्म आप चलाएं,नहीं चलाएंगे तो ये जनता आपको मत नहीं देगी। कहीं न कहीं ये फिल्म भाजपा को खत्म और कांग्रेस को सहयोग कर रही है।

आशा है कि,आप सभी हिन्दुस्तानी महान पद्मावती राणी को नहीं जानते,उनके चरित्र को नहीं जानते हैं,इसलिए आप ये संजय भंसाली,दीपिका पादुकोण की फिल्म को देखकर राणी पद्मावती को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करोगे।

बाकी झूठ कहूं तो मैं तो महाराणी पद्मावती माता की गाथा जानता हूं।

-रणजीतसिंह चारण 'रणदेव'

जीवन के अधूरे सपने

जीवन में मुझे कुछ शब्दों से काफी नारजगी मिली,जो कभी पूरा हुआ ही नहीं,भले उसे किसी तरह उपयोग किया जाए। अगर हुआ भी तो सिर्फ भाग्यवालों का ही। जैसे-रिश्ता, जिसमें कभी-न-कभी मनमुटाव आ ही जाता है। कैसा भी रिश्ता हो-माँ से बेटे का,पिता से बेटे का, चाचा से भतीजा से,भाई से भाई का, बहन से भाई का और प्रेमी से प्रेमिका का रिश्ता। हाल ही में बहुत सारी घटनाएं मीडिया से देखने-सुनने को मिली,जिसमें आरुषि तलवार के माँ-बाप का रिश्ता भी शामिल है। इसी प्रकार प्यार का प्रेम का रिश्ता जो जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण है, जिसका जीवन में सबसे ज्यादा एवं खास स्थान है,वो बिरले ही पूरा होता है। खास तौर से देखा जाए तो यह अधूरा ही होता है। जैसे प्रेमी-प्रेमिका, माता-पिता,भाई-बहन इस आधुनिकता में अधूरा रिश्ता है। यह एक शौक भी हो गया है,जैसे-लैला मजनूं का रिश्ता,शीरी- फरहाद का आदि। अगला जन्म ले ले तो भी जिन्दगी में ये सपना तो कभी-किसी का पूरा हुआ ही नहीं, क्योंकि अक्सर सुनने में आता है कि,ये इतने दिन ही जीवित रहे। ये सोच रहे थे, पर पूरा नहीं कर पाए। ये करने गए थे पर चल बसे। किताब लिख रहे थे अधूरी छोड़कर चल बसे,इस प्रकार की अनेक बात सुनने को मिलती है। इसका तात्पर्य यही ना,कि जिन्दगी में किसी का स्वप्न पूरा नहीं हुआ है। 4 बच्चों में अक्सर सुनने को मिलता है कि मेट्रिक या इंटर का परीक्षा फल अच्छा नहीं आया तो आत्महत्या कर ली, सरकारी नौकरी की तैयारी करता था। मेहनत करने पर भी जब अच्छा परिणाम नहीं आया था जिसमें चाहा, उसमें चयन नहीं हुआ तो आत्महत्या कर ली। ये नौजवानों, छात्रों में हमेशा सुनने को मिलता है,जैसे डॉ. कलाम 'विजन-2020' देखना चाहते थे, रावण,स्वर्ग में सीढ़ी लगवाना चाहता था, दामिनी जिन्दा रहकर चिकित्सक बनना चाहती थी, और अनेक विद्यार्थी जो हर साल मई-जून में आत्महत्या करते हैं तो कुछ अप्रैल में। कुछ मेट्रिक-इंटर के परिणाम के बाद और कुछ कर्मचारी चयन सेवा के परिणाम के बाद दिल्ली इलाहाबाद के 'डेथ ऑफ रिवर' में मिलते हैं। अंतिम है वो है फरिश्ता, जिससे मिलना हर कोई चाहता है लेकिन कोई मिल नहीं पाता है। आम इंसान से लेकर साधु-संत तक लेकिन किसी को मिले नहीं,मिले उसी को जिसने इस आधुनिक जीवन से मुंह मोड़ा। जैसे-स्वामी विवेकानन्द,रामकृष्ण परमहंस इत्यादि, अन्यथा तो सभी साधु-संत झूठ का जरिया बनाकर लोगों का शोषण ही कर रहे हैं।

-रुपेश कुमार

युवा सामर्थ्य को मिले मंच

पिछले 2 दशकों में इस देश में बहुत कुछ बदला है। आर्थिक मोर्चे पर बदलाव एवं पाश्चात्य देशों की तर्ज़ पर छवि संस्कृति तथा विकास की बयार भारत में भी द्रुतगति से बह रही है। इस नए चलन और परिपाटी से हमारा मध्यमवर्गीय युवा मन भी प्रभावित हुआ है। उसकी इच्छाओं,अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को भी पंख लगे हैं। आज बड़ी संख्या में हमारी युवा पीढ़ी दूसरे राज्यों और विदेशों में पढ़ने और रोजगार हेतु जा रही है। बड़े शहरों की चकाचौंध वाली जीवन शैली और मॉल कल्चर उसे लुभाती है, दूसरी तरफ़ मध्यमवर्गीय परिवारों के अभिभावकों के समक्ष अपनी संतानों को पढ़ा-लिखाकर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करने की चुनौती है तो युवा पीढ़ी भी उच्च शिक्षा ग्रहण कर लुभावने वेतन के लिए जी-तोड़ मेहनत कर रही है। कई को कामयाबी

हासिल हो रही है,तो अधिकांश युवाओं के सपनों के पूरा होने की राह में कई बाधाएं तथा रुकावटें हैं। सच में आज का युवा अपनी महत्वाकाँक्षाओं और अपनों की अपेक्षाओं के बोझ तले कराह रहा है। समय रहते मंजिल न मिलने के चलते इनमें कुंठा और हताशा बढ़ रही है? कौन इनकी भावनाओं को समझेगा,और उन पर मरहम लगाएगा।

हमारा युवा आज की शिक्षा व्यवस्था की दशा और दुर्दशा को लेकर चिंतित और परेशान है,क्योंकि एक राष्ट्र के भीतर अनेक प्रकार की शिक्षा प्रणालियां प्रचलन में हैं। एक तरफ विद्यालयों और महाविद्यालयों में अध्यापकों की कमी है,तो वहीं युवा उपाधि हाथ में होने के बावजूद बेरोजगार घूम रहा है। हमारा निजी और सरकारी तंत्र युवाओं को उनकी योग्यता के विपरीत बेहद कम मानदेय देकर उनकी योग्यता का शोषण कर रहा हैद्य दूसरी तरफ हमारा देश आज भी ऐसी अनेक समस्याओं में उलझा हुआ है,कि आजादी के 70 वर्ष बाद भी हमें मूलभूत बुनियादी सुविधाओं की पूर्णता की बाट जोहनी पड़ रही है।

भारत में युवाओं की संख्या विश्व के अन्य देशों के मुकाबले में ज्यादा है। यहां की 65 फीसदी आबादी 35 वर्ष से कम है,अर्थात् युवा है। इसी को ध्यान में रखकर भारत सरकार ने वर्ष 2014 में 'राष्ट्रीय युवा नीति' के

अंतर्गत, 'युवाओं की क्षमताओं को पहचानना और उसके अनुसार उन्हें अवसर प्रदान कर उन्हें सशक्त बनाना और इसके माध्यम से विश्वभर में भारत को उसका सही स्थान दिलाना है' की परिकल्पना की थीद्य वर्तमान में भारत में 12 करोड़ से ज्यादा युवा बेरोजगार हैं। बेरोज़गारों में 25 प्रतिशत 20 से 24 साल के आयुवर्ग के हैं,तो 25 से 29 वर्ष की उम्र वाले युवाओं की तादात 17 फीसदी है। आज जिस बड़े अनुपात में युवा शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं,उस अनुपात में निजी एवं सरकारी क्षेत्रों में नौकरियां नहीं बढ़ रही हैं। इन हालातों में हताश-बेरोजगार युवाओं के अपराध एवं नशाखोरी के मार्ग पर चल पड़ने की आशंका भी रहती है, इस पर भी विचार करने की जरुरत है।

'विजन इंडिया फाउंडेशन' की टीम ने देश के प्रतिष्ठित व्यावसायिक एवं सामान्य शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत 35 हजार से ज्यादा युवाओं के बीच

सर्वेक्षण कर उनके मन को जानने,पढ़ने की कोशिश की तो पता चला कि युवाओं में अपने सुरक्षित भविष्य को लेकर झटपटाहट है,तो उनमें अपनेपन के अभाव का दर्द भी पल रहा है। आज अभिभावक भी अपने बच्चों के जल्दी से जल्दी रोजगार पर लग जाने की उत्कंठा एवं अभिलाषा में बच्चों की भावनात्मक इच्छाओं को समझ नहीं पा रहे हैं ? यदि आज आप युवाओं के मन को टटोलें, तो उनका दर्द और व्यथा खुलकर सामने आ जाती है। उनका मानना है कि आजकल नेताओं,बड़े अधिकारियों, उद्योगपतियों, अपराधियों, तथाकथित बाबाओं-धर्मगुरुओं और ठेकेदारों के कथित गठजोड़ से राष्ट्रीय हितों को नुकसान पहुंच रहा है। राजनीतिक दलों के नेता अपना हित साधने के लिए आम जनता को धर्म,जाति और आरक्षण के नाम पर बाँट रहे हैं। पिछले दिनों पुणे में 7वीं भारतीय छात्र संसद को सम्बोधित करते हुए गुजरात से अभियांत्रिकी के छात्र अक्षत गांधी ने समर्थ पटेल समुदाय द्वारा अपने लिए आरक्षण की मांग पर कटाक्ष करते हुए कहा कि,जिस देश में लोगों में खुद को पिछड़ा हुआ साबित करने की होड़ लगी हुई हो,वो देश भला क्या तरक्की करेगा ?

स्वामी विवेकानंद ने एक शताब्दी पूर्व कहा था कि, रफ्तार और भागदौड़ भरी जिंदगी में आज पारिवारिक तथा रिश्तों का मूल्यबोध का लोप होता जा रहा है। भारत से इंडिया के रूपांतरण में स्वदेशी अस्मिता एवं सम्प्रभुता फीकी पड़ गई है और विदेशी ताकतों का छद्म जाल यहां बेरोजगारी तथा आर्थिक मंदी के रूप में अर्थव्यवस्था पर बिछ रहा है,जिसके फलस्वरूप युवाओं का एक वर्ग आज हतोत्साहित और देश के समग्र विकास से अपने-आपको वंचित महसूस करता हैद्यक्र उनका यह कथन आज भी समाचीन,प्रासंगिक एवं सामयिक है।

स्वामी विवेकानंद ने युवाओं का आहवान करते हुए कठोपनिषद् के एक मंत्र का उल्लेख किया था- 'उत्तिष्ठत, जाग्रत प्राप्य वरानिबोधतक्रञ्अर्थात् उठो,जागो और तब तक मत रुको,जब तक कि अपने लक्ष्य पर न पहुंच जाओ। यह वक्त का तकाजा है कि हमारे नीति नियंता और निर्माता युवा मन को टटोलें,उनके विचारों को सुनें और राष्ट्र निर्माण में उनकी सशक्त भागीदारी की व्यवस्था को सुनिश्चित बनाएं। आज की युवा पीढ़ी जाति,धर्म,आरक्षण और क्षेत्रवाद एवं वंशवाद की राजनीति से उपर उठकर बेरोजगारी,भ्रष्टाचार विरोधी पारदर्शी वविकासोन्मुखी मुद्दों पर विश्वास करती है। हमारा युवा वर्तमान तंत्र में बदलाव का इच्छुक है। कमजोर को सामर्थ्यशाली बनाकर ही हम समाज में समरसता, समानता एवं बंधुत्व की भावना पैदा कर सकते हैं। आवश्यकता है कि, दूरगामी सोच वाले युवाओं को राजनीति में लाकर उन्हें संसद एवं विधानसभाओं में प्रतिनिधित्व दिया जाए,ताकि नवीन एवं समृद्ध भारत के निर्माण में उनकी प्रतिभा एवं सामर्थ्य का समुचित उपयोग हो सके। एक समर्थ, सबल, सक्षम, सशक्त, स्वाभिमानी और शक्तिशाली भारत के निर्माण के लिए हमें अपनी स्वार्थी प्रवृति से ऊपर उठने की भी जरुरत है।

-अनुज कुमार आचार्य

आधारबिन

खो गई है जिन्दगी आधार बिन,
एक बच्चा मर गया आधार बिन।

चार दिन से नहीं जला चूल्हा वहाँ,
नहीं मिला राशन वहाँ आधार बिन।

प्रसव पीड़ा से तड़पती ही रही,
दाखिला मिल पाया न आधार बिन।

घुस गए हैं आतंकी आधार बिन,
लूट खाया देश को आधार बिन।

बस गए कितने यहाँ आधार बिन,
मिट गए कितने यहाँ आधार बिन।

कैसा है ये फलसफा आधार का,
बन गया आधार ही आधारबिन ।

-राधा गोयल

'जरूरी' और 'मजबूरी' के बीच झूलती हमारी भाषायी संवेदना

गत दिवस राष्टपति जी ने केरल उच्च न्यायालय के एक समारोह में न्याय को जनता की भाषा में लाने के पक्ष में आवाज बुलंद करते हुए कहा कि उच्च न्यायालय अंग्रेजी में निर्णय देते हैं लेकिन जो लोग अंग्रेजी को अच्छे से नहीं समझ पाते,उनके लिए न्यायालयों द्वारा स्थानीय भाषाओं में निर्णय की प्रमाणित अनुवादित प्रतियां 24 घण्टे में उपलब्ध कराई जानी चाहिए। जब महामहिम राष्टपति जी भारतीय भाषाओं पर हावी अंग्रेजी के तिलिस्म को तोड़ने के पक्ष में आवाज उठा रहे थे,लगभग उसी समय दिल्ली नगर निगम द्वारा अगले सत्र से अपने विद्यालयों में पहली कक्षा से अंग्रेजी पड़ाने का निर्णय सामने आया। प्रथम दृष्टया ये दोनों बातें परस्पर विरोधी प्रतीत होती हैं। कहा जा सकता है कि देश के सर्वोच्च पद पर विराजमान व्यक्तित्व अंग्रेजी के स्थान पर भारतीय भाषाओं के पक्षधर हैं तो देश के सबसे बड़े दल के शासन वाले देश के राज्य में अबोध बच्चों पर अंग्रेजी लादी जा रही है। गंभीरता से विचार किया जाए,तो यह तथ्य हमारे सामने आता है कि राष्टपति जी ने जो कहा वह 'जरूरी' है,जबकि सरकारी स्कूलों में अंग्रेजी पड़ाने की बात 'मजबूरी' है।

दिल्ली सहित देश के महानगरों में पिछले कुछ दशकों में 'पब्लिक स्कूल' संस्कृति बहुत तेजी से फैली है। गली-गली में निजी स्कूल खुल गए हैं,जो 'अंग्रेजी माध्यम' होने का दावा करते हैं। यहां प्रवेश पाकर 'गुड मार्निंग' और एक-दो पोयम रटने वाले अपने छोटे-छोटे बच्चों को देख फूले नहीं समाते। इसे दुर्भाग्य कहें,या मजबूरी लेकिन सत्य यही है कि केवल मध्यम वर्ग ही नहीं,निम्न-मध्यम वर्ग,यहां तक कि किराए के मकान में रहकर किराए का रिक्शा चलाने वाले,पटरीवाले भी अपने बच्चे को बेशक दड़बेनुमा शाला ही क्यों न हो,लेकिन 'अंग्रेजी' माहौल से जोड़ना चाहते हैं,इसलिए यह कोई आश्चर्य नहीं कि,दिल्ली नगर निगम के प्राथमिक कक्षाओं के छात्रों की संख्या दिल्ली के कुल छात्रों का एक चौथाई भी नहीं है। इसका सीधा-सीधा अर्थ यह है कि तीन-चौथाई से अधिक प्राथमिक कक्षाओं के छात्र पहली कक्षा से अंग्रेजी पड़ रहे हैं या झेल रहे हैं।यह जानते हुए भी कि 'मातृभाषा में विद्यार्थी को अपना विषय समझने में सरलता और सुगमता होती है,जबकि विदेशी भाषा में विषय काफी समय तक समझ में नहीं आते या आधे-अधूरे ही आते हैं। समय-समय पर विभिन्न आयोगों ने भी अपनी सिफारिशों में इसी बात पर बल दिया,लेकिन दुर्भाग्य की बात यह कि अपने-अपने समय में हर दल की सरकार ने इन सिफारिशों को ठण्डे बस्ते के हवाले करना ही उचित समझा।

एक विशेष बात यह कि,अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करते हुए बच्चा अपनी संस्कृति और मानवीय मूल्यों के संस्कार संग देशभक्ति सहजता से ग्रहण कर लेता है। हम केवल उपरी मन से अपनी भाषाओं की बात करते हैं,परंतु अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में भेजते हैं। उस पर तर्क यह कि 'केवल मेरे बच्चे थोड़े ही पब्लिक स्कूल जाते हैं।' या 'केवल मेरे करने से क्या फर्क पड़ने वाला है।'

यह सर्वविदित है कि आचार्य विनोबा भावे ने देवनागरी के माध्यम से अनेक विदेशी भाषाएं सीखी। विदेशी माध्यम से बालमन पर नकारात्मक प्रभाव ही पड़ता है। ऐसे में बच्चा 'आधा तीतर,आधा बटेर' होकर न तो ढंग से मातृभाषा सीखा पाता है और न ही विदेशी भाषा। जहां तक राजकीय विद्यालयों का प्रश्न है,वहां प्रतिदिन,मध्यान्ह भोजन,मुफ्त पुस्तकें,मुफ्त बस्ता,सर्दी में मुफ्त स्वेटर,कुछ वर्गो को आर्थिक अनुदान,वजीफा सहित बहुत कुछ दिया जाता है। इसके बावजूद दिल्ली नगर निगम के विद्यालयों से मध्यम वर्ग पहले ही दूरी बना चुका है,अतः वहां किस वर्ग के बच्चे हाजिरी लगाते हैं,यह कोई पहेली नहीं है। आरोप यह भी है कि कुछ लोग यहां अंग्रेजी लाने के इसलिए विरोधी हैं,ताकि अंतर बना रहे। वास्तविकता यह है कि,जो लोग इन चन्द अंग्रेजी रहित विद्यालयों में अंग्रेजी लादने का विरोध कर रहे हैं,वे समस्या का केवल एक पक्ष देख अथवा दिखा रहे हैं। क्या मात्र इनको अंग्रेजी से दूर रखना समस्या का समाधान है ? वे यह क्यों नहीं जानना चाहते कि,इनमें छात्रों का प्रतिशत लगातार क्यों गिर रहा है ? क्या इसका कारण इनमें पढ़ाई के स्तर के साथ-साथ अंग्रेजी का न होना नहीं है ? अधिसंख्यक लोगों के व्यवहार और वातावरण के साथ चलना आम आदमी की मजबूरी है। एक रिक्शा चालक,घर-घर जाकर बर्तन साफ करने वाली,सफाई करने वाले,कपड़े धोने वाले,सब्जी बेचने वाले का वास्ता हर क्षण ऐसे लोगों से पड़ता है जो 'सड़सठ' नहीं समझते। उनके लिए ब्सिक्स्टीऐटब्र जानना जरूरी है। सच तो यह है कि वे ग्यारह,बारह क्या..दो,तीन,चार भी नहीं जानते। उनके साथ संवाद,व्यवहार,व्यापार,लेन-देन करने के लिए उन्हें भी गलत या सही अंग्रेजी सीखने की आवश्कता महसूस होती है। जो स्वयं अंग्रेजी नहीं सीख सके,वे अपने बच्चों को सिखाना चाहते हैं। अतः उनका सरकार पर दबाव है कि उन विद्यालयों में भी अधिकांश शालाओं की तरह अंग्रेजी होनी चाहिए। ऐसी मांग करने वालों की मजबूरी को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

यह कहना अपनी जगह सही हो सकता है कि नगर निगम के विद्यालयों को निजी से मुकाबला करने के लिए अंग्रेजी का सहारा लेने की कोई जरूरत नहीं है। पढ़ाई का स्तर सुधार कर वे उन विद्यालयों से बेहतर परिणाम दे सकते है। दरअसल इस तर्क में आवाज जरूर है,परंतु लड़खड़ाती हुई कमजोर आवाज। वास्तव में केवल शिक्षा में ही नहीं,जीवन के हर स्तर पर तुलना का दौर है। लगभग सभी सरकारी विद्यालय,निजी विद्यालयों से तुलना करते हुए अपने छात्रों के गले में ब्टाईब्रतो बंधवा ही चुके हैं। वेशभूषा से परिवेश तक हर जगह तुलना की परिपाटी के बीच आप अंग्रेजी सीखने की मजबूरी को नजरअंदाज कैसे कर सकते हैं?

अनेक विद्वान,शिक्षाविद इन विद्यालयों में प्रथम कक्षा से अंग्रेजी लागू करने की कड़ी आलोचना कर रहे हैं। विश्व के अनेक देशों के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं,लेकिन वे जरा अपने मन को टटोल कर उत्तर जानने की कोशिश करें कि क्या यहां शेष परिस्थितियां उन देशों जैसी है ? अपनी शासन प्रणाली, संविधान,अपने नेताओं का आचरण,संसाधन,परिवेश, अपरिपक्वता तथा वर्गो में बंटे समाज और सबसे बड़ी बात नैतिकता के बड़े-बड़े दावे करने वालों के खोखले चरित्र को बदले बिना इस भाषायी पाखंड को कैसे दूर किया जा सकता है ?

यह भी विचारणीय है कि क्या मात्र इन विद्यालयों में प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी रोकना पर्याप्त है ? अगर अंग्रेजी को इस स्तर पर रोकना है तो देश के सभी विद्यालयों में,चाहे वे राजकीय हों अथवा निजी प्राथमिक शिक्षा का माध्यम केवल स्थानीय भाषा और छठी से स्थानीय भाषा के साथ हिंदी को किया जाना चाहिए। बेशक जर्मन,जापान,चीन आदि अधिकांश देश अंग्रेजी के बिना आसमान छू सकते हों,लेकिन भारत में अंग्रेजी नहीं रही तो प्रलय हो जाएगा। शिक्षा का माध्यम चुनने की स्वतंत्रता को मौलिक अधिकार बताने वाले अपनी करनी से बाज नहीं आएंगे तो क्यों न लोकतंत्र में बहुमत के बल पर भारतीय भाषाओं के पक्षधर सभी राजनीतिक दलों पर सरकारी नौकरियों में केवल उन सरकारी विद्यालयों में पड़ने वालों के लिए आरक्षित करने का कानून बनाने का दबाव बनाएं। यदि यह संवैधानिक प्रावधान कर दिया जाए तो अंग्रेजी की मजबूरी से काफी हद तक छुटकारा पाया जा सकता है। हम इस बात से इंकार नहीं कर सकते कि बेशक भाषा संवाद का माध्यम है,लेकिन उसका रोजी-रोटी से भी संबंध होता है। जिस भाषा की जानकारी का रोजगार से कोई संबंध होगा,आप लाख चाहकर भी उसे आगे बढ़ने से नहीं रोक सकते। शायद राष्टपति जी के मन में भी जरूर यह विचार रहा होगा कि अपनी भाषाओं का रक्षण जरूरी है। उन्होंने अपने जीवन में कठिनाईयों को बहुत करीब से देखा है,अतः उनकी अभिव्यक्ति साधारण से साधारण भारतीय के प्रतिनिधि की आवाज है। वे अच्छी तरह से जानते हैं कि अगर अपनी भाषाओं की अनदेखी करते हुए विदेशी भाषा को तरजीह दी गई तो सामान्यजन के मन में विदेशी भाषा के प्रति आकर्षण रोका नहीं जा सकता। निश्चित रूप से आरंभिक शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा नहीं होना चाहिए।

-डॉ. विनोद बब्बर

दुष्कर्म काण्ड:शीघ्र निर्णय यानि अप्रत्यक्ष भय

संसार का नाम है भ्रमण,संस धातु से बना है जिसका अर्थ है संसरण करना,और संसार में भ्रमण का कारण है मोह। मोह के दो रूप हैं राग और द्वेष। प्रत्येक जीव प्रत्येक क्षण किसी से राग करता है, और किसी से द्वेष करता है। मोह एक तराजू या तुला है,जिसके दो पलड़े राग या द्वेष हैं। जो पलड़ा भारी होता है,वह नीचे जाता है और जो हल्का होता है ऊपर रहता हैद्य हम कोई सौदा खरीदते हैं,तो विसम पलड़े से नहीं खरीदते,जब पलड़े सामान होते हैं,तब ही खरीदते हैं इसी प्रकार स्वस्थ और बीमार में इतना अंतर होता है-जब हमारे शरीर में दोष,धातु,मल समान अवस्था में होते हैं,तब स्वस्थ और विषम हो तो बीमारे जैसे किसी को कम या ज्यादा रक्त दाब हो तो रोग,और समान अवस्था में लाना चिकित्सा होती है।

विश्व में पाप और कषाय के कारण हम भटक रहे हैं पाप पांच प्रकार के होते हैं,जैसे-हिंसा,झूठ,चोरी,कुशील और परिग्रह और कषाय,जिससे आत्मा कलुषित होती जहां जैसे क्रोध, मान,माया-लोभे इस प्रकार हम कषाय और पाप के कारण दुखी होते हैं आश्चर्य की बात है कि,विश्व के सब देशों के कानून मात्र पापों के लिए ही बने हैं इनके अंतर्गत सब कानून आ जाते हैं समाचार पत्रों में,टी.वी.में और साहित्य में इन पांच पापों की ही चर्चा होती हैं। ये पाप मनुष्यों के जन्म से चल रहे हैं,इसलिए हमारे ऋषि-मुनियों को वेद,पुराण ,शास्त्रों में वर्णन करना पड़ा और इनके लिए ही हमारे देश में भी संविधान बना है कषाय के लिए ये मन से होते हैं,इनके लिए मनोविकार भाव मानते हैं।

इन पापों का इलाज अहिंसा,सत्य ,अचौर्य,ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह हैं ये हमारे मानक हैं,इनके पालन से हमरे स्वयं,परिवार समाज और विश्व में शांति का वातावरण बनता हैं इनके साथ हमारा खान-पान,आहार- विहार,परिजन-परिवेश का भी प्रभाव धरम और पाप के लिए जिम्मेदार होता है। कभी-कभी अधिक विपन्नता या समृद्धि भी अपराध को बढ़ावा देती है,नशा-व्यसन-कुटैव भी मनुष्य को पददलित या पद्च्युचित कर देता है। ये सब पाप सनातन और शाश्वत हैं,और रहेंगे। धरम उनके निराकरण के लिए है, यदि मानव माने तो।

वर्तमान में सामाजिक व्यवस्थाएं चरमरा गई हैं-आबादी का विस्फोट,अतिशीघ्र धन्नासेठ बनना और नवधनाढ्य की देखा-देखी से कुसंस्कार से अधिक प्रभावित होना यह आम बात हो गई हैं। जब तक हम अपनी बुनियाद से नहीं जुड़ेंगे,तब तक विकृत्यों पर अंकुश लगाना संभव नहीं होगा। आज हम सब पैसा,सुख-सुविधाओं की दौड़ में कुछ नहीं देख रहे हैं,बस अन्धाधुकरण कर रहे हैं।

दुष्कर्म यानि बलात्कार की घटनाओं ने मानव समाज को आंदोलित कर दिया है,और ये आजकल बहुतायत से हो रही है और होंगी। इसका कारण अश्लील फिल्मों का देखना,नशा करना,अधिक उम्र तक अविवाहित रहना-शादी न हो पाना या खाने-पीने की वस्तुओं से खुद को इतना उत्तेजित करना कि,ये शारीरिक क्रियाओं को शीघ्र प्रभावित करती हैं

आजकल 10 वर्ष की बच्चियों को मासिक धरम होने लगा तो लड़कों को कामातुर वातावरण मिल रहा है और फिर कुछ अधिक उच्छृंखलता के होने से बलात्कार की घटनाएं होती हैं। ये घटनाएं युवा या अन्य मात्र क्षणिक सुख के लिए करते हैं और इसमें वे मात्र अपनी हवस पूरी करते हैं, इससे अधिक कुछ नहीं होता है। ये घटना किसी भी पक्ष को पूर्ण तृप्त नहीं करती,बलात उक्त कर्म एकपक्षीय होता है। इसमें रजामंदी का अभाव होने से अपराध की श्रेणी में आता है,नहीं तो ये बहुत सामान्य घटना होती है।

हाल ही में मध्यप्रदेश के भोपाल की यह घटना अत्यंत वीभत्स कहने योग्य थी,जिसका निर्णय न्यायालय ने बहुत त्वरित गति से करके दोषियों को दण्डित किया है। इस निर्णय से बहुत हद तक समाज में भय व्याप्त होना चाहिए,पर होना असंभव ही लगता है। कारण हमारे समाज में सबसे पहले स्वतंत्रता के साथ स्वच्छंदता का वातावरण इतना अधिक व्यापक हो गया है कि,वर्तमान में आप 3 साल के बच्चे के हाथ से टी.वी. का रिमोट नहीं ले सकते,तो फिर जो बच्चे-बच्चियां घर में रहकर या घर से बाहर रहकर बिना भय के रहते हैं,उनमें इसका प्रभाव होने की संभावना अधिक होती है। आजकल तो घर में कोई भी उम्र सुरक्षित नहीं है,पूरा समाज मात्र इन पापों को अंगीकार करने में जुटा है।

सामाजिक सुधार की सोच अब उपयुक्त नहीं होगी,यहां अब व्यक्तिगत सुधार के साथ स्व-सुरक्षा को अपनाना पढ़ेगा। इसमें कोई भी वर्ग अछूता नहीं है,पर असर महिलाओं पर अधिक पड़ता है। पुरुष वर्ग बलिष्ठ होने से यह पाप करता है,और उसे भोगना भी पड़ता है।

सामाजिक,पारिवारिक और स्व नियंत्रण का अभाव होने से ये अपराध बहुत हो रहे हैं और होंगेद्य दरअसल, समाज भयविहीन हो गया है। जीवन से नैतिकता,चरित्र और धरम की बात करना दकियानूसी या पोंगापंथी विचारधारा को इंगित करती है,जबकि बचाव इनसे ही संभव होगा।

एक क्षण की भूल हमें जिंदगी भर के लिए गुनाहगार बना देती है तो हर क्षण का निरीक्षण-परीक्षण ही हमको सजग बनाता है। हम बे-गाफिल रहने के आदि हो गए, इसलिए पछताते हैं। ऐसे वक्त में इस इस समय किसको अपना मानें,या न मानें,नहीं समझ पा रहे हैं। अभी तो और अधिक विकृतियां आएँगी,अभी वर्तमान का आकलन है कि हमें स्वयं की सुरक्षा करनी होंगी,क्योंकि दुनिया तमाशबीन बनी रहेगी।

-डॉ. अरविन्द जैन (भोपाल)

सामुदायिक विकास की सोच ही राष्ट्रवाद

क्या राष्ट्रवाद की अधिकता साम्राज्यवाद, फांसीवाद में परिणित हो जाती है ? जी हाँ,राष्ट्रवाद की अधिकता का परिणाम भी साम्राज्यवाद,फांसीवाद में देखा जा सकता है। जब कोई राष्ट्र,राष्ट्र निवासी अपनी सांस्कृतिक,ऐतिहासिक परम्परा में ग्रस्त होकर मोहान्ध हो जाता है,तब ऐसी स्थिति को देखा जा सकता है। एक राष्ट्र, निर्वासित जाति अपने को सर्वोपरि समझने लगे और अन्य को कमजोर, अनैतिहासिक,दोयम दर्जे का तो वह राष्ट्रवाद से साम्राज्यवाद,फांसीवाद की ओर बढ़ने लगता है।

मार्क्स के पश्चात होरेस बी. डेविस ने राष्ट्रवाद को एक अलग नजरिए से देखा और राष्ट्रवाद को एक औज़ार से ज़्यादा अहमियत नहीं दी और कहा कि-'हथौड़े से हत्या भी की जा सकती है और निर्माण भी। राष्ट्रवाद के ज़रिए जब उत्पीड़ित समुदाय अपनी आज़ादी के लिए संघर्ष करते हैं,तो वह एक सकारात्मक नैतिक शक्ति बन जाता है और जब राष्ट्र के नाम पर आक्रमण की कार्रवाई की जाती है,तो उसका नैतिक बचाव नहीं किया जा सकता है।'

जब किसी राष्ट्र को राष्ट्रवाद के नाम पर मोहान्ध हो जाए और उसे अभिमान हो जाए कि उसकी जाति और मान्यताएँ, संस्कृति ही श्रेष्ठ हैं,तो अवश्य वह विकृत होते हुए साम्राज्यवाद की ओर अग्रसर हो जाता है,लेकिन जब एक राष्ट्र के भीतर जातीय अस्मिता,सांस्कृतिक श्रेष्ठता और धार्मिक मान्यताओं का बलात आरोपण किसी समुदाय या अल्पसंख्यकों पर किया जाए तो वह घातक ही नहीं,बल्कि अमानवीय होता है। ऐसी फांसीवादी शक्तियों का जब प्रचंड रूप अपनी शक्ति को प्रमुख मानते हुए दूसरे को अपने अधीन करने के लिए शक्ति का सहारा ले तो वह साम्राज्यवाद की श्रेणी में चला जाता है। या फिर राष्ट्र के भीतर फांसीवादी ताकतों को बढ़ावा देकर राजनीतिक लाभ ग्रहण किए जाते हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय हिटलर को साम्राज्यवादी नीति के तहत ही देखा जा सकता है। उसके राष्ट्रवाद एक बड़ा हिस्सा उच्च जाति के अभिमान से ग्रसित था,इसी कारण वह अमानवीय होता हुआ यहूदियों का बड़ी मात्रा में संहार करता है। वर्तमान में सीरिया को भी इन्हीं संदर्भों में में देखा जा सकता है,जहां राष्ट्रवाद के नाम पर अमानवीय अत्याचार निरंतर हो रहे हैं। बच्चे,बूढ़े,रोगी,स्त्रियाँ तक को वहाँ मौत के घाट खुलेआम उतारा जा रहा है। अब भारत में भी ऐसी विघटनकारी सामुदायिक ताकतों का वर्चस्व कायम हो रहा है जो राजनीति से प्रेरित होते हुए विशेष सामुदायिक सोच से परिसंचलित है। अतः राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक मोहान्ध,धार्मिक मद की अधिकता और कट्टरता भी घातक सिद्ध हो जाती है। साधारण रूप में देखें तो कहा जा सकता है कि राष्ट्र के हित, विकास,उन्नति के लिए जिस तरह का मानवीय प्रयास राष्ट्र को केन्द्र में रखकर किया जाता है वही राष्ट्रवाद की सीमा में आता है,लेकिन यह प्रयास नीतिगत और आचरणमयी होना जरूरी हैं,यदि उसमें कोई आदर्श नीति न हुई तो राष्ट्रवाद उन्मान्द,फांसीवादी शक्तियों का आश्रय लेकर पथभ्रष्ट होकर साम्राज्यवाद तथा फांसीवाद का रूप धारण कर लेगा।

राष्ट्रवाद के संबंध में यह सत्य है कि, प्रत्येक राष्ट्र के लिए राष्ट्रवाद जैसी धारणा होनी चाहिए,लेकिन राष्ट्रवाद के तहत स्वतंत्र प्रतिभाओं का विकास अवरूद्ध हो सकता है,जो मानवीय समाज को बेहतर बनाने की कामना रखते हुए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रयास कर रहे हैं। विश्व के मानव को राष्ट्रों की सीमाओं में बंधा न मानकर उसे समता के रूप में देखने के पक्षपाती हैं। यदि राष्ट्रवाद केवल अपनी संस्कृति,भाषा,इतिहास, जाति को श्रेष्ठ मानकर चलता है तो यहाँ आकर ये धारणा विरोधी और अप्रगतिशील सिद्ध हो जाती है। राष्ट्रवाद में दबाव का होना पाया जाता है,राष्ट्रवाद के अंतर्गत उन प्रतिभाओं को नकार दिया जाता है जो कमजोर तबके से हैं, इसलिए प्रतिभाओं की समाप्ति की आशंकाएँ बढ़ जाती हैं। कभी-कभी राष्ट्रवाद,सांस्कृतिक श्रेष्ठता का नशा, धार्मिक मोहान्ध जातिगत आधारों को चुनकर लिंग भेद और जातिभेद को बढ़ावा दे देता है,जबकि उसे सामुदायिक विकास की सोच रखनी चाहिए। आजादी के समय अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ चले राष्ट्रवादी आंदोलन के दौरान रवींद्रनाथ ठाकुर जैसी हस्तियाँ इस विचार को संदेह की निगाह से देखती थीं,जो ठाकुर साहब की अपनी सोच का परिणाम कही जानी चाहिए। वर्तमान में राष्ट्रवाद की अधकचरी सोच के कारण राष्ट्र में जातिगत,सांस्कृतिक,धार्मिक संघर्ष और टकराहटें बढ़ चुकी हैं जिसे हर हाल में कम होना चाहिए। यदि ऐसा न हुआ तो राष्ट्र वास्तव में आर्थिक रूप से पिछड़ जाएगा और आपसी टकराहटों के कारण असीमित हिंसा होगी,जो अत्यंत घातक और विनाशकारी सिद्ध होगी।

-डॉ. मोहसिन खान

मेरी राष्ट्रभाषा

दो दिन की चांदनी,फिर अंधेरी रात।
क्यों करते हैं भाई,हम राष्ट्रभाषा की बात।।
भूल जाओ इसे,होगा यही बेहतर।
नहीं तो कैसे जा पाएंगे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर।।
बच्चों को फिर भारत में ही पढ़ाना होगा।
अमेरिका जाने के सपनों से तुम्हें हाथ धोना होगा।।

आजकल तो हम हिंदी भी अंग्रेजी में लिख लेते हैं। जब काम चल जाता है तो क्यों हिंदी सीखते हैंद्य क्यों नहीं चाहते हो हमारी भाषा की उन्नतिज बताओ कहाँ थम गई चीन,जापान,जर्मनी की प्रगतिद्य क्यों हमें हमारी भाषा की कोई फिक्र नहीं, गुलामी की मानसिकता है बस, स्वसम्मान का जिक्र नहींद्य कब होगी हमारी अतंरआत्मा से मुलाकात, कोसों दूर है खुद से,मातृभाषा की छो?ो बातद्य भुला चुके हैं पाली और संस्कृत को कब के, हिंदी को भी भूल जाएंगे हम आहिस्ते- आहिस्तेद्य ए हिन्दुस्तानी पूत तुम सिर्फ क्या विदेशियों की नकल कर पाओगे, श्रेष्ठ वाङ्मय रचयिता-ए-कुल वंश तुम, बंदर बनकर रह जाओगेद्य यदि अपने-आपसे अपनी भाषा में हो संवाद, फिर क्यों करना है हिंदी की श्रेष्ठता पर विवादद्यद्य

-संजय वासनिक 'वासु'

छोटे संकल्प,बड़ी खुशियां

लो स्वागत कीजिए 2018 का नई उमंग नव उल्लास के साथ लें नव संकल्प। घर में यदि आप अपने बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे रहे हों तो नए साल में ये संकल्प जरूर लें कि हम हमारे बच्चों को धन के साथ समय भी देंगे। परिवार में बुजुर्गों का सम्मान करेंगे,उनके आदेशों का पालन करेंगे। घर में शांति का वातावरण रहे,ऐसा प्रयास करेंगे। घर के उद्यान में पेड़-पौधों की देखभाल करेंगे,ताकि घर का पर्यावरण स्वच्छ रहे,घर के सदस्य निरोग रहे। उन्हें अच्छा वातावरण मिले। उद्यान में प्रात :काल सैर करने से शरीर स्वस्थ रहता है।

यदि घर परिवार में कोई तंबाकू युक्त सामग्री का उपयोग करता है तो उसे रोकने का संकल्प करवाना है। उसे समझाना है कि नशा नाश की जड़ है,जो स्वयं के जीवन के साथ-साथ परिवार की सुख-शांति भी समाप्त करता है। घर में आध्यात्मिक वातावरण बने,इस हेतु सुबह-शाम पूजन- अर्चन संध्याकालीन उपासना आदि करना चाहिए। धर्म ग्रन्थों का पठन बालपन से ही कराना चाहिए। घरों का कूड़ा-कचरा घर के बाहर फेंकने हेतु संकल्प दिलाने की आवयश्कता है,ताकि स्वच्छता बनी रहे। नए साल में शादियों में होने वाले अनर्गल खर्चों से,महंगी शादियों से बचने का संकल्प कराने की आवयश्कता है। यदि दान ही करना है तो चिकित्सालय,विद्यालय आदि स्थानों में चल रहे विकास कार्यों में दान कर देना चाहिए। गर्मी के दिनों में प्यासे को पानी मिले,इस हेतु गांव-शहरों में प्याऊ लगाने के संकल्प की आवयश्कता है। सर्दियों में रैन बसेरा बनाकर रेलवे स्टेशन,बस अड्डे के आसपास भटकते गरीब लोगों को ठंड से बचाने का संकल्प लेना चाहिए। विद्यालयों में जो बच्चे गणवेश नहीं खरीद सकते,उन्हें निशुल्क

गणवेश देने और जो जूते-मोजे पहनकर नहीं आते,उन्हें चरण पादुका वितरित करवाने की आवयश्कता है। घर में पड़े हुए कपड़े जो काम नहीं आते,जिन्हें अक्सर रख दिया जाता है,उन्हें भलाई की दीवार पर लटका देना चाहिए,ताकि गरीब लोगों का तन ढंक सकें।

बढ़ते प्रदूषण को देखते हुए सप्ताह में एक दिन साईकल चलाने का संकल्प करना चाहिए,जिससे पर्यावरण शुद्ध रहेगा,डीजल-पेट्रोल की बचत होगी, ध्वनि प्रदूषण कम होगा। घर के रोजमर्रा के काम साईकल से ही करना चाहिए। साईकल चलाने से सम्पूर्ण शरीर का व्यायाम होता है,मांसपेशियां मजबूत बनती है। नए साल में संकल्प करें,खुश रहें।

नए वर्ष में बच्चों को पढ़ने के लिए बाल साहित्य उपलब्ध करवाने का संकल्प करें,उन्हें बालहंस,बालवाटिका, चम्पक,देवपुत्र,नंदन,बालभारती,बाल कहानियां,बाल रामायण,बाल गीता आदि पढ़ने के लिए प्रेरित करें। खुद भी साहित्य पढ़ें और बच्चों को भी बाल साहित्य पढ़ाएं। अक्सर देखा गया है कि, हम बच्चों को साहित्य पढ़ने के लिए कहते हैं,लेकिन खुद नहीं पढ़ते हैं। अंतरजाल (इंटरनेट) के युग में हम सब मोबाइल में खोए हुए हैं, ऐसे में पुस्तकों को पढ़ना-उन्हें खरीदना फिर से प्रारम्भ करना चाहिए। इस प्रकार साल 2018 में छोटे-छोटे संकल्प लेकर बड़ी खुशियां मनाएँ।

नवल वर्ष में नवल हर्ष हो।
जीवन में नित उत्कर्ष हो॥

-राजेश कुमार शर्मा 'पुरोहित'

नर सेवा नारायण सेवा

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में इंसान इतना मशगूल है कि, उसे पैसे कमाने के अलावा कोई और काम समझ नहीं आता है। यहाँ तक कि,खाने-पीने से लेकर, अपने बच्चों,अपने परिवार में भी इसीलिए उलझा हुआ है। आज समाज अमीर और गरीब दो भाग में बंट गया है, आज अमीर गरीब की तरफ देखता ही नहीं,अधिक धन वाले गरीबों पर हँसते हैं उनका मजाक उड़ाते हैं,उन्हें दुत्कार देते हैं,लेकिन याद रहे कि,उसी खुदा ने उसको गरीब बनाया है,जिस भगवान ने आपको धनवान बनाया है।

अहंकार से भरे लोगों के कानों में ये आवाज ही नहीं जाती -'साहब कुछ खाने को दे दो, मालिक कुछ दे दो,भगवान के नाम पर दो रुपया दे दो मालिकज' आदि। आज का इंसान इतना स्वार्थी और कायर है कि,वो आम लोगों को मूर्ख बनाकर देश के साथ और उनके साथ गद्दारी करता है। झूठ बोलता है,बहुत सारे लोगों के दिल को ठेस पहुँचाता है,और मौला की मजार में,भगवान के मंदिर में माथा टेकने मुस्कराते हुए चला आता है। हजारों की शराब पी जाते हैं,लेकिन एक लंगड़े,अंधे, अनाथ,त्रस्त,परेशान,कमजोर को कुछ पैसे देने से कतराते हैं। मूर्ख लोग,रिश्वत लाखों मे लेते हैं,लेकिन गरीब भिखारी को देने के लिए सिक्के ढूढते हैं।कमबख्त !लोगों की मदद नहीं कर सकते, पर चिल्लाकर अल्लाह को बुलाते हैं। अगरबत्ती घुमाकर ईश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं, शराब पिलाकर क्राइस्ट को पुकारते हैं. ये सब क्या है? जो इंसान की आवाज को ही नहीं पहचान पाते,वो तो भगवान को क्या खाक पहचानेंगे। कभी सोचा है कि,भगवान भी तभी खुश होते हैं, जब लोग मिल-जुल कर रहते हैं। कोई भी इंसान खुद को कमजोर और असहाय नहीं समझता है,और ऐसा तब ही होता है जब इंसान के मन अहंकार, द्वेष,ईर्ष्या जैसे दुर्गुण नहीं होते हैं। याद रखिए -'मानवता की सेवा से परमात्मा प्रभावित होते हैं'। जब विभिन्न धर्म, संप्रदाय,जाति के लोग एकसाथ होते हैं तो बड़ा अच्छा लगता है,ठीक ऐसे ही जैसे-झील,पक्षी,पेड़,पहाड़,सूरज सबको एकसाथ देख मन प्रफुल्लित हो जाता है। जब सब लोग मिलकर समाज व देशहित के लिए काम करते हैं तो अवश्य ही वो काम सफल हो जाता है। जैसे-एक चींटी पहाड़ खड़ा कर देती है,ठीक इसी भावना के साथ अगर किसी बड़ी बुराई के खिलाफ काम किया जाता है,तो जीत जरूर ही मिल जाती है। हमारे देश के महापुरुषों ने भी इस बात पर बल दिय है। पुराणों मे भी इसी बात पर ड़ोर दिया गया है कि,बेसहारों की सहायता ही ईश्वर की सच्ची पूजा है,और मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है। यानि 'नर सेवा ही नारायण सेवा' है।

-शिवम द्विवेदी क्शिवायक्क

हस्ताक्षर बदलो अभियान

प्रतिज्ञा पत्र

मैं,...प्रतिज्ञा लेता/लेती हूँ कि आज से राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए,राष्ट्र की एकता और अखंडता के हित में स्वयं को समर्पित करते हुए भारतीय संस्कृति और सभ्यता के सम्मान और सुरक्षा हेतु जीवनपर्यन्त तत्पर रहूंगा/रहूंगी । भारत माता और मातृभाषा हिन्दी के सम्मान को सर्वोपरि रखकर अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करूँगा/करुँगी।

मैं हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा का सम्मान दिलाने हेतु आरम्भ किये गए महायज्ञ 'हस्ताक्षर बदलो अभियान' में सतत सहभागी रहूंगा/रहूंगी।

भवदीय,

हस्ताक्षर- ....

नाम-...

पिता का नाम-...

पता-...

....

संपर्क-..

व्हाट्सअप-..

अणुडाक (ईमेल)-..

एस-207, नवीन परिसर, इंदौर प्रेस क्लब, एम. जी. रोड इंदौर

क्या आप बनना चाहते हैं भाषा सारथी

क्योंकि

- आज हिन्दी को विश्वस्तर पर पहचान दिलाने के लिए हमें जुटकर हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना होगा,
- हस्ताक्षर बदलो अभियान को अपने क्षेत्र में संचालित एवं प्रचारित करना होगा,
- हिन्दी लेखन करने वाले साथियों को आय दिलवाने में मदद करनी होगी,
- हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए उसे बाजार मूलक भाषा बनानी होगी,
- हिन्दी साहित्य को आमजन तक पहुँचाना होगा,
- हिन्दी भाषीयों की मदद करना होगी,
- हिन्दी के प्रचार हेतु अपने क्षेत्र में हिन्दी प्रेमियों का समुच्चय बनाकर प्रतियोगीताएं, कार्यक्रम आदि का संचालन करना होगा
- हिन्दी ग्राम सभा का आयोजन करना।
- हिन्दी रथ का अपने क्षेत्र में संयोजन करना,कार्ययोजना बनाकर लोगो को हस्ताक्षर बदलनें के लिए प्रेरित करना ।

और भी बहुत सी गतिविधियाँ जो हिन्दी के लिए करनी होगी,

यदि आप जुड़कर हिन्दी को आगे लाना चाहते है तो आज ही जुड़िए,

मातृभाषा उन्नयन संस्थान *हिन्दी ग्राम* व *अंतरा-शब्दशक्ति* से

सम्पर्क करें

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'
राष्ट्रीय अध्यक्ष
मातृभाषा उन्नयन संस्थान
संस्थापक- *हिन्दी ग्राम*
सह संस्थापक- *मातृभाषा.कॉम*
प्रधान सम्पादक- *खबर हलचल न्यूज*

डॉ. प्रीति समकित सुराना
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
मातृभाषा उन्नयन संस्थान
संस्थापक- *अन्तरा शब्दशक्ति*
सह संस्थापक- *मातृभाषा.कॉम*
निदेशक- *खबर हलचल न्यूज*

रचनाकारों के लिए सुनहरा अवसर

आदरणीय भाषासारथी,

सादर प्रणाम,

क्या आप मौलिक रुप से हिन्दी में कुछ लेखन करते हैं ? यदि करते हैं तो स्वागत है आपके शब्द शिल्प का।

आइए, हिन्दी भाषा के प्रचार हेतु कार्यरत बेहद क्रियाशील संस्था मातृभाषा उन्नयन संस्थान व हिन्दीग्राम का अंग लोकप्रिय अन्तरताना (वेब पोर्टल) मातृभाषा डॉट कॉम से शीघ्रता से जुड़िए 'मातृभाषा' साहित्य के संप्रेषण के लिए उपलब्ध अनूठा मंच है। साहित्य के इस ऑनलाइन मंच में सभी नवोदित व स्थापित लेखकों का स्वागत है। यदि आप कहानी, लेख, लघुकथा, उपन्यास, नाटक, संस्मरण, निबन्ध, व्यंग्य, डायरी, कविता, आत्मकथा, आलोचना, गजल, समालोचना, मुक्तक, नज्म, गीत या अन्य किसी भी विधा का सिर्फ हिन्दी भाषा में मौलिक लेखन करते हैं तो पोर्टल पर प्रकाशन हेतु हमें उपलब्ध करा सकते हैं। हमारा प्रयास एक मंच पर हिन्दी भाषा के श्रेष्ठ लेखन को जनमानस के लिए उपलब्ध कराना है। हिन्दी साहित्य का प्रचार-प्रसार और एक स्थान पर सभी महत्वपूर्ण विषयों पर सामग्री संकलन हमारा मूल उद्देश्य है, आपकी सहमति मिलने पर इस वैचारिक महाकुंभ में आपके मौलिक लेखन को प्रकाशित कर हम गौरवान्वित महसूस करेंगे 'मातृभाषा' में संकलन के लिए आपकी मौलिक हिन्दी रचनाएँ आमंत्रित हैं।

आपका नवीन लेखन इस अणुडाक (ईमेल) **matrubhashaa@gmail.com** पर भेजने का कष्ट करें।

साथ ही प्रत्येक सप्ताह के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार (आलेख व कविता दोनों विधा में)को प्रति सप्ताह नगद राशि या भेंट से सम्मानित भी किया जाएगा। सप्ताह के श्रेष्ठ रचनाकार का चयन, समिति द्वारा रचना की गुणवत्ता, वर्तनी दोष रहित, ज्यादा से ज्यादा लोगों द्वारा देखी गई होने पर, पटल पर दृश्य संख्या अधिक होने के तथा रचना मातृभाषा.कॉम के अतिरिक्त कहीं और न छपी होगी इन मापदण्डों के आधार पर प्रति सप्ताह किया जाएगा।

जानकारी केवल निम्न बिन्दुओं में ही प्रेषित करें

साहित्यकार के परिचय का प्रारुप

नाम-	प्रकाशन-
साहित्यिक उपनाम-	सम्मान-
जन्मतिथि	ब्लॉग-
वर्तमान पता (शहर, जिला, राज्य)	अन्य उपलब्धियाँ-
शिक्षा-	लेखन का उद्देश्य-
कार्यक्षेत्र-	एक मौलिक रचना
विधा -	ईमेल-
मोबाइल/व्हाट्स ऐप -	छाया चित्र-

प्रथम बार परिचय आवश्यक है, अन्य बार बिना परिचय के केवल रचना मय शीर्षक अणुडाक (मेल) पर प्रेषित करें।

मातृभाषा.कॉम से जुड़े प्रत्येक रचनाकार को मिलेगा भाषा सारथी सम्मान, क्योंकि यदि आप हिन्दीभाषा में सृजन कर रहे है, तो आप निश्चित तौर पर भाषा के गौरव की अभिवृद्धि कर रहे है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र

९६६९८९६६९३ ९४२४७६५२५९ ७०६७४५५४५५

www.matrubhashaa.com

मातृभाषा.कॉम
वैचारिक महाकुम्भ

मातृभाषा उन्नयन संस्थान — www.matrubhasha.org
हिन्दीग्राम — भाषा समन्वयक — www.hindigram.com
अन्तरा शब्दशक्ति — www.antrashabdshakti.com
साहित्यकार कोश — www.sahityakarkosh.com

www.antrashabdshakti.com